एस.सी.ई.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित

सेवाकालीन दो वर्षीय
डिप्लोमा इन एलिमेन्ट्री एजुकेशन
(दूरस्थ शिक्षा)

स्वाध्याय सामग्री

हिन्दी का शिक्षणशास्त्र–1

(तृतीय सत्र)

S3.4

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्
(एस.सी.ई.आर.टी.), महेन्द्रू, पटना (बिहार)

प्रकाशक
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्
(एस.सी.ई.आर.टी.), महेन्द्रू, पटना, (बिहार)

© दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, (एस.सी.ई.आर.टी.),बिहार

डिप्लोमा इन एलिमेन्ट्री एजुकेशन (दूरस्थ शिक्षा) कार्यक्रम	
सत्र	तृतीय
विषयपत्र	हिन्दी का शिक्षणशास्त्र–1
ISBN	**978-93-84709-06-8**

प्रथम संस्करण, 2014	
प्रतियाँ	12,000

डी.एल.एड. (ओ.डी.एल.) के साधनसेवियों एवं प्रशिक्षुओं (कार्यरत शिक्षकों/शिक्षिकाओं) के स्वाध्याय हेतु निःशुल्क उपलब्ध

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, महेन्द्रू, पटना (बिहार) द्वारा प्रकाशित एवं बिहार स्टेट टेक्स्ट बुक पबलिशिंग कॉरपोरेशन द्वारा आदेशित तथा राजधानी ऑफसेट प्रिंटर्स, त्रिपोलिया, पटना–07 द्वारा मुद्रित

स्व-अनुदेशनात्मक अधिगम सामग्री विकास समूह
विषय-पत्र : हिन्दी का शिक्षणशास्त्र-1

दिशाबोध

- श्री हसन वारिस, निदेशक, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, पटना
- डॉ० सैयद अब्दुल मुईन, निदेषक, दूरस्थ शिक्षा निदेषालय, एस.सी.ई.आर.टी, पटना
- श्रीमती प्रमिला मनोहरन, शिक्षा विशेषज्ञ, यूनिसेफ, पटना
- डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी, प्राचार्य, मैत्रेय कॉलेज ऑफ एजूकेशन एण्ड मैनेजमेन्ट, हाजीपुर(वैशाली)

परामर्श

- डॉ० ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी, प्राचार्य, मैत्रेय कॉलेज ऑफ एजूकेशन एण्ड मैनेजमेन्ट, हाजीपुर(वैशाली)

संपादन

- डॉ० निरंजन सहाय, एसोसियेट प्रोफेसर, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

लेखन

- डॉ० उषा शर्मा, एसोसियेट प्रोफेसर, प्रारम्भिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली
- डॉ० निरंजन सहाय, एसोसियेट प्रोफेसर, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी
- श्री बीरेन्द्र सिंह रावत, सी.आई.ई., शिक्षाशास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ० गजेन्द्र कांत शर्मा, शिक्षक +2 ज0 ब्रजकिशोर उच्च विद्यालय, कामता, अरवल
- श्री सुमन कुमार सिंह, बी.आर.सी., भगवानपुर हाट, सीवान
- श्री कृत्त प्रसाद, बी.आर.सी., हिलसा, नालन्दा
- डॉ० ज्ञान रंजन गंगेश, +2 एस.बी.एल.सी. उच्च विद्यालय, रायपुर, सीतामढ़ी
- श्री गुड्डू कुमार, बी.आर.सी., पटना
- श्री अनुपम कुमार मिश्र, राजकीयकृत्त उच्च विद्यालय, मलाही, पूर्वी चम्पारण
- डॉ० विक्रांत भाष्कर, सहायक शिक्षक, बी.पी. इन्टर विद्यालय, बेगुसराय
- श्री मती सोनी कुमारी, साधनसेवी, दूरस्थ शिक्षा
- सुश्री प्रियंवदा कुमारी, शिक्षिका, उच्च माध्यमिक विद्यालय, अमहरा, बिहटा, पटना
- सुश्री वर्षा कुमारी, शिक्षिका, राजकीयकृत्त मध्य विद्यालय, रामपुर, मनेर
- श्री मनीष रंजन, सी.आर.सी.सी., मध्य विद्यालय, चैनपुर, संपतचक, पटना
- डॉ० अनील कुमार राय, आर.एल.एस. कॉलेज, गया
- डॉ० बिक्रम सिंह सान्दू, अजीम प्रेमजी फाउन्डेशन, सिरोही, राजस्थान
- श्री महेन्द्र कुमार शर्मा, अजीम प्रेमजी फाउन्डेशन, सिरोही, राजस्थान

संयोजन

- श्रीमती वीर कुमारी कुजूर, व्याख्याता, अध्यापक शिक्षा विभाग, एस.सी.ई.आर.टी., पटना

आमुख

विद्यालयी शिक्षा के संसार में हिन्दी भाषा शिक्षण एक बेहद अहम् पहलू है । प्रायः भाषा शिक्षण का अर्थ महज इतना समझा जाता है कि इस शिक्षण द्वारा शुद्ध–शुद्ध बोलने,लिखने और पढ़ने की योग्यता हासिल कर ली जाय। पर हिन्दी शिक्षण के क्या केवल यही मायने हैं? इन योग्यताओं में स्वाधीन अभिव्यक्ति, प्रासंगिक भाषायी अभिव्यक्ति और किसी रचना की आद्योपांत समझ की सामर्थ्य को शामिल करने की योग्यता से हम एक हद तक चूक जाते हैं। उसी तरह बिहार और भारत के बहुभाषिक परिदृश्य से हम हिन्दी शिक्षण के गहरे रिश्ते की भी अनदेखी करते हैं। हम यह तो कहते हैं कि हिन्दी साहित्य के इतिहास में विद्यापति, सूरदास, मालिक मुहम्मद जायसी, फणीश्वरनाथ रेणु जैसे दिग्गज रचनाकारों की मौजूदगी है। पर इन रंगतों वाली भाषा से हम परहेज करते नहीं अघाते। उसी तरह हमारे लिए व्याकरण शिक्षण का मतलब आमतौर पर यही होता है कि कुछ नियमों को याद कर सन्दर्भहीन प्रस्तुति कर दी जाय । पर सन्दर्भहीन व्याकरण हमारा साथ उसी तरह छोड़ देती है , जैसे महज सैद्धांतिक जानकारी के आधार पर कोई व्यावहारिक प्रस्तुति संभव नहीं। हिन्दी शिक्षण की इस स्व अध्ययन सामग्री से गुज़रते हुए इन पहलुओं पर आपकी व्यापक समझ बनेगी।

प्राथमिक शिक्षक की तैयारी का स्कूली पाठ्यक्रम के साथ समन्वय करना समय की माँग है। किन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्राथमिक शालाओं में हिन्दी का शिक्षण किया जाना है उनको केन्द्र में रखकर इस पर्चे की इकाईयों तथा उनकी उप–इकाईयाँ तैयार की गई है। प्रशिक्षु हिन्दी भाषा के संक्षिप्त इतिहास से परिचित होते हुए हिन्दी की उन संरचनागत विशेषताओं के बारे मे समझ बनाएँगे जो विशेषकर पहली से पाँचवी कक्षा के विद्यार्थियों को पढ़ाने में मददगार होंगी। यह पर्चा प्रशिक्षुओं की क्षमताओं को इस दिशा में विकसित करने के अवसर प्रदान करता है। प्रशिक्षु सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने की कुशलताओं और क्षमताओं के बारे में समझ बनाएँगे। वे इन संकल्पनाओं का अर्थ, विकसित होने कि प्रक्रिया तथा कक्षा में उपयोग करने के तरीकों के बारे में समझ बनाएँगे। शिक्षक होने के लिए यह एक अनिवार्य शर्त है कि वे जिन कुशलताओं और क्षमताओं का विकास विद्यार्थियों में करना चाहते/चाहतीं हैं, वे कुशलताएँ और क्षमताएँ स्वयं उनके व्यक्तित्व का हिस्सा हों। इस संदर्भ में यह पर्चा प्रशिक्षुओं में संबन्धित कुशलताओं और क्षमताओं के विकास को महत्त्वपूर्ण स्थान देता है। प्रशिक्षुओं को ऐसे अवसर उपलब्ध करवाये जायेंगे जिनकी मदद से वे सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने की संकल्पनाओं के बारे में बनी समझ को प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के लिए उपयुक्त शिक्षण प्रक्रियाओं का सृजन करने में कर सकेंगे। प्रशिक्षु बच्चों का सतत् एवं समग्र मूल्यांकन करने की प्रक्रिया एवं तरीकों के बारे में समझ बनाएँगे। वे मूल्यांकन के इस उपागम तथा एक–दो बार ली जाने वाली परीक्षा के आधार पर किए जाने वाले मूल्यांकन के बीच शिक्षणशास्त्री अंतर के बारे में समझ बनाएँगे। वे समझ पाएँगे कि मूल्यांकन बच्चों कि गलतियाँ पकड़ने के लिए न करके वैयक्तिक रूप से उनकी मदद करने के लिए किया जाता है। प्रशिक्षु शिक्षण हेतु पाठ–योजना की जरूरत के बारे में समझ बनाएँगे। उनसे यह अपेक्षा है कि रचनात्मक उपागम (Constructivist approach) के अन्तर्गत पाठ–योजना का महत्त्व और सीमाएँ क्या हैं। वे इस बारे में भी समझ बनाएँगे कि यदि कक्षाओं को गतिविधि आधारित बनाना है तो कक्षा की प्रक्रियाओं के कौन–से रूप तथा उनकी क्या चुनौतियाँ हो सकती हैं। आशा है कि इस सामग्री की मदद से प्रशिक्षु प्राथमिक कक्षाओं में हिंदी पढ़ने पढ़ाने की चुनौतियों का सामना बेहतर तरीके से कर पाएंगे।

डॉ॰ सैयद अब्दुल मुईन
निदेशक,
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय,
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद
पटना, बिहार।

हसन वारिस
निदेशक,
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद
पटना, बिहार।

विषयसूची

इकाई	इकाई का नाम	पृष्ठ संख्या
1	प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण के उद्देश्य	01-10
2	भाषाई क्षमता का विकास : सुनना व बोलना	11-25
3	पढ़ने की क्षमता का विकास	26-43
4	लेखन क्षमता का विकास	44-66
5	सीखने की योजना और कक्षा प्रकियाएँ	67-83
6	हिन्दी शिक्षण में आकलन	84-106

इकाई–1
प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण के उद्देश्य

1.1 परिचय
1.2 उद्देश्य
1.3 पूर्व अनुभव
1.4 पाठ्यचर्याओं के आलोक में हिंदी भाषा शिक्षण
    1.4.1 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 और हिंदी भाषा शिक्षण
    1.4.2 बिहार पाठ्यचर्या 2008 और हिंदी भाषा शिक्षण
1.5 मातृभाषा और बहुभाषिक परिदृश्य से हिंदी भाषा की ओर
1.6 भाषा शिक्षण से अर्जित दक्षताएँ
1.7 सारांश
1.8 स्वमूल्यांकन
1.9 संदर्भ

1.1 परिचय

भारतीय शिक्षा की दुनिया में 2005 एक उल्लेखनीय वर्ष है। इसी वर्ष राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का प्रकाशन हुआ। बिहार के संदर्भ में यही महत्त्व साल 2008 का है। इसी साल बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा का प्रकाशन हुआ। इन दोनों दस्तावेजों में भारत और बिहार की विशेष सामाजिक, सांस्कृतिक और लोकतांत्रिक संरचनाओं के आलोक में शिक्षायी संसार के पुनर्गठन के प्रयास हुए। इन नवाचारों के व्यापक स्वागत हुए। सवाल यह है कि भाषा , विशेषकर हिंदी भाषा–साहित्य के शिक्षण में इन दस्तावेजों ने किन नए आयामों को जोड़ा? क्या भाषा शिक्षण की पारम्परिक दुनिया इन नवाचारों को लेकर संजीदा हुई? पर इन संदर्भों को ठीक तरह से समझने–परखने के पहले यह समझना ज़रूरी है कि आखिर हिंदी शिक्षण की दुनिया का कौन–सा सिरा इन समझदारियों के आलोक में पैबस्त हुआ? भाषाई शिक्षा अब एक नए दौर में पहुँची जिसका एक सिरा भाषा–साहित्य की जीवंत परम्पराओं से जुड़ा तो दूसरा सिरा लोकतंत्र की अद्यतन चुनौतियों से रू–ब–रू हुआ। उसी तरह बिहार की भाषाओ से हिंदी भाषा के रिश्ते को समझना इस संसार की एक अन्य ललक बनी। बिहार के विभिन्न समाजों, समुदायों, लैंगिक–बहुधार्मिक विशेषताओं को हिंदी शिक्षण संसार में शामिल करना बिहार में हिंदी शिक्षण का एक प्रमुख सरोकार बन कर उभरा। भाषा और साहित्य की समझ केवल सौन्दर्शास्त्रीय पहलुओं की समझ हासिल करना नहीं है। शब्दों और विभिन्न विधाओं में प्रकट दुनिया की बहुविध रंगतों, चुनौतियों, सपने और संघर्षों को समग्र तरीके से प्रकट करना साहित्य संसार के अन्य लक्ष्य हैं। प्राथमिक स्तर स्तर हिंदी शिक्षण द्वारा अनेक उद्देश्यों को अर्जित किया जाता है। इन्हें हम बरास्ते राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा और बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा द्वारा बखूबी समझ सकते हैं ।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप

हिंदी के व्यापक और विविध स्वरूप की गहरी समझ बना पाएँगे/पाएँगी और प्राथमिक कक्षाओं में हिंदी अधिगम की इस बुनियादी ज़रूरतकी व्यावहारिक ज़मीन तैयार कर पाएँगे/पाएँगी।

इस बात को बखूबी समझ पाएँगे/पाएँगी कि विद्यार्थियों के लिए भाषा शिक्षण का मतलब है कि वह भाषा बोध और साहित्य बोध का विकास इस सीमा तक विकसित करने में सक्षम हो कि वह किसी भी रचना के बारे में स्वतंत्र राय बना सके और आत्मविश्वास पैदा कर सके।

यह समझ पाएँगे कि हिंदी सीखने का अर्थ है कि विद्यार्थी यह समझ बना पाएँ कि हिंदी के माध्यम से यथार्थ और काल्पनिक दुनिया की रचना सम्भव है।

भाषा केवल सम्प्रेषण का माध्यम नहीं है। यह विद्यार्थियों को समझा पाएँगे। उन्हें यह भी समझा पाएंगे कि हिंदी शिक्षण मतलब यह भी है कि अपनी सोच और समझ को अधिक पैने और व्यंजनात्मक ढंग से वह प्रकट कर सकें।

समझ पाएँगे/पाएँगी कि हिंदी शिक्षण का मतलब है पढ़ना, सुनना, लिखना, बोलना– इन चारों प्रक्रियाओं में विद्यार्थी अपने पूर्व ज्ञान की सहायता से अर्थ की रचना कर पाएँ और कही गयी बात के निहितार्थ को पकड़ सकें ।

जान पाएँगे/पाएँगी कि हिंदी शिक्षण के दायरे में यह शामिल है कि बिहार की विभिन्न भाषाओं/बोलियों जेसे उर्दू , मैथिली, भोजपुरी, मगही, अंगिका, वज्जिका, संथाली के साथ हिंदी के जीवंत सहअस्तित्त्व की पहचान बच्चे/बच्ची कर सकें ।

समझ सकेंगे / सकेंगी कि बिहार की बहुभाषिक स्थितियाँ हिंदी शिक्षण में बतौर संसाधन इस्तेमाल की जा सकतीं हैं ।

जान पाएँगे / पाएँगी कि बिहार की घरेलू भाषाएँ बेहतर हिंदी शिक्षण में सहायक हैं ।

1.3 पूर्व अनुभव

ज़रा सोचिए कि हिंदी की आदर्श प्राथमिक कक्षा हम किसे मानते हैं और क्यों ? क्या इस दुनिया पर पुनर्विचार की ज़रूरत नहीं है? हम ऐसा प्रायःदेखतें हैं कि कोई हँसता–खिलखिलाता विद्यार्थी जैसे ही विद्यालय पहुँचता है, उसकी हँसीगुम हो जाती है । इसके अनेक कारण हो सकते हैं । एक कारण यह भी है कि उसे विद्यालय की भाषा घर की भाषा से प्रायः अलग नज़र आती है। बात इतनी भर नहीं, सुबह से शाम तक बच्चा या बच्ची अनेक बार तो इस बात के लिए डाँट सुनते/सुनती हैं कि उसने अशुद्ध शब्द या वाक्य का प्रयोग किया। क्या प्राथमिक कक्षा की ऐसी कक्षायी स्थितियाँ बच्चे या बच्ची की भाषा शिक्षण के लिए उचित और ऊर्वर ज़मीन उपलब्ध करा पाती है ? आइए एक कक्षायी स्थिति को समझें –

मनन – 1

सलमान और रेहाना भाई – बहन हैं । उनकी मातृभाषा मगही है । वे गणित को गनित , शाम को साम , मार को माड़ बोलते हैं । इसी तरह की अन्य उच्चारणगत व्यवस्था उनकी भाषा में स्वभावतः मौजूद है । इसके लिए उनकी भोजपुरी भाषी हिंदी अध्यापिका लता पाण्डेय काफी भला – बुरा कहती हैं । महज दो महीने बाद ही रेहाना और सलमान विद्यालय की कक्षाओं में उदास रहने लगे हैं । अब अधिगम प्रक्रिया में वे कल्पनाशीलता और रचनात्मकता से दूर हो गए हैं । शिक्षिका का मानना है कि वे कक्षा के कमजोर छात्र/छात्रा हैं।

मनन – 2

- आपकी नज़र में सलमान और रेहाना क्या पढ़ाई में कमजोर हैं ? अपनी हाँ या ना का कारण सहित उत्तर दीजिए ।
- प्राथमिक स्तर के शिक्षण में भाषा की शुद्धता के अतिवादी आग्रह के कारण अधिगम के किन पक्षों की प्रायः उपेक्षा हो जाती है ?
- हिंदी भाषा शिक्षण में घरेलू भाषाओं की आवाजाही से कौन पक्ष जुड़ जाते हैं?

दरअसल स्कूल में जिस मानक हिंदी भाषा का प्रयोग होता है , वह भाषा प्रायः घरेलू भाषा से भिन्न होती हैं। ऐसे में पहली और दूसरी कक्षा के अध्यापकों के लिए यह चुनौती हो जाती है कि वे किन भाषाओं में संवाद कायम करें ताकि घर और स्कूल के मध्य भाषा पुल की तरह इस्तेमाल की जा सके। इस दिशा में किए गए शोध यह बतातें हैं कि भाषा शिक्षण का यह अहम् पहलू है कि अध्यापक/अध्यापिका घर और स्कूल के परिवेश एक संवाद स्थापित करने में सफल हो । आइए निम्नांकित अवतरण को पढ़ें –

मनन – 3

हमारी पाठ्यपुस्तकें और यहाँ तक कि कहानी की किताबें भी सामान्यतया मुख्यधारा की भाषा में या राज्य की मानक भाषा में होती हैं। पर अक्सर सामाजिक रूप से पिछड़े समुदायों से आने वाले बच्चों की भाषाई पृष्ठभूमि (बोलियों, शब्दावली और विन्यास की दृष्टियों से) भिन्न होती है। ऐसे बच्चों को स्कूल से जोड़ने वाले पुलों की जरूरत है। उनके और उनके परिवारों के लिए न केवल उनका स्कूल आना एक नई बात होती है, बल्कि अक्सर तो जिस नई दुनिया में वे आ पहुँचते हैं उसमें ठीक से स्थापित होने के लिए उन्हें एक नई भाषा की भी आवश्यकता पड़ती है। ज्ञात से अज्ञात की इस यात्रा का दिशानिर्देशन काफी सावधानी से किए जाने की जरूरत होती है। इस पूरे दौर में ,जब वह घर से स्कूल की दुनिया और फिर मुख्य धारा की मानक भाषा की दुनिया की ओर बढ़ता है, बच्चे के भाषाई विकास की जिम्मेदारी कक्षा 1 तथा 2 के शिक्षकों की होती है। –

रूक्मिणी बैनर्जी ,भाषा–शिक्षण की चुनौतियाँ और जूझने के तरीकेः कक्षा में राज कुमार By Learning Curve जुलाई 29, 2012

इस अवतरण से हमें पता चलता है कि भाषा शिक्षण के जिन उदेश्यों की चर्चा इस इकाई के आरंभ में की गई है, उन लक्ष्यों को प्राप्त करने में पहली और दूसरी कक्षा में पढ़ाने वाले अध्यापक/अध्यापिकाओं की संवेदनशील भाषा दृष्टि बहुत महत्त्वपूर्ण है। आइए इस संदर्भ में कुछ सवालों से गुज़रकर समझ थोड़ी और साफ बनाएं –

- हिंदी भाषा और साहित्य के निर्माण में जिन भाषाओं की गहरी भूमिका है उनके प्रति अध्यापक/अध्यापिका प्रायः उपेक्षा का रवैया क्यों अपनाते हैं ?
- क्या भाषाओं में रचे गए साहित्य को हिंदी शिक्षण का अंग बनाना उचित है ?
- भाषा शिक्षण के प्रमुख अवयवों–पढ़ना ,लिखना , बोलना ,सुनना को हासिल करने में घरेलू भाषाएँ कौन भूमिका निभाती हैं ?

1.4 पाठ्यचर्याओं के आलोक में हिंदी भाषा शिक्षण

भाषा का काम महज भावों की अभिव्यक्ति नहीं है , वह जीवन को समझने, उससे जुड़ने और जीवन जगत को प्रकट करने के लिए एक वृहत्तर आयाम को सम्भव करती है। हिंदी भाषा शिक्षण केवल

साहित्यिक विधाओं का अध्ययन न रह जाए , बल्कि वह जीवन, समाज, संस्कृति और रोज़गार के कहीं अधिक बड़े सरोकारों से जुड़े, पाठ्यचर्याओं की यह विशेष चिंता है। हिंदी भाषा शिक्षण के विभिन्न कौशलों, जैसे– मौखिक अभिव्यक्ति, पढ़ कर समझना, लिख कर अभिव्यक्त करना आदि की नींव प्राथमिक कक्षाओं में ही तैयार होती है, जिनका उत्तरोत्तर विकास होता है। फिलहाल हिंदी भाषा शिक्षण के विविध पक्षों के विश्लेषण से सम्पन्न राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 और बिहार पाठ्यचर्या 2008 अध्ययन अपेक्षित है ।

1.4.1 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 और हिंदी भाषा शिक्षण

किसी बच्चे/बच्ची के व्यक्तित्व निर्माण में मातृभाषा का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। भाषा के इस रूप को बच्चे/बच्ची अपने माता–पिता , परिजनों से सुनकर और उस माहौल में रहकर अनायास ही सीख जाते हैं। वे जब स्कूल जाते/जाती हैं तब उनके पास इस भाषा का समृद्ध संसार होता है । साथ ही स्कूल की भाषा का भी एक रूप होता है। कुल मिलाकर उनके पास अनेक भाषाओं का संसार होता है। इसे समाज की बहुभाषिक स्थिति कह सकते हैं। दरअसल बहुभाषिकता भारतीय समाज के भाषा बोध की रचनात्मक सच्चाई है। वह हमारी परम्परा और संस्कृति का अभिन्न अंग है। बच्चे/बच्ची की मौलिकता एवं सहज रचनाशक्ति को सामने लाना हिंदी भाषा शिक्षक का प्राथमिक दायित्व है। लिहाजा आत्मीय माहौल बनाना उसका ज़िम्मेदारी है।इस माहौल में ही विभिन्न भाषाई कौअहलों का विकास संभव है। कहना न होगा हिंदी शिक्षण का दायरा इतना व्यापक होना चाहिए कि उसमें उल्लिखित सारे सरोकार शामिल हों । भाषा बच्चे/बच्ची के रोज़मर्रा के जीवन का हिस्सा है, यह समझे बिना स्कूल में हिंदी शिक्षण कि कोई अवधारणा नहीं बन सकती।

भाषा शिक्षण के लिए स्कूल में कोई कार्यक्रम शुरू होता है तो हमें बच्चे की सहज भाषाई क्षमता को पहचानना होगा और समझना होगा और समझना होगा कि भाषाएँ सामाजिक – सांस्कृतिक रूप से बनती हैं एवं हमारे प्रतिदिन के व्यवहार से बदलती है। – 41ः 2005 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, एन.सी.इ.आर.टी , दिल्ली

हिंदी अनेक रूपों में प्राथमिक बच्चे/बच्चियों के जीवन का हिस्सा बनती है । कहीं वह माध्यम भाषा के रूपमें तो कहीं विषय के रूप में। इस तरह हिंदी शिक्षण को केवल साहित्य तक सीमित करना, उसके व्यापक दायरे को संकुचित करना होगा। विभिन्न विषयों के अध्ययन के दौरान समझ, अवधारणाएं भाषा में ही बनती है। लिहाजा अन्य विषयों के अध्ययन के दौरान भी हिंदी की भूमिका है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या इसे विशेष तौर पर रेखांकित करती है ।

भाषा शिक्षण केवल भाषा कक्षा तक ही सीमित नहीं होता है। विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, गणित की कक्षाएँ भी एक तरह से भाषा सीखने का अवसर प्रदान करता है। किसी विषय को सीखने का मतलब है उसकी अवधारणाओं को सीखना, उसकी शब्दावली को सीखना उनके बारे में आलोचनात्मक ढंग से चर्चा करना और उनके बारे में लिख सकना। – 42ः 2005 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, एन. सी.इ.आर.टी , दिल्ली

मनन – 4

- आपकी नज़र में हिंदी शिक्षण के अंतर्गत साहित्य के अतिरिक्त अन्य किन विषयों को ध्यान में रखना चाहिए और क्यों ?
- स्कूल की प्राथमिक कक्षाओं के बच्चे/बच्चियों की हिन्दी और हिन्दी से अलग विषयों की कक्षाओं में प्रयुक्त होने वाले वाक्यों/शब्दावलियों का अध्ययन कीजिए और बताइए कि हिंदी शिक्षण के विभिन्न रूपों के स्वरूप क्या हैं ?

हिंदी भाषा शिक्षण के सन्दर्भ में यह समझ लेना चाहिए कि पुरानी कक्षाएं प्रायः पाठ आधारित अधिगम तक केंद्रित थीं। पर राष्ट्रीय पाठयचर्या 2005 और बिहार पाठयचर्या 2008 इस बात पर जोर देती है कि भाषा शिक्षण की पारम्परिक अवधारणा यानी पाठ्यपुस्तक केन्द्रित अधिगम से बाहर निकलकर भाषाशिक्षण के उस व्यापक लक्ष्य को हासिल किया जाय जिससे जीवन के वृहत्तर सरोकार प्रकट किये जा सकें । आइए इसे और स्पष्टता से समझें ।

मनन – 5

निम्नांकित अवतरण को पढ़िए

- एक प्राथमिक विद्यालय में भाषा की शिक्षिका ने कक्षा तीन के विद्यार्थियों को उनकी पाठ्यपुस्तक में दी गई कहानियों में से एक कहानी सुनाने का टेस्ट लिया। कक्षा में कुल 30 बच्चे थे। मयंक के अलावा सभी बच्चों ने पाठ्यपुस्तक में से कहानी सुनाई। अधिकांश बच्चों ने 10 में से 6 अंक प्राप्त किए। सबसे ज्यादा अंक प्रकृति को मिले 8। और मयंक के सबसे कम 2 अंक आए। शिक्षिका ने जब सभी बच्चों को अंक बताए तो मयंक के अंक सुनकर सभी बच्चे हँसने लगे तथा चिढ़ाने लगे। मयंक को यह समझ में नहीं आ रहा था कि उसके इतने कम अंक क्यों आए?
- सभी की तरह उसने भी कहानी सुनाई थी। वह उदास होकर चुपचाप बैठ गया। कुछ देर बाद शिक्षिका से कक्षा के बाहर जाकर पूछा कि मैडम मेरे सबसे कम अंक क्यों आए हैं? शिक्षिका ने कहा– ''मैंने पुस्तक में से कहानी सुनाने के लिए कहा था। अपने मन से कुछ भी बोलने के लिए नहीं।'' उसके बाद मयंक ने कभी भी कक्षा में अपनी खुशी से कक्षा की किसीभी गतिविधि में भाग नहीं लिया और न ही खुशी से स्कूल आना चाहा। उसके माता–पिता को बड़ी मुश्किल से उसे स्कूल के लिए तैयार करना पड़ता था।
- उदाहरण–2 : यह भी उदाहरण हिन्दी भाषा की कक्षा 3 का है। जहाँ शिक्षक ने बच्चों को 'गाय' विषय पर पाँच वाक्य लिखवाए–
- 1. गाय हमारी माता है।
- 2. उसके चार पैर होते हैं।
- 3. वह हरी घास खाती है।
- 4. गाय दूध देती है।
- 5. गाय के गोबर से उपले बनते हैं।
- शिक्षक ने लिखाने के बाद कहा कि उन पाँचों वाक्यों को याद कर लो टेस्ट में लिखना होगा। 1 वाक्य पर एक नम्बर मिलेगा और जो पाँचों वाक्यों को सही लिखेगा उसे पूरे–पूरे नम्बर मिलेंगे।
- शिक्षक के निर्देश के अनुसार सभी बच्चे याद करने में लग गए। टेस्ट हुआ, अधिकांश बच्चों ने शिक्षक के द्वारा लिखवाए गए वाक्यों को हू–ब–हू लिखा। नीलम ने भी 5 वाक्य लिखे। किन्तु ये शिक्षक के द्वारा लिखवाए गए वाक्यों से अलग थे।
- 1. गाय हमारी माता है।
- 2. उसके चार पैर होते हैं।
- 3. मेरे घर में बहुत सारी गायें हैं।
- 4. गाय के दूध से पैसे मिलते हैं।
- 5. जीतू की गाय के छोटा–सा बच्चा है।

अधिकांश बच्चों को 5 में से 5 नम्बर दिए गए। नीलम को सिर्फ 2 नम्बर दिए गए। जबकि उसने भी बाकी बच्चों की तरह 5 वाक्य लिखे। वाक्यों के लिखने में कोई गलती नहीं की फिर भी कम नम्बर दिए गए।**(2,3 : 2011 प्रारम्भिक कक्षाओं में भाषा सीखना–सिखाना ,प्रारम्भिक शिक्षा में डिप्लोमा ए राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान)**

ऐसे उदाहरण इस बात को पुष्ट करते हैं कि भाषा शिक्षण की पारंपरिक कक्षाएं प्रायः तनाव, असुरक्षा और भय पैदा करती हैं , अधिगम की ऐसी प्रक्रियाएँ स्वाधीन भाषा अभिव्यक्ति को बाधित करती है । हम जानते हैं कि स्वाधीन अभिव्यक्ति के लक्ष्य को हासिल करना भाषा शिक्षण का एक महत्त्वपूर्ण सरोकार है।

1.4.2 बिहार पाठ्यचर्या 2008 और हिंदी भाषा शिक्षण

बिहार पाठ्यचर्या यह साफ तौर पर रेखांकित करती है कि भाषा केवल संवाद और संप्रेषण का काम ही नहीं करती अपितु वह शिक्षण के सम्पूर्ण कार्यकलापों के लिए माध्यम की भूमिका का भी निर्वहन करती है । समाजीकरण और संस्कृतिकरण की प्रक्रियाएं भी भाषा के द्वारा सम्पन्न होती हैं । समाजीकरण और संस्कृतिकरण की प्रक्रिया में जिस सांस्कृतिक अस्मिता का निर्माण होता है उसके निर्माण में विभिन्न भाषिक परिवेशों , जो जन्म के साथ ही घरेलू , सामाजिक और विद्यालयी वातावरण से प्राप्त होती है की आधारभूत भूमिका होती है ।बिहार पाठयचर्या इस बात की चिंता करती है कि स्कूल में अपनी शुरुआत और फिर विकास करने वाले छोटे शिक्षार्थियों के भाषाई कौशल को कैसे विकसित किया जाय और समृद्ध बनाया जाय? सहानुभूति पगे संवाद और संवेदना से समृद्ध ज्ञान के आधार परही भाषाई कौशल का विकास किया जा सकता है । पाठ्यचर्या की टिप्पणी गौरतलब है, बच्चा व्यक्ति , स्थान और विषय के अनुसार अपने भाषिक व्यवहार में परिवर्तन कर सकता है , लेकिन वह भाषा कीइन जटिल संरचनाओं के नियम नहीं बता सकता । कक्षा में बच्चे की इन विशेषताओं को ध्यान में रखकर उसके भाषाई कौशल का विकास सहानुभूति संवाद तथा संवेदनात्मक ज्ञान के द्वारा किया जाना चाहिए। (37:2008 बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा ,एस.सी.ई.आर.टी.पटना) कहना न होगा भाषाई जटिलताओं को समझने और प्रसंगानुकूल उनके व्यवहार की बारीकियों से रू–ब–रू हुए बिना विभिन्न भाषाई कौशलों को अर्जित करना संभव नहीं ।

बिहार में प्रथम भाषा के रूप में स्वाभाविक पसंद हिंदी ही है। राज्य में बोली जाने वाली भाषाओं (संथाली आदि भाषाओं को छोड़कर) और हिंदी में एक ही भाषा परिवार की भाषाएँ होने के कारण एक स्वाभाविक संबंध है। सच तो यह है कि बिहार में बरती जाने वाली हिंदी को समृद्ध बनाने में बिहार की भाषाओं का महती योगदान है। अधिगम में इस समझ को शामिल कर बेहतर भाषाई पुल का निर्माण संभव है।

हिंदी में आंचलिक भाषाओं की सुगंध इसे और भी सुवासित, सशक्त और समृद्ध बनाती है। सभी प्रमुख विधाओं और ज्ञान के क्षेत्रों में इसका समृद्ध साहित्य भंडार है। – 38:2008, बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा ,एस.सी.ई.आर.टी.पटना)

मनन– 6

- अपने परिवार के लोगों से बातचीत कीजिए। यह बातचीत विभिन्न पीढियों से हो तो , बेहतर। उनके द्वारा पढ़ी गयी पाठ्यपुस्तकों के उन अंशों का चयन कीजिए जिनमें बिहार के विभिन्न इलाकों की भाषा की छाप दिखाई देती हो।

बिहार के साहित्यकारों की रचानाओं का अध्ययन कीजिए और यह बताइए कि उनकी हिंदी भाषाई आधार पर अन्य इलाके के साहित्यकारों से कैसे अलग की जा सकती है ?
हिंदी भाषा का अध्ययन अपने परिवेश की विविधताओं– विशेषताओं को समाहित करते हुए हो तब वह रचना के समृद्ध अनुभव सन्दर्भों को सहज ही संभव कर सकती है। कहानी, कविता, संस्मरण, रिपोर्ताज जैसी अनेक विधाएं तभी जीवंत होतीं हैं , जब उनमें अपने परिवेश की भाषा की सुवास हो । लोकतंत्रिक चेतना को सिरजने में भाषाई उदारवाद का बड़ा योगदान है ।

भाषा शिक्षण को धर्मनिरपेक्षता, सहिष्णुता और ज़रूरतमंद की चिंता जेसे मूल्यों के अंगीकार के लिए भी मददगार होना चाहिए। अतएव पाठों के चयन तथा अध्यापन विधि, दोनों मामलों में काफी ध्यान देने की ज़रूरत है। (39:2008 , बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा ,एस.सी.ई.आर.टी.पटना)

1.5 मातृभाषा और बहुभाषिक परिदृश्य से हिंदी भाषा की ओर

किसी भी बच्चे/बच्ची के जीवन की शुरुआत घरेलू भाषाओं से होती है । पर उस भाषा के साथ जैसे ही वे अपने स्कूल में दाखिल होते हैं , प्रायः उनकी भाषाओं के साथ दुराव का व्यवहार किया जाता है । जबकि सच यह है कि स्कूल में आने से पहले उसके पास, घर में बोली जाने वाली भाषा के व्याकरण और उसकी भंगिमाओं की समझ हो चुकी होती है। ज़रूरत इस बात की है कि बच्चे/बच्चियों की इस समृद्धि का हिंदी शिक्षण में उपयोग किया जाय । इसके लिए ज़रूरी है कि ऐसे परिवेश का निर्माण किया जाय , जिसमें उसकी भाषा के प्रति दुराव का नहीं , बल्कि अपनाव का व्यवहार हो । यहीं यह समझा लेना चाहिए कि बच्चे/बच्ची के घर की भाषा के स्वीकार का मतलब मानक हिंदी का अस्वीकार नहीं है । इसका मतलब केवल इतना है कि आरंभिक कक्षाओं में उनकी घरेलू भाषा का स्वीकार कर आगे की कक्षाओं में मानक हिंदी की तरफ यात्रा की जाय । घरेलू भाषा का इस्तेमाल हिंदी व्याकरण और उसकी भाषा – भंगिमा को सिखाने में पुल की तरह किया जाय ।

यह आवश्यक है कि प्रारंभिक कक्षाओं में शिक्षकों द्वारा घरेलू भाषा अथवा स्थानीय बोली को स्वीकार किया जाय । हिंदी के साथ ऐसे बच्चों का परिचय बढ़ाया जाना चाहिए । इसका अर्थ यह नहीं है कि शिक्षक मानक हिंदी अथवा सही उच्चारण का प्रयोग ही न करें , क्योंकि आज की परिस्थितियों में शिक्षार्थियों के लिए हिंदी आगे बढ़ने का महत्त्वपूर्ण आधार होगी । (37:2008 , बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा ,एस.सी.ई.आर.टी.पटना)

मनन–7

निम्नांकित अवतरण को पढ़िए :

उसने दीदी को सलाह दी, दिदिया रे, गोइठा मत थोप, घाम न निकलतई चार दिन तक फिर सुखतउ कइसे ? हमर मान तो, इ सब गोबर मट्टी में गाड़ देहीं, खाद बन जइतउ। ननकू ने अपनी उत्तम सलाह पर दिदिया से एक धौल खाया। खैर , इतने सुहावने मौसम में बड़े बेमन से वह गोइठा थापने बैठा । 48:2013–2014 मंजू मधुकर , कोंपल , भाग –3

गद्यांश में व्यवहृत भाषा सही है या गलत ? अपने उत्तर कारण सहित बताइए ।
हिंदी के रचनाकारों की रचनाओं में जनपदीय भाषाओं के उपयोग पर चर्चा कीजिए । आपकी नज़र में हिंदी सीखने – सिखाने में उनका उपयोग कैसे किया जा सकता है
आपने पहले सेमेस्टर में ‚ भाषा और शिक्षा ’ पत्र मेंविस्तार से बिहार के बहुभाषिक परिदृश्य और उसके अधिगम में उपयोग के विविध पहलुओं को बखूबी समझा । बहुभाषिकता के सन्दर्भ का उपयोग हिंदी

शिक्षण में भी संभव है । संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी, बांग्ला , भोजपुरी , वज्जिका , मैथिली , अंगिका , मगही जैसी भाषाएँ बिहार के भाषाई परिदृश्य में स्वाभाविक रूप से घुली–मिली हैं। इन भाषाओं का प्रभाव यहाँ रचे गए हिंदी साहित्य में भी दिख जाते हैं । उन तत्त्वों की छानबीन हिंदी अध्यापकों/अध्यापिकाओं का दायित्त्व है । इनका उपयोग और सर्वेक्षण हिंदी शिक्षण का अंग है । विभिन्न रचनाकारों की अलग–अलग तरह की रंगतों वाली हिंदी (विद्यापति, तुलसीदास, सूरदास, राजा राधिका रमण प्रसाद, शिवपूजन सहाय , नागार्जुन , फणीश्वरनाथ रेणु आदि) को जानना – समझना और उनका सर्जनात्मक उपयोग करना भी हिंदी शिक्षण का अंग है ।

1.6 हिंदी भाषा शिक्षण से अर्जित दक्षताएँ

जब भाषा को हम एक ऐसा औजार कहते हैं, जिसका उपयोग ज़िन्दगी को समझने, उससे जुड़ने और जीवन जगत को प्रकट करने के लिए करते हैं , तब सहज ही हमारा ध्यान भाषा शिक्षण से अर्जित कौशलों की तरफ जाता है ।उन कौशलों की पहचान हम सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना के रूप में करा सकते हैं। यह क्यों ज़रूरी है ? एन.सी.इ.आर.टी.के हिंदी पाठ्यक्रम में इसे ज़्यादा स्पष्ट तरीके से कहा गया है। उसे यहाँ उद्धृत करना तर्कसंगत होगा –

विद्यार्थियों में बोलने का कौशल इस सीमा तक विकसित हो चुका हो कि औपचारिक चर्चाओं व वाद विवाद में बेझिझक होकर बोल सकें। वे अपने विचारों और भावनाओं को स्पष्ट, व्यवस्थित और असरदार ढंग से अभिव्यक्त कर सकें। भाषा पर उनका इतना अधिकार हो चुका हो कि वे जीवन की विविध स्थितियों से आत्मविश्वासपूर्वक गुज़र सकें। विभिन्न प्रकार के औपचारिक व अनौपचारिक सन्दर्भों के अनुसार उचित शैली चुन सके। वे सहज, कल्पनाशील ,प्रभावशाली और व्यवस्थित ढंग से किस्म–किस्म का लेखन कर सकें। भाषा को जानदार बनाने के लिए उर्दू के और आंचलिक शब्दों का इस्तेमाल करने की समझ उनमें हो। पढ़ना , सुनना , लिखना , बोलना इन चार प्रक्रियाओं में विद्यार्थी अपने पूर्वज्ञान की सहायता से अर्थ की रचना कर पाएँ और कही गई बात के निहितार्थ को भी पकड़ पाएँ। (9:2007 हिंदी, कक्षा 1–5 प्रांभिक कक्षाओं के लिए पाठ्यक्रम , एन.सी.ई.आर.टी, नयी दिल्ली) प्रायः इन कौशलों पर हम फौरी तौर पर राय दे देते हैं। ज़रूरी है कि हम इन कौशलों को और गहराई से समझें । सुनने की क्षमता को तार्किक ढंग से विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि कक्षायी गतिविधियों में स्थानीय स्तर पर उपलब्ध संसाधनों , जैसे– लोककथाओं , कहानियों, सामुदायिक गान, नाटक जैसे सन्दर्भों का सर्जनात्मक उपयोग किया जाय ।भाषा के जरिए हम एक दूसरे के अनुभवों से जुड़ते हैं ।इसमें बोलने की अहम भूमिका होती है। पारंपरिक कक्षाओं में भाषा अध्यापक/अध्यापिका शुद्धता पर अतिवादी रुख अपनाते हैं। पर यह बोलने की दुनिया का आरंभिक चरण नहीं है। आरंभिक चरण है उस माहौल की रचना करना, जिसमें बच्चे/बच्चियां खुल कर राय दे सकें। शुद्धता का सवाल इसके बाद आता है। जिसे धीरे–धीरे अवसरानुकूल परिस्थितियों में हासिल किया जा सकता है । कक्षा में बोलना कौशल के लिए विभिन्न समूह बनाकर चर्चा कराई जा सकती है। चित्र नक़्शे आदि का उपयोग भी संभव है ।

मनन–8

अध्यापक / अध्यापिका कुछ पर्चियां बनाकर उनमें निम्नांकित जीवन स्थितियां लिखें –

- अपने सबसे प्यारे दोस्त से जुड़ीं कोई याद
- किसी अयोजन , त्योहार से संबंधित बात
- भय का अहसास
- खुद का लिया कोई निर्णय
- जब आपने किसी की मदद की आदि

- फिर उन्हें विद्यार्थियों के विविध समूहों में बाँटें , फिर उन विषयों पर उन्हें बोलने के लिए कहें । बोलने के पहले उन्हें समूहवार आपस में चर्चा करने के लिए भी कहें । अब प्रस्तुति के बाद यह जानने कि कोशिश करें कि
- जिसने अपने अनुभव प्रस्तुत किए , उनहोंने प्रस्तुति पूर्व कैसे तैयारी की ? बोलने से पहले उनहोंने अपने विचारों को कैसे व्यवस्थित किया ?
- जो लोग सुन रहे थे , वे सुनते समय क्या महसूस करा रहे थे ? उस समय उनके दिमाग में क्या चल रहा था ?

इस प्रकार हम देखते हैं कि बोलने की प्रक्रिया में लोग एक–दूसरे से जुड़ते हैंसाथ ही वे एक–दूसरे के साथ घटित को महसूस भी करते हैं । बोलने की दक्षताओं में इन सन्दर्भों के शामिल करने पर सकारात्मक परिणाम निकलने की संभावनाएं बन सकती हैं ।

भाषा शिक्षण से अर्जित होने वाले एक और कौशल को हम पढ़ना के रूप में देखते हैं। सवाल है पढ़ना क्या है'? लोग बड़ी आसानी से ऐसा कहते हुए मिल जाते हैं– बच्चे/बच्चियां पढ़ना नहीं चाहते/चाहतीं , पढ़ाई में उनकी रुचि नहीं आदि। यदि वाकई हमें इस तरह के प्रसंग परेशान करते हैं तो हमें सबसे पहले यह समझना होगा कि पढ़ना आखिर है क्या ? पढ़कर समझना ही पढ़ना है ।

मनन – 9

नीचे लिखे वाक्य को ब्लैक बोर्ड पर लिखें –

अस्धग्त्ग क्ज्यर्त्व ल्ख्ध प्रुनीता !

अब बच्चे / बच्चियों से कहें –

- इसे पढ़ें ।
- अब विद्यार्थियों और पढ़ने वाले से पूछें कि जो उन्होंनें जो पढ़ा क्या वह समझ में आया?
- यदि नहीं पढ़ें तो क्यों नहीं पढ़ पाए ?

असला में पढ़ना तभी संभव है, जब उसे समझा भी जाय। अन्यथा वह ज्यादा से ज्यादा बांचना है ।

पढ़ने का मतलब सिर्फ अक्षरों से जुडी ध्वनियाँ उत्पन्न करना नहीं है , बल्कि लिखी हुई चीज़ का अर्थ निकालना है । बच्चा पढ़ने के लिए स्वतः उत्प्रेरित हो इसके लिए आवश्यक है कि उसे पढ़ने के लिए वैसी सामग्री दी जाय जो रोचक एवं आकर्षक हो , उसके स्तर का हो। पढ़ने के कौशल के विकास के लिए बाल पत्रिकाएँ, पत्र, विज्ञान पत्रिकाएँ, कहानी, उपन्यास इत्यादि का संसाधन के रूप में प्रयोग किया जा सकता है । (40:2008 बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा ,एस.सी.ई.आर.टी.पटना)

हिंदी भाषा शिक्षण में भाषाई कौशल का एक उल्लेखनीय सन्दर्भ लिखना' है । लिखना रटे हुए को उगलना नहीं है । यह अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए कि लिखना कहने का एक ख़ास अंदाज़ है । इसमें स्वाधीन अंदाज़ की इज्जत करने की भूमिका का खासा महत्त्व है । इस सन्दर्भ में निम्नांकित टिपण्णी उल्लेखनीय है –

लेखन पढ़ी हुई चीज़ को उगलना नहीं है, यह तो तोतारटंत या पुनर्प्रस्तुति है। लिखना दरअसल अनुभवों और विचारों का, हर पढ़ी हुई चीज़ का बेहतर विवेचन है। इन्हें अपनी विशिष्ट जुबान में कैसे कहा जाय, ताकि बात भी कह दी जाय और बात पर अपनी छाप भी लग जाय– यह लेखन की कला है जिसे अभ्यास से साधा जा सकता है बशर्ते अभ्यास में आज़ादी हो लिखने की, नानाविध भंगिमाओं

से खेलने की । तभी हम सिर्फ अच्छा लिखने वाले विद्यार्थी से आगे जाकर लेखक – लेखिका पैदा करा सकेंगे , जिन्हें अपनी रचना पर फ़क्र होगा। (19:2013, भाषा की समझ, प्रशिक्षण सामग्री के.जी.बी.वी. उच्च प्राथमिक स्तर के हिंदी शिक्षकों के लिए)

इस प्रकार भाषा शिक्षण से अर्जित दक्षताओं को समग्रता में समझना ज़रूरी है ।

1.7 सारांश

हिंदी भाषा शिक्षण पर आधारित इस इकाई में हमने बखूबी समझा कि भाषा महज नियमों द्वारा संचालित व्यवस्था नहीं है। यह केवल संप्रेषण का माध्यम भर नहीं है। यह मानवीय व्यवहार का वह अटूट हिस्सा है , जिसमें सपने , संघर्ष और यथार्थ की अभिव्यक्ति होती है। विभिन्न भाषाई कौशलों को अर्जित करना स्कूली शिक्षा का अनिवार्य हिस्सा है।

हमने ;ह समझ कि प्राथमिक कक्षाओं में हिन्दी भाषा शिक्षा को कारगार बनाने के लि, बिहार और भारत के बहुभाषिक परिदृश्य को समझना आवश;क है साथ ही साहित्य शिक्षा महज व्याकरण शिक्षा नहीं है बल्कि यह उन योग्यताओं को हासिल करना है, जिनके बल पर हम किसी रचना की समग्र समझ बना पाते हैं।

1.8 स्वमूल्यांकन

1. भाषा शिक्षण क्या है ? क्या भाषा शिक्षण केवल व्याकरणिक विशेषताओं का अध्ययन है ?
2. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा और बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा के आलोक में हिंदी शिक्षण क्या है ?
3. हिंदी भाषा शिक्षण में साहित्यिक रचनाओं की क्या भूमिका है ?
4. बिहार में बोली जाने वाली भाषाओं से संबंधित हिंदी रचनाओं पर विचार कीजिए और उनकी विशेषताओं का दस्तावेजीकरण कीजिए ।

1.9 सन्दर्भ

- भाषा–शिक्षण की चुनौतियाँ और जूझने के तरीकेः कक्षा में राजकुमारठल स्मंतदपदह ब्नतअम । जुलाई 29, 2012
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, एन.सी.इ.आर.टी , दिल्ली
- बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा, एस.सी.ई.आर.टी.पटना ,
- भाषा की समझ , प्रशिक्षण सामग्री के.जी.बी.वी. उच्च प्राथमिक स्तर के हिंदी शिक्षकों के लिए
- कक्षा 1–5 प्रांभिक कक्षाओं के लिए पाठ्यक्रम, एन.सी.ई.आर.टी, नयी दिल्ली
- प्रारम्भिक कक्षाओं में भाषा सीखना–सिखाना प्रारम्भिक शिक्षा में डिप्लोमा राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
- कोंपल , भाग –3 , राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, पटना, बिहार ।

इकाई– 2
भाषाई क्षमता का विकास : सुनना व बोलना

2.1 परिचय
2.2 उद्देश्य
2.3 पूर्व अनुभव
2.4 सुनना और बोलना
  2.4.1 सुनने का मतलब क्या
  2.4.2 बोलने का मतलब क्या
2.5 बच्चों की बातचीत का महत्त्व
2.6 बच्चों को कक्षा में सुनने व बोलने के मौके उपलब्ध करवाना
  2.6.1 कविता / बालगीत
  2.6.2 चित्र द्वारा
  2.6.3 कहानी सुनाना
  2.6.4 नाटक द्वारा
2.7 सह शैक्षणिक गतिविधियाँ
2.8 सारांश
2.9 स्वमूल्यांकन
2.10 संदर्भ

2.1 परिचय

पिछली इकाई में हमने भाषा शिक्षण के उद्देश्यों पर समझ बनाने का प्रयास किया। हमने देखा कि बच्चों में भाषा सीखने की जन्मजात क्षमता होती है। उन्हें अपने परिवेश में सुनने और बोलने का भरपूर अवसर मिलता है और वे अपनी भाषा सहजता से सीख लेते है। बच्चों को आगे चलकर घर की भाषा के अलावा अन्य भाषाएं भी सीखनी होती हैं। स्कूल में बच्चे हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, मैथिली इत्यादि भाषाएं सीखते हैं। इसके लिए भी जरुरी है कि बच्चों को इन भाषाओं के उपयोग के भरपूर मौके दिए जाएं।

भाषायी कौशलों में सुनना, बोलना, पढना, और लिखना शामिल है। सहज मान्यता है कि इन कौशलों का आपसी सम्बन्ध है। ये सभी कौशल एक दूसरे के विकास में सहायक है लेकिन सीखने सिखाने के समय आम तौर पर इन कौशलों को अलग–अलग करके देखा जाता है। इन सभी कौशलों के आपसी सम्बन्ध को हम सम्बंधित इकाई में समझने का प्रयास करेंगे।

इस इकाई में हम यह समझने का प्रयास करेंगे कि सुनने और बोलने का क्या अर्थ है और आपस में इनका क्या सम्बन्ध है ? सुनना और बोलना बच्चों के भाषा सीखने में कैसे सहायक है? इन कौशलों के प्रति शिक्षकों का क्या नजरिया है?

2.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप।

- सुनने और बोलने का अर्थ समझ सकेंगे।
- भाषा सीखने–सिखाने में सुनने–बोलने के महत्त्व को समझ पाना
- कक्षा में सुनने बोलने के कौशलों से सम्बंधित किस प्रकार की गतिविधियाँ की जा सकती है तथा उनमें शिक्षक की भूमिका और जिम्मेदारी को समझ पाना
- सुनने–बोलने को प्रभावित करने वाले कारकों को समझ पाना

2.3 पूर्व अनुभव

आपने देखा होगा विद्यालय आने से पहले बच्चे/बच्ची घरेलू भाषाओं में अपनी पूरी दुनिया प्रकट करने के काबिल हो जाते हैं। ऐसा कहा जा सकता है कि सुनना और बोलना जैसे कौशल अनेक बार स्वतः अर्जित कर लिए जाते हैं। प्राथमिक स्तर पर बच्चे/बच्ची अपने परिवेश में उपलब्ध भाषा को विविध परिस्थितियों में प्रयोग होते, सुनते और समझते हैं। साथ ही उनसे लगातार अपने शब्द भंडार में वृद्धि करते चलते हैं। यह वह चरण है जब बच्चों को समृद्ध भाषायी माहौल उपलब्ध होता है एवं सार्थकता के साथ अर्थ निर्माण करने के भरपूर अवसर होते हैं। दरअसल तीन वर्ष की उम्र तक बच्चे/बच्ची अपना शब्द भंडार पूरी तरह विकसित कर चुके होते हैं। उन्हें भाषा की पूरी व्यवस्था उतार चढ़ाव, समय आदि सबके बारे में जानकारी होती है। विद्यालय आने पर उनके सुनने और बोलने की दुनिया में अलग तरह के परिवेश, समाज और संस्कृति की दुनिया मिलती है। इस इकाई में हम विस्तार से सुनने और बोलने के विभिन्न पक्षों का अध्ययन करेंगे।

2.4 सुनना व बोलना

बच्चे जब पहली बार स्कूल आते है तो काफी दिनों तक उन्हें वर्णमाला, प्रार्थना, कविता, गिनती, पहाडा आदि रटवाया जाता है। शिक्षक की यह अपेक्षा रहती है बच्चे बार–बार दुहराकर उन्हें याद कर लेंगें। बच्चे भले ही इस प्रकार रटी हुई चीजों का मतलब समझ ना रहे हों उन्हें तब तक इन चीजों को दुहराते रहना पड़ता है जब तक वे उसे रट ना लें। इस तरह के दुहराव करवाने के पीछे की आम धारणा यह रहती है कि बार–बार एक ही ध्वनि सुनने और दुहराने से बच्चे उसे सीख जाते है और उन्हें याद हो जाता है। यह धारणा इस निष्कर्ष को मान्यता देती है कि बिना सुने बच्चा नए शब्द और वाक्य नहीं बोल सकता मतलब बच्चा पहले सुनता है और फिर बोलता है। जबकि दोनों प्रक्रियाएँ साथ साथ चलने वाली है।

जब हम कुछ बोलते है तो उसे सुन भी रहे होते है। कभी–कभी ऐसा होता है की हम बिना बोले सुन रहे होते है। टी.वी., रेडियो आदि देखते–सुनते समय ऐसा होता है लेकिन यह प्रक्रिया इस रूप में नहीं होती की जैसा सुन लिया गया वैसे ही याद कर लिया गया हो और जरुरत पड़ने पर उसे पुनः दोहरा दिया गया। वास्तव में सुनने–बोलने की प्रक्रियाँ इससे अलग है। सुनने बोलने में 'समझना' महत्त्वपूर्ण है। समझने के साथ ही हम किसी संवाद को आगे बढ़ा सकते है दरअसल सुनना और बोलना दोनों साथ–साथ चलने वाली प्रक्रियाँ है इसलिए भाषा सीखने में इन दोनों को अलग–अलग करके नहीं देखा जा सकता है। समझ के आधार पर खड़ी ये दोनों परस्पर आश्रित प्रक्रियाएँ हैं।

मनन–1

1. सुनने–बोलने की प्रक्रिया का महत्त्वपूर्ण हिस्सा क्या है और क्यों?
2. सुनने–बोलने की प्रक्रिया और सूचना ग्रहण करने में क्या अंतर है?
3. आमतौर पर स्कूलों में शुरुआती स्तर पर बच्चों को सुनने–बोलने के लिए किस तरह के मौके दिए जाते हैं? क्या ये मौके पर्याप्त होते हैं? अपना मत दीजिए।

2.4.1 सुनने का मतलब क्या?

हम हमेशा अपने आस–पास तरह–तरह की आवाजें सुनते रहते हैं। इसमें प्रकृति, इंसान, मशीन, जानवर आदि की आवाजें शामिल होती है। यदि इन सभी आवाजों पर गौर करें तो क्या सही मायने में हम इन्हें सुन पाते हैं? जैसे लकड़ी काटे जाने, मशीन चलने आदि की ध्वनियों का क्या का कोई अर्थ है?

जब हम किसी से बातचीत करते है तो उसके अर्थ को हमें उसी समय समझना होता है लेकिन यह समझना हमेशा एक ही तरह से नहीं होता। किसी संवाद को हम उसमें प्रयोग हो रहे शब्दों के आधार पर समझते है। इसमें सुनी जाने वाली ध्वनियों, शब्दों, वाक्यों, उपवाक्यों और पाठ के आधार पर वाक्य को समझने का पक्ष प्रधान हो जाता है। इसमें सुनने वाले को उपयोग किये गए शब्दों का अर्थ तथा वाक्य में शब्दों के विशेष क्रम (पैटर्न) का पता होना चाहिए।

हम इसे एक उदहारण से समझते हैं एक शिक्षक बच्चे से कहता है कि–

कुछ चिड़ियाँ पूरब से आई और कुछ चिड़ियाँ पश्चिम से, पूरब की चिड़ियों ने पश्चिम की चिड़ियों से कहा तुम अपने में से एक चिड़ियाँ हमें दे दो तो हम तुमसे दो गुने हो जायेंगे फिर पश्चिम की चिड़ियों ने पूरब की चिड़ियों से कहा तुम अपने में से एक हमें दे दो तो हम तुम्हारे बराबर हो जायेंगे।

अब इस सवाल को समझने के लिए बच्चे को शब्दशः शिक्षक की बात पर ध्यान देते हुए आगे बढ़ना हैं और हर निर्देश का अनुसरण करते हुए सवाल को समझना है। इस प्रक्रिया में बच्चे का पूरा ध्यान शिक्षक के संवाद पर होता है। अनुभव ये बताता है कि इसमें क्रम को नहीं तोड़ना है। इसमें ध्वनियों को छोटे–छोटे टुकड़ों में बाँटकर बात को समझना है। यहाँ पूरे संवाद में महत्त्व के शब्दों को पहचानना और उनके टुकड़े करने की योग्यता महत्त्वपूर्ण है जो निरंतर अभ्यास से आती है।

इस रूप में शब्दों का अर्थ समझने में शब्द का अर्थ, वाक्य संरचना का अभ्यास और उसे टुकड़े में बाँटना निहित है। इस प्रकार के निरंतर अभ्यास से निम्न क्षमताएँ विकसित होने में मदद मिलती है। कही गई बात को शब्दशः सुनना तथा शब्द और वाक्य संरचना के विभाजन को समझ पाना, मूल शब्दों को पहचानते हुए वाक्य–शब्द के व्याकरणिक सम्बन्ध को पहचानना तथा उनके लिए बलाघात एवं विराम चिह्नों का प्रयोग करना।

अब हम एक–दूसरे वाक्य को लेते है। हमने समाचार में सुना कि 'दरभंगा में बाढ़ आ गई है'। अब यह सूचना हमारे पूर्व अनुभवों के साथ जुड़कर एक विस्तारित समझ के रूप में ग्रहण होती है। इस प्रक्रिया में हमारा बाढ़ सम्बन्धी पूर्व अनुभव महत्त्वपूर्ण पहलू बन जाता है तथा अर्थ ग्रहण करने की प्रक्रिया कथन के अर्थ की संरचना पर निर्भर करती है। बाढ़ देखने या उसके बारे में सुनने और पढने से हासिल हमारा पूरा अनुभव ज्ञान इस न्यूनतम सूचना के साथ जुड़ जाता है कि 'दरभंगा में बाढ़ आ गई है' यदि सुनने वाला इस प्रक्रिया से अर्थ ग्रहण करने में समर्थ नहीं होता है तो इसका अर्थ है कि

या तो संवाद अधूरा है या फिर पूर्व ज्ञान सीमित है। इस प्रक्रिया में हम देखते है कि किसी परिस्थिति के अनकहे विवरण के आधार पर अनुमान लगाने के साथ हम उसके कारण और प्रभाव के बारे में मूल शब्दों के आधार पर समझ बनाने की तरफ आगे बढ़ सकते है।

सुनने–सुनाने के समय उपरोक्त प्रक्रियाएँ साथ–साथ चलती है। इन प्रक्रियाओं में बातचीत को समझने में संदर्भ, पूर्व ज्ञान, और कथन विशेष महत्त्व रखता है। कौन से कथन में कौन सी प्रक्रिया ज्यादा उपयुक्त होगी यह कथन या संवाद के परिचय, सूचना की गहराई एवं प्रकार के साथ सुनने वाले के उद्देश्य पर निर्भर करता।

मनन–2

1. शब्दों के आधार पर समझने की प्रक्रिया में संवाद को किस प्रकार से समझा जाता है? उदाहरण देकर विश्लेषण कीजिए।
2. रवि ने कहा कि ''मैं दंत चिकित्सक के पास जा रहा हूँ।'' इस कथन को सुनकर हमारे दिमाग में किन–किन प्रश्नों और उत्तरों के सेट बनेंगे?

2.4.2 बोलने का मतलब क्या

सामान्यतः बोलने को हम विचारों के आदान–प्रदान से जोड़कर देखते है। बोलना दरअसल ध्वनियों शब्दों वाक्यों का उच्चारण मात्र नहीं है। बोलने से पहले हमारे दिमाग में एक छवि बनती है कि हमें क्या बोलना है। बोलने में यह समझ निहित होती हम उसे कैसे बोले कि सुनने वाले को समझ में आ जाय। जीन एचिसन ने अपनी पुस्तक 'द आर्टिकुलेट मैमल्स' में इंसानों की भाषाई समझ के बारे में विस्तार से लिखा है। उनके अनुसार बोलते समय हम कई तरह की प्रक्रियाएँ एक साथ कर रहे होते है जैसे बोलने से पहले हमारे दिमाग में योजना बनती है कि हमें किसके सामने क्या कहना है और कैसे कहना है। जब कोई बात हम अपने दादाजी को कहेंगे वही बात दोस्त को कहने में हमारी भाषा में बदलाव आ जाता है। आगे कौन से शब्द बोलने है। हमारा वाक्य विन्यास (शब्द–वाक्य–रचना) किस प्रकार होगा इस पर विचार भी कर रहे होते है इसे एक उदहारण से देखते है–

'मैं आज घर देर से जाऊँगा',

'माँ नाराज होंगी' और

'मुझे घर से बाहर रहना पड़ेगा'

इन तीनों वाक्यों की बनावट सरल है। यदि इन वाक्यों को इस तरह से बोला जा, तो ठीक से समझ में आ रहे हैं और इनको बोलना भी आसान है। लेकिन अगर इन वाक्यों को एक–दूसरे पर निर्भर कर दें तो बोलते समय योजना बनाने वाली प्रक्रिया को बारीकी से देख पाएँगे। जैसे–

'यदि मैं आज भी घर देर से गया तो माँ नाराज़ हो जाएँगी और या तो मुझे घर से बाहर रहना पड़ेगा या मैं किसी दोस्त के घर चला जाऊँगा'।

उपर्युक्त वाक्य में 'तो', 'यदि' पर आश्रित है। इसी तरह 'या' के साथ एक और 'या' का आना भी जरूरी है। साथ ही माँ के संदर्भ में 'जाएँगी' और अपने सन्दर्भ में 'जाऊँगा' होना ही पड़ेगा। स्पष्टतः यह पूरा वाक्य इसकी हू–ब–हू ध्वनि और लक्षणों के साथ बोलने से पहले ही हमारे दिमाग में बन चुका होता है और यह एक योजनाबद्ध क्रम में ही बनता है। (जीन एचिसन द्वारा 'द आर्टिकुलेट मैमल्स' के अनुवाद पर आधारित)

इस उदाहरण से स्पष्ट होता है कि हमें बातचीत करते समय योजना बनाते रहना और बोलते रहना जरूरी है। बोलने के दौरान ये प्रक्रियाँ इतनी तेजी से होती हैं कि हमें इनका आभास तक नहीं होता। घरेलू भाषा के संदर्भ में यह बात ज्यादा प्रासंगिक है। जबकि दूसरी भाषा सीखने के दौरान ये प्रक्रियाँ काफी नजदीक से देखी जा सकती हैं।

बोलने में विचारों और भावों के अनुकूल सही शब्दों का चयन एवं सही व्याकरणिक संरचना का होना अत्यन्त महत्त्वपर्ण है। व्याकरणिक संरचना से मतलब है कि हिन्दी भाषा में वाक्य की रचना कर्ता + कर्म + क्रिया से होती है, बोलने से पहले हमारे दिमाग में योजना बनाते समय यह संरचना सही–सही बनती है, इसमें कहीं कोई गड़बड़ी नहीं होती है।

इस पूरी प्रक्रिया में हाव–भाव एवं विचारों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। बोलते समय ध्वनि का उतार–चढ़ाव, विराम एवं लय भी अर्थ–बोध में महत्त्व रखती है। बोलने में विराम की क्या भूमिका है इसे हम एक उदाहरण द्वारा समझने की कोशिश करेंगे। जैसे– 'पकड़ो मत जाने दो'

इस वाक्य को बोलते हुए यदि 'पकड़ो' के बाद एक क्षण का विराम दिया जाए तो इसका अर्थ होता है कि कहीं जाने की मनाही का आदेश दिया जा रहा है परन्तु यदि यही विराम 'पकड़ो मत' के बाद दिया जाए तो वाक्य का जो अर्थ निकलता है वह पहले वाले अर्थ से एकदम उलटा होता है। अतः बोलते समय विराम कहाँ दिया जाए, इसकी समझ होना जरूरी है और यह समझ निरन्तर अभ्यास से ही विकसित होती है। इसी के साथ बोलते समय किसी शब्द पर ज़ोर देना या अलग लय के साथ बोलना भी वाक्य के अर्थ को प्रभावित करता है जैसे– 'ये स्कूल है'।

इस वाक्य को बोलते समय यदि हम अलग–अलग शब्दों पर ज़ोर दें या फिर अलग लय के साथ बोलें तो इससे वाक्य का अर्थ बदल जाता है। यह वाक्य लय बदलते ही व्यंग्यात्मक, प्रश्नात्मक या विस्मयात्मक वाक्य का अर्थ दे सकता है। इसी के साथ बोलते वक्त अमौखिक संकेतों (इशारों एवं हाव–भाव) का प्रयोग भी अर्थ को प्रभावित करता है।

मनन–3

1. अपने भाव–विचार को स्पष्ट करने के लिए बोलते समय हम किन–किन चीज़ों का सहारा लेते हैं?
2. अपने आसपास के 3–4 वर्ष के बच्चों द्वारा बोले जाने वाले 10 वाक्यों को लिखिए और विश्लेषण करके लिखिए कि भाषा के नियम की दृष्टि से वह बच्चा क्या–क्या जानता है।
3. किसी अहिन्दी भाषी व्यक्ति द्वारा बोले जाने वाले पाँच वाक्यों की सूची बनाइए। वाक्यों का विश्लेषण करके बताइए कि उसे हिन्दी बोलने में कहाँ–कहाँ दिक्कतें आ रही हैं?

2.5 बच्चों की बातचीत का महत्त्व

हमारे स्कूलों में 'बात करना' प्रायः गलत समझा जाता है। यह माना जाता है कि यदि कोई बात कर रहा है तो ठीक से पढ़ाई नहीं कर रहा होगा। इस लिए जैसे ही अध्यापक बच्चों को बात करता हुआ देखता है, वह तुरंत उन्हें रोकता है। बात करने की छूट बच्चों को सिर्फ आधी छुट्टी में रहती है जब अध्यापक कोई महत्त्वपूर्ण काम नहीं कर रहा होता है।

बातचीत के प्रति उपेक्षा की वजह से हम शिक्षा में बातचीत के उपयोगों की अवहेलना करते आ रहे हैं। यह स्थिति सभी स्तरों पर है पर प्रारम्भिक स्तर पर यह सब सबसे स्पष्ट है। नर्सरी व प्राइमरी स्कूल के बच्चों के लिए बातचीत करना सीखने और सीखी हुई चीज को सुदृढ़ बनाने का एक बुनियादी

माध्यम है। सच तो यह है कि ऐसे अध्यापक, जो बच्चों को बात नहीं करने देते, किताबों व अन्य सामग्री के लिए पैसे की कमी की शिकायत करने के हकदार नहीं है। वे पहले ही एक ऐसा मूल्यवान साधन बेकार जाने दे रहे हैं जिसके लिए कोई पैसा नहीं खर्च करना पड़ता। इसलिए ऐसा स्कूल जहाँ छोटे बच्चे बात करने को स्वतंत्र नहीं, बड़ा फिजूलखर्च स्कूल कहलायेगा।

यह सही है कि बच्चे तरह–तरह के उद्देश्य लेकर बातचीत करते हैं और वे सभी उद्देश्य अध्यापक के लिए उपयोगी नहीं कहे जा सकते। उदहारण के लिए बोरियत के मारे बात करने दुसरे की निगाह से चूकी हुई चीज उसे दिखाने के लिए बात करने में फर्क है। दूसरी किस्म की बात बच्चे की सीखने की प्रक्रिया को बल देती है, जैसा कि दो बच्चों के इस संवाद में हो रहा है। ये बच्चे अध्यापिका की मेज़ के पास इन्तजार में खड़े फुसफुसा रहें है और अध्यापिका रजिस्टर भरने में लगी है :

पहला बच्चा : देखा, आज बहन जी अँगूठी पहने हैं!

दूसरा बच्चा : तुमने पहले नहीं देखी?

पहला बच्चा : नहीं .... हाँ, हाँ मैंने पहले देखी है।

दूसरा बच्चा : अरे, लेकिन यह अँगूठी दूसरी है।

पहला बच्चा : बहन जी ने नई अँगूठी खरीदी है। यह पहले वाले से छोटी है।

दूसरा बच्चा : नहीं, पतली है।

यदि आप इस छोटे से संवाद का विश्लेषण करे तो सीखने की उन संभावनाओं को पहचान सकेंगे जो बातचीत के जरिये इन दो बच्चों को उपलब्ध हुईं। यदि पहले बच्चे अध्यापिका की अँगूठी देखकर बात न छेड़ी होती तो उसे यह याद करने का न मौका मिलता कि बहन जी पहले भी अँगूठी पहनती थीं। यदि यह बातचीत न हुई होती तो दुसरे बच्चे को पुरानी और नई अँगूठी में फर्क देखने का अवसर न मिलता, न ही यह समझने का अवसर मिलता कि 'छोटी' और 'पतली' में क्या भिन्नता है। बातचीत के इन उपयोगों के प्रति सचेत होने के लिए जरुरी है कि हम बच्चों की बात सुनने की आदत डालें। यह कहना आसान है, पर इसे करना इस लिए मुश्किल है क्योकि बड़े यह मान कर चलते हैं कि उनका काम बच्चों को निर्देश देना है और बच्चों का काम सुनना है। बच्चों के बातचीत के अच्छे श्रोता बनने के रास्ते में यह मान्यता अड़चन पैदा करती है। अच्छे श्रोता से मेरा आशय एक ऐसे व्यक्ति से जो बात के सूक्ष्म उद्देश्य और बातचीत के कारण पैदा हुई सीखने के संभावनाओं को धैर्यपूर्वक पहचान सके।

आभारः ''बच्चे की भाषा और अध्यापक एक निर्देशिका'', कृष्ण कुमार NBT द्वारा प्रकाशित

मनन–4

1. कक्षा में बच्चों की बातचीत के प्रति शिक्षक क्या सोचते हैं?
2. बच्चों को बातचीत के पर्याप्त अवसर मिलें इसके लिए कक्षा में अध्यापक की किस प्रकार की भूमिका अपेक्षित है?
3. अपने आस–पास के किन्हीं 3–6 साल के बच्चों की बातचीत का अवलोकन कीजिए और अपने अनुभव लिखिए और विश्लेषण कीजिए कि उनकी बातचीत में ऊपर दी गई क्रियाओं में से कौन–कौन सी शामिल हैं?

2.6 कक्षा में सुनने–बोलने के मौके कैसे उपलब्ध करवाएँ

गर्मी की छुट्टियों के बाद स्कूल खुल चुके थे। बरसात हो जाने से आसपास के गड्ढों में पानी भरा हुआ था। इधर स्कूल में पढ़ाई भी शुरू हो चुकी थी। एक कक्षा में शिक्षक पढ़ा रहे थे। कक्षा में पीछे की

तरफ बैठे दो बच्चे आपस में बातें कर रहे थे। शिक्षक का ध्यान अचानक उन दोनों की ओर गया। शिक्षक उन बच्चों के पास गए और बड़े प्यार से पूछा 'भई, क्या बात है, हमें भी बताओ। क्या बातें हो रही हैं? और कोई मजेदार बात हो तो अपने दूसरे दोस्तों को भी बताओ।'

कक्षा में दोनों बच्चे कुछ देर के लिए तो सकपका गए। वे चुप ही रहे। फिर से शिक्षक ने कहा– 'डरो मत, आखिर तुम क्या बात कर रहे थे?'

उनमें से एक बच्चा हिम्मत करके बोला– 'है ना, हम घर से आ रहे थे तो गड्ढे में मेंढक जोर–जोर से बोल रहे थे।'

शिक्षक ने हौसला बढ़ाते हुए कहा– 'अच्छा!', फिर क्या हुआ?

बच्चे– 'मेंढक गड्ढे के किनारे उछल रहे थे। मेंढक बड़े–बड़े थे।'

शिक्षक– 'तो फिर क्या हुआ?'

बच्चे– 'फिर...। फिर, हम पास में गए तो पानी में छलाँग दी।'

उन दोनों बच्चों का हौसला बढ़ चुका था। उनको यह भरोसा हो गया था कि वो जो बातें कर रहे थे इस वजह से उनको डाँट पड़ने वाली नहीं है बल्कि वो जो बातें कर रहे थे उसकी वजह से उनको शाबाशी मिल रही है।

उनमें से एक बच्चे ने शिक्षक से पूछा– 'मेंढक बरसात के बाद कहाँ चले जाते हैं?'

शिक्षक जो पढ़ा रहे थे उसको छोड़कर बच्चों की बात को आगे बढ़ाया– 'सभी ने मेंढक देखा है।' उस कक्षा में कोई भी बच्चा ऐसा नहीं था जिसने मेंढक नहीं देखा हो। शिक्षक के इस सवाल पर पूरी कक्षा ''हाँ '' की आवाज के साथ गूँज रही थी।

अब तो हर बच्चा मेंढक के बारे में कुछ न कुछ कहने को उतावला हुए जा रहा था।

एक बच्चा बोला– मेंढक बरसात में ही टर्र–टर्र करते हैं।

एक बच्चे ने कहा– 'जब मेरे घर के पिछवाड़े खुदाई हो रही थी तो अंदर से मेंढक निकले थे।'

एक ने कहा कि उसने मेंढक को कीड़े खाते हुए देखा है। कोई बता रहा था कि मेंढक बावड़ी की मुंडेर से छलाँग लगा लेते हैं।

कक्षा का माहौल अब मेंढकमय हो गया था। कुछ बच्चे मेंढक की आवाज में टर्र–टर्र कर रहे थे तो कुछ मेंढक की तरह उछल रहे थे।

शिक्षक बच्चों की बातों और क्रियाकलापों को गौर से सुन और देख रहे थे। हालाँकि शिक्षक बीच–बीच में बच्चों को चुप भी करा रहे थे।

शिक्षक ने सभी बच्चों से कहा– 'देखो, अब मेंढकों को ओर ध्यान से देखना और सोचना भी कि आखिर मेंढक बरसात के बाद कहाँ चले जाते हैं।'

अन्त में शिक्षक ने बच्चों को मेंढक पर 5 वाक्य लिखकर लाने को कहा।

मेंढक पर हुई इस बातचीत में शिक्षक ने सहज तरीके से मेंढक के आवास, खान–पान, रंग–रूप, आकार, स्वभाव पर बातचीत की और उसे अपने शिक्षण से जोड़ा। स्कूल में शिक्षक द्वारा बच्चों को इस तरह की बातचीत के मौके देने से वे धीरे–धीरे अपने अनुभवों से जुड़े भावों और विचारों को प्रकट करने में समर्थ हो जाएँगे। साथ ही वे विभिन्न विषयों में शामिल ज्ञान को गहराई से समझ सकेंगे। ऐसे मौके

देने के लिए शिक्षकों को ज्यादा दूर जाने की जरूरत भी नहीं है वरन् स्कूल परिवेश में या स्कूल के आस–पास की जगहों जैसे– बगीचा, खेत, नाला, छोटी पुलिया, फूल, तितलियाँ, सड़क, मिट्टी, फाटक, घोंसले आदि उन तमाम चीजों को आसानी से ढूँढ़ा जा सकता है। जिनका नजदीक से अवलोकन कर बच्चे उनके बारे में बातचीत कर सकते हैं।

यहाँ शिक्षक ने बच्चों को अपनी बात कहने के भरपूर मौके देने के साथ–साथ बोलने के लिए प्रोत्साहित भी किया है। अगर शिक्षक बच्चों को प्रोत्साहित ना करते तो कक्षा में इतनी बढ़िया बातचीत नहीं हो पाती। इस तरह कक्षा को बच्चों के जीवन और अनुभवों से जोड़ने से सीखना सहज एवं स्वाभाविक हो जाता है।

मनन–5

1. आपके विद्यालय में बच्चों को बातचीत के कौन–कौन से मौके दिए जाते हैं और इससे क्या–क्या फायदा होगा?
2. कक्षा में बच्चों की बातचीत को सीखने–सिखाने का जरिया आप कैसे बनाएँगे? एक उदाहरण द्वारा अपनी बात स्पष्ट कीजिए।
3. आपके अनुसार शिक्षण के दौरान कक्षा का माहौल कैसा होना चाहिए?
4. भाषा–शिक्षण के दौरान बच्चों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों की एक सूची बनाइए और साथ ही यह भी बताइये कि ये प्रश्न बच्चों की किन क्षमताओं की ओर इंगित करती हैं?

2.6.1 कविता/बालगीत सुनाना और गाना

गोल–गोल पानी
मम्मी मेरी रानी
पापा मेरे राजा
फल खाए ताजा।

सबसे पहले मेरे घर का
अंडे जैसा था आकार
तब मैं यही समझती थी बस,
इतना–सा ही है संसार।
फिर मेरा घर बना घोंसला,
सूखे तिनके से तैयार।
तब मैं यही समझती थी बस,
इतना–सा ही है संसार।
फिर मैं निकल गई शाखों पर,
हरी–भरी थी जो सुकुमार।

तब मैं यही समझती थी बस,
इतना–सा ही है संसार।
आखिर जब मैं आसमान में,
उड़ी अपने पंख पसार,
तभी समझ में मेरी आया,
बहुत बड़ा है यह संसार।

– निरंकार देव 'सेवक'

हरा समन्दर, गोपी चन्दर
बोल मेरी मछली, कितना पानी
इतना पानी, इतना पानी।

हम अक्सर बच्चों को गली–मुहल्ले में अपने साथियों के साथ या अकेले ऐसे कई छोटे–छोटे बालगीत और कविताएं गाते देखते हैं। ये सब गाते समय ना उन्हें गलत गाने पर डाँट या सजा का डर रहता है और ना ही किसी के टोकने का डर। हर बच्चे को कविता/गीत की लय और शब्दावली आकर्षित करती है। कई बार तो वे गीतों के शब्दों को खींचतान कर ऊटपटाँग प्रयोग भी करते हैं और ऐसा करने में उन्हें बहुत ही मज़ा आता है। शब्दों से खेलना, बच्चों की रचनाशक्ति और ऊर्जा को बाहर लाने में अद्‌भुत भूमिका निभा सकता है। ये कविता इसका एक उदाहरण पेश करती है–

घर पीछे तलैया
घास की मड़ैया
पीपल की है छैया
छैया बैठी गैया।

अक्सर इस तरह के गीत गाते समय बच्चे उसमें कई बार अपनी मर्जी से कुछ शब्दों को जोड़ते–तोड़ते रहते हैं, परन्तु कविता की लय टूटती नहीं है। जैसे एक चार–पांच साल का बच्चा इस कविता में अपने शब्द जोड़कर गाता है–

घर पीछे गैया
मेरे साथ भैया
पीछे बैठी मैया
भैया मेरा रोया
रात नहीं सोया।

कविता अपने आपको अभिव्यक्त करने तथा अपने जीवन से जोड़ने का एक सशक्त माध्यम है। नियमित रूप से कविताएँ व गीत सुनकर बच्चे भाषा की बुनियादी संरचनाएँ ग्रहण कर लेते हैं। जैसे– कविता में आए नए शब्दों का अर्थ पकड़ लेते हैं, कविता के लय को बना बिगाड़ कर तुकबन्दी भी कर लेते हैं।

साथ ही कविता बच्चों को अपने अनुभवों से भी जोड़ती है। अगर एक ही कविता को दो अलग–अलग बच्चों द्वारा पढ़ी जाएगी तो दोनों ही उस कविता का अर्थ अपने–अपने अनुभवों से जोड़ते हुए समझेंगे।

शिक्षकों के लिए यह सोचने वाली बात है कि कक्षा में कविता के साथ किस तरह से काम किया जाए जिससे बच्चों में रचनात्मकता का विकास हो तथा वे अपनी भावनाओं और अनुभवों को कविता व गीतों के द्वारा अभिव्यक्त कर सकें।

मनन–6

1. कक्षा एक व दो की हिन्दी पाठ्य–पुस्तक में दी गई कविता, 'मन करता है' तथा 'नानी तेरी मोरनी' नामक कविता के आधार पर बच्चों से क्या–क्या बातचीत की जा सकती हैं?
2. प्राथमिक कक्षा के भाषा–शिक्षण में कविताओं की क्या भूमिका है? पुस्तकालय व पाठ्य–पुस्तक में दी गई किन्हीं चार–पांच कविताओं के उदाहरण से समझाइये?

अगर पेड़ भी चलते होते

अगर पेड़ भी चलते होते
कितने मजे हमारे होते

बाँध तने में उनके रस्सी
जहाँ कहीं उनको ले जाते।

अगर कहीं पर धूप सताती
उनके नीचे झट सुस्ताते

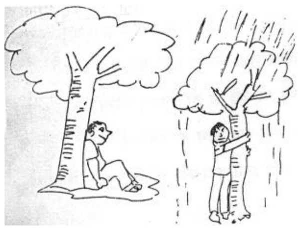

जब कभी भी वर्षा होती
उनके नीचे हम छिप जाते।

भूख सताती अगर अचानक
तोड़ मधुर फल उनके खाते

आता कीचड़ बाढ़ कहीं तो
ऊपर उनके झट चढ़ जाते।

मनन–7

1.	'अगर पेड़ भी चलते होते' कविता कक्षा पाँच के बच्चों के साथ करवाइए और उसे आगे बढ़ाने को कहिए। बच्चों द्वारा जोड़ी गई पंक्तियों पर चर्चा कीजिए कि उन्होंने ये ही पंक्तियाँ क्यों लिखीं?
2.	यह कविता बच्चों को भाषा सीखने में क्या—क्या मौके देती है?

2.6.2 चित्रों पर चर्चा करना

चित्र एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हम कक्षा 1 से लेकर कक्षा 8 तक के बच्चों के साथ बातचीत एवं चर्चा की बहुत सारी संभावनाएँ खोज सकते हैं। छोटी कक्षाओं में तो बच्चों की चित्रों में बहुत ही रुचि होती है उन्हें चित्र देखने और बनाने में मजा आता है। किसी किताब में चित्र सबसे पहले बच्चों का ध्यान आकर्षित करते हैं। उनके साथ चित्रों पर सहज बातचीत करना आसान होता है। बच्चे चित्रों का बारीकी से अवलोकन भी करते हैं तथा उस पर खूब सारी बातचीत भी कर पाते हैं जिसका कि हम अंदाजा भी नहीं लगा सकते हैं।

कक्षा—3 के बच्चों के साथ जब इस चित्र पर बातचीत की गई तो बच्चे उसमें दिखाई देने वाली चीजों के नाम बताने के साथ—साथ अपने अनुभवों को अवलोकन से जोड़ते हुए कुछ तर्क दे पा रहे थे, पर हर किसी का अलग नजरिया था। इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं।

(i) आदमी गाय ले जा रहा है/एक आदमी बैल बाँध रहा है/एक लड़का झोंपड़ी में जा रहा है।

(ii) एक लड़की पेड़ पर चढ़ रही थी एक लड़के ने उसको रोका कि पेड़ बहुत बड़ा है, तुम गिर जाओगी/लड़की पेड़ पर झूल रही है/पेड़ हिल रहे हैं/पहाड़ पर बहुत सारे पेड़ उग रहे हैं।

(iii) सुबह सूरज उग रहा है, सुबह पक्षी उड़ रहे हैं/सूरज निकल कर बाहर आ रहा है/ शाम का समय है/सूरज डूब रहा है।

(iv) लुगाई घर जा रही है/औरत पानी ले जा रही है।

(v) दो बगुले उड़ रहे हैं।

उपर्युक्त वाक्य इस बात की ओर इशारा करते हैं कि बच्चे एक चित्र पर कई तरह से बातचीत करते हैं। चित्रों पर की गई बातचीत बच्चों की सृजनात्मकता और विश्लेषण क्षमता को बढ़ावा देती है। चाहे वे चित्र अखबारों में छपे हों, विज्ञापन के हों, कोई टिकट हो या कैलेण्डर के पीछे छपे हों। ये सभी चित्र उच्च प्राथमिक स्तर पर भी अलग—अलग तरीके से बातचीत के लिए उपयोग में लिए जा सकते हैं।

कक्षा में बच्चों के बीच बैठकर किसी तस्वीर को आराम से देखने का अवसर देना और अपनी बात कहने के लिए उन्हें स्वतंत्र छोड़ देना उनमें बेहिचक अभिव्यक्ति के विकास के लिए बहुत उपयोगी होता है। तस्वीर में जिन चीज़ों की तरफ बच्चों का ध्यान नहीं गया हो उसे शिक्षक प्रश्न पूछकर बच्चों के ध्यान में ला सकते हैं। इस तरह से बच्चे में बारीकी से अवलोकन करने की क्षमता विकसित की जा सकती है। तस्वीरों पर बात करते समय हमारे सवाल, बच्चों को अपने कौशलों को पैना करने का भरपूर मौका

देते हैं। प्रश्न ऐसे होने चाहिए जो बच्चों को चीज़ों को ढूँढ़ने, उनके बारे में तर्क करने, कल्पना करने, भविष्यवाणी करने और चीजों और घटनाओं का अपने अनुभवों से संबंध बैठाने के लिए प्रेरित करें। जैसे उपर्युक्त चित्र पर आधारित ये प्रश्न बच्चों से सवाल पूछकर बातचीत को आगे बढ़ाने का एक नमूना पेश करते हैं–

- पेड़ के नीचे क्या–क्या रखा है? (ढूँढ़ना)
- कुएँ के पास खड़ी बच्ची रो क्यों रही है? (तर्क करना)
- पनघट पर खड़ी औरतें क्या बातें कर रही होंगी? (कल्पना करना)
- औरतें घर जाकर क्या करेंगी? (भविष्यवाणी करना)
- क्या तुम कभी गाँव गए हो यदि हाँ तो तुमने वहाँ क्या–क्या देखा? (संबंध बनाना)

2.6.3 कहानी सुनना व सुनाना

कहानियाँ सुनना–सुनाना प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों को भाषा सीखने में बहुत मदद करता है। कहानी सुनना बच्चों के लिए रुचिकर होने के साथ–साथ उनकी सृजनात्मकता को भी बढ़ाने वाला होता है। कई बार बच्चे सुनी हुई कहानी में मनचाहा बदलाव करके अपने मित्रों को सुनाते हैं। इसके द्वारा बच्चे न केवल शब्दों के अर्थ बल्कि विभिन्न घटनाओं को भी समझने लगते हैं और साथ ही यह बच्चों की कल्पनाशीलता को भी बढ़ाती है। कहानी इस मायने में भी महत्त्वपूर्ण कि यह बच्चों में अनुमान लगाने की क्षमता बढ़ाती है जैसे– जब कभी बच्चे कहानी सुन रहे होते हैं तो उनकी जिज्ञासा लगातार बनी रहती है कि आगे क्या होगा? वे अपने स्तर पर अनुमान लगाते रहते हैं और अगर कहानी उनकी सोच के अनुरूप आगे बढ़ती है तो वे ज्यादा आत्मविश्वासी होने लगते हैं और समय के साथ–साथ उनके अनुमान ज्यादा सटीक होते जाते हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि कहानियाँ उनको भावी जीवन के लिए तैयार करने में भी मददगार होती हैं। जैसे– खरगोश–शेर वाली कहानी बच्चों को जीवन में आने वाली मुश्किलों का सामना करने हेतु मानसिक रूप से तैयार करती है। कहानियाँ सुनाते समय हम अपने जीवन के अनुभवों को भी उसमें शामिल करते चलते हैं। कई बार सुनाने वाले को उसमें से कोई बात ज्यादा महत्त्वपूर्ण लगती है तो वह उस हिस्से को बढ़ा–चढ़ाकर भी सुनाता है। ऐसा करते समय जीवन की घटनाओं, चरित्रों आदि को गढ़ना और उसके द्वारा सुनने वाले का ध्यान आकर्षित करना मुख्य उद्देश्य होता है। साथ ही सुनाने वाले का तरीका और हाव–भाव भी इसकी रोचकता पर प्रभाव डालते हैं। तथा जब कहानी में नए शब्दों का उपयोग होता है तो बच्चे हावभाव के साथ सुने गए शब्द से उसके अर्थ का अनुमान भी लगा लेते हैं। यह उनके शब्दकोश, सुनने–समझने और अनुमान लगाने की क्षमता में भी इज़ाफा करता है।

कहानी सुनाकर उस पर चर्चा करना थोड़ा मुश्किल काम है, परन्तु अगर शिक्षक की तैयारी हो कि चर्चा का उद्देश्य क्या है तो यह काफी आसान व सफल साधन बन सकता है। अधिकतर शिक्षकों को लगता है कि कहानी सुनाते ही उससे क्या शिक्षा मिलती है यह प्रश्न पूछना उनका अधिकार है जबकि बच्चों के साथ सार्थक संवाद की शुरुआत के लिए यह प्रश्न बिल्कुल भी ठीक नहीं हैं।

बच्चों को कहानी सुनाना जितना जरूरी है उतना ही जरूरी है उनसे कहानी सुनना। इससे बच्चों में अपने आपको अभिव्यक्त करने की क्षमता का विकास होता है। शिक्षक द्वारा सुनायी गई कहानी को दोहराने के बजाय बच्चों से उनकी मर्जी की कहानी सुनना ज्यादा फायदेमंद होता है। कहानी के व्यक्तित्व व चरित्र के बारे में प्रतिक्रिया देते समय वह अपने अनुभवों को भी उसमें शामिल करता है।

प्रत्येक बच्चे को कक्षा में इस बात की स्वतन्त्रता देनी होगी कि वह कहानी के बारे में किसी भी तरह की बात करे, उसे कल्पना से बढ़ा–चढ़ा कर बताए।

मनन–8

1. कक्षा एक व दो की हिन्दी पाठ्य–पुस्तक में से आपको कौन–कौन सी कहानियां पंसद है और ये कहानियां आपको क्यों पंसद है? उस पर अपने विचार लिखिए।

2. कक्षा एक व दो की हिन्दी पाठ्य–पुस्तक में से बच्चों को कौन सी कहानी ज्यादा अच्छी लगी। इसके बारे में बच्चों से बातचीत कीजिए कि यह कहानी क्यों अच्छी लगी?

3. कक्षा एक की पाठ्य–पुस्तक अंकुर में 'शेर और सियार' की कहानी पर बच्चों से बातचीत के लिए निम्नलिखित बिन्दु दिए गए है–

– कहानी में यदि आप शेर होते तो क्या करते?

– कहानी में यदि आप सियार होते तो क्या करते?

– लोमड़ी नहीं भागी होती तो क्या होता?

– इस कहानी में बुद्धिमान कौन है और क्यों?

इस तरह के प्रश्न बच्चों से पूछने के क्या उद्देश्य रहे होंगे?

2.6.4 नाटक द्वारा भाषाई विकास

बच्चों के लिए नाटक कोई नई चीज़ नहीं है। हम अक्सर बच्चों को कार्टून या फिल्म के पात्रों की नकल, अपने मम्मी–पापा, गुडिया की शादी, स्कूल–स्कूल आदि खेल खेलते देखते हैं। इस तरह से बच्चे खेल–खेल में किसी की नकल उतारना, किसी चीज़ को बढ़ा–चढ़ाकर बताना, बहाने बहाना जैसे कई नाटक करते रहते हैं। हर बच्चे में एक नाटकीय कौशल होता है लेकिन उन्हें कक्षा में इस कौशल का प्रयोग करने का अवसर नहीं मिलता। इसका कारण यह भी है कि नाटक–अभिनय जैसी गतिविधियों को स्कूलों में वार्षिक उत्सव या किसी विशेष अतिथि के सामने प्रदर्शन के लिए ही करवाया जाता है। इस स्थिति में भी संवाद शिक्षकों द्वारा लिखे होते हैं तथा प्रदर्शन के समय बच्चों में हमेशा ही गलती हो जाने का डर बना रहता है।

अभिनय को रोज़मर्रा की कक्षा–गतिविधि के रूप में इस्तेमाल करना इससे काफी अलग है। एक भाषाई गतिविधि के रूप में नाटक में दो बातों को शामिल करना जरूरी है– आजादी और आनन्द। नाटक को कक्षा में करवाने के लिए शिक्षक व बच्चों को कोई विशेष तैयारी की जरूरत नहीं होती। बस शिक्षक को इतना करना होता है कि वह बच्चों को स्वाभाविक रूप से अपने अनुभवों के बारे में बात करने के लिए प्रोत्साहित करे। प्राथमिक स्तर पर तो अभिनय के लिए किसी भी ऐसी घटना, कहानी या कार्टून को लिया जा सकता है जो बच्चे अपने आस–पास देखते हैं। जैसे– कोई जानवर, उसकी चाल, उसका रंग–रूप आदि। उच्च प्राथमिक स्तर पर शिक्षक बच्चों को इस बात के लिए प्रेरित करें कि वे छोटे–छोटे समूहों में खुद ही नाटक का विषय चुनें, खुद ही उसके संवाद लिखें एवं अभिनय करें। साथ ही बच्चों को पारम्परिक खेलों व लोककथाओं का अभिनय करने के लिए भी उत्साहित करना चाहिए जिससे उनमें सृजनात्मकता के विकास के साथ–साथ अपने सांस्कृतिक वातावरण से भी जुड़ाव बढ़े।

2.7 सहशैक्षणिक गतिविधियाँ

कक्षा में बच्चों को सुनने–बोलने के मौके देने के लिए कुछ अन्य गतिविधियाँ भी करवायी जा सकती है। जो बच्चों को स्वयं सोच–विचारकर उसे अपने शब्दों में प्रस्तुत करने के मौके दे। जैसे– आशुभाषण, जिसमें बच्चों को दिए गए विषय पर तत्काल अपने विचार प्रस्तुत करने होते हैं। इसे रोचक बनाने के लिए ऐसे मनोरंजक विषय रखे जा सकते हैं जिससे बच्चे आनन्द लेते हुए बोल व सुन पाएँ जैसे– 'अगर मुझे अलादीन का चिराग मिल जाए', 'अगर मैं जादूगर होता', 'अगर मैं जोकर होता' आदि। दूसरी गतिविधि है, वाद–विवाद। इसमें बच्चों को किसी विषय के पक्ष या विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत करने होते हैं और विपक्षी विचारों के सामने ऐसे मजबूत तर्क रखने होते हैं जिससे वक्ता अपनी बात से ज्यादा से ज्यादा श्रोताओं को प्रभावित करे एवं उनको सहमत कर पाए। जैसे– 'उद्योग : वरदान या अभिशाप', 'फास्टफूड बनाम स्वास्थ्य'। इस तरह की गतिविधियाँ सभी कक्षा के बच्चों के साथ की जा सकती है। इनके द्वारा बच्चों को ऐसे अवसर मिलते हैं जिससे कि वे विचारों व बोलने में संबंध बैठा पाते हैं, उन्हें व्यवस्थित क्रम में जमाते हैं तथा तर्क के साथ अपने अनुभवों को जोड़ते हुए प्रभावी वक्ता एवं कुशल श्रोता बनते हैं।

इसके लिए अध्यापक को शुरू से ही बच्चों में धैर्यपूर्वक सुनने तथा दूसरों के विचारों का सम्मान करने की आदत विकसित करनी चाहिए।

मनन–9

'गुब्बारा' नामक किताब के चित्रों के देखकर मध्य विद्यालय दुसाधपट्टी बेतिया के कक्षा 5 के सोनू कुमार ने यह कहानी सुनाई–

एक लड़का था। वह खुले आसमान के नीचे घुम रहा था। आगे चलते चलते उसे एक चीज मीली। आगे उसने चलते चलते उसको फूलाया धीरे धीरे वह बड़ा होने लगा। अचानक वह जमीन पर से उठने लगा उसने और फूलाया तो वह ऊपर उड़ने लगा तब तक की वह बहुत ऊंचा उड़ चला था। अचानक उसने नीचे देखा कि उसे जंगल दिखा आगे बढ़ा तो उसे बादल दिखा। वह आगे गया तो उसने देखा कि शहर से बहुत दूर जा चला था। अचानक गुब्बारा फूट गया तो वह नाचते–नाचते नीचे गिरने लगा। अचानक घंड़ी की घंटी बजी नींद खुली तो वह सपना देख रहा था।

1. कहानी के आधार पर बताइये कि बच्चे में भाषा संबंधी कौन–कौन सी क्षमताएं है?
2. चित्र कथाओं के साथ भाषा–शिक्षण की कक्षा में क्या–क्या किया जा सकता हैं और इसे करने के क्या फायदें हैं?

2.8 सारांश

इस इकाई में हमने चर्चा की कि सुनने व बोलने का अर्थ केवल यांत्रिक रुप से सुनना या बोलना नहीं है बल्कि इसमें वैचारिक प्रक्रिया भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है। साथ ही यह भी जाना कि बच्चे घर की भाषा में तो इन कौशलों में सहजता से प्रवीण हो जाते हैं परन्तु स्कूल की भाषा में ऐसी प्रवीणता हासिल करने के लिए विशेष प्रयासों की जरूरत होती है। इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण, कक्षा में बातचीत के मौके देना जो कि सीखने का एक अनोखा साधन है और जिसका बच्चों के सामाजिक व्यवहार और व्यक्तित्व पर गहरा असर पड़ता है। साथ ही इस बात पर भी चर्चा हुई कि कक्षा में इन मौकों को उपलब्ध करवाने में शिक्षक की महत्त्वपूर्ण भूमिका है और वह बच्चों को बेहिचक अभिव्यक्ति के लिए प्रोत्साहित कर सकता है।

2.9 स्व–मूल्यांकन

1. कहानियाँ बच्चों की कौनसी क्षमताओं को विकसित करने में सहायक होती हैं?
2. बच्चों को कक्षा में बात करते ही टोक दिया जाता है, क्या यह रवैया आपको सही लगता है? अपना मत दीजिए।
3. आप एक ऐसी कहानी लिखिए जिस पर कक्षा में खूब सारी बातचीत हो सके। जिससे कि बच्चों के सुनने और बोलने की क्षमताओं का विकास हो सके।
4. बच्चों की बातचीत को प्रोत्साहित करने वाला कौनसा तरीका आपको ज्यादा पसंद है और क्यों? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
5. कक्षा में जो बच्चे अक्सर बातचीत में भाग नहीं लेते, उन्हें बातचीत में शामिल करने के लिए आप किस तरह के उपाय करेंगे? कोई दो विस्तार से बताइए।
6. कक्षा 3 के बच्चों के लिए ऐसी चार लाइन की कविता ढूँढ़िए जिसे बच्चे अपने मन से आगे बढ़ा सकें। कक्षा में यह अभ्यास करवाइए।
7. एक बच्चा यदि कक्षा में कहानी सुनाते समय अटक–अटक कर बोले या गलत उच्चारण करें तो आप उसके साथ किस प्रकार से काम करने की योजना बनाएँगे।
8. आपसी बातचीत में मशगूल कुछ बच्चों का छिपकर अवलोकन कीजिए। और देखिए कि वे क्या–क्या बातें करते हैं। उनकी बातचीत को आप कक्षा में कैसे इस्तेमाल करेंगे?
9. किसी कहानी को नाटक रूप में कक्षा– 3 से 5 के बच्चों से करवाइए। इसके लिए बच्चों के साथ मिलकर संवाद बनाइए, फिर बच्चों को उस पर अभिनय करवाइए। अपने अनुभव का विवरण दीजिए।

2.10 संदर्भ

- Agnihotri, R.K. and Bagchi, Tista. eds. (2007), *Construction of Knowledge.* Udaipur: Vidya Bhawan Society.
- Agnihotri, R.K. (1999), *Bachchon ki Bhaashaa Sikhane ki Kshamataa, Bhag-1, 2 (Shaikshik Sandarbh). Bhopal: Eklavya*
- Kumar, Krishna (1996), *Bachchon ki Bhaashaa Or Adhyaapak.* New Delhi: National Book Trust.
- Richards, Jack C. (2008). *Teaching Listening and Speaking: From Theory to Practice.* New York: Cambridge University Press.
- Chafe, Wallace (1985). *Differences between Speaking and Writing.* New York: Cambridge University Press.
- बच्चों की भाषा और अध्यापक–कृष्ण कुमार
- सरल हिन्दी भाषा शिक्षण– डा० सत्यप्रकाश दुबे
- लिखने की शुरूआत– एक संग्रह– एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली
- भाषा और शिक्षा– स्व–अधिगम सामग्री, एस.सी.ई.आर.टी., पटना
- अंकुर भाग–1 एवं 2, एस.सी.ई.आर.टी, पटना
- दिवास्वपन– गिजुभाई बधेका
- बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2008
- कहानी सुनने का हुनर (लेख)– कृष्ण कुमार

इकाई–3
पढ़ने की क्षमता का विकास

3.1 परिचय
3.2 उद्देश्य
3.3 पूर्व अनुभव
3.4 पढ़ने का अर्थ
 3.4.1 शुरुआती पढ़ना क्या है?
 3.4.2 पढ़ना और वाचन में अंतर
3.5 पढ़ने की प्रक्रिया और इसके विभिन्न सोपान
 3.5.1 किताब उलटना–पलटना
 3.5.2 चित्र पठन
 3.5.3 अनुमान लगाते हुए पढ़ना
 3.5.4 लिपि पहचानना
 3.5.5 अर्थ समझना
 3.5.6 प्रतिक्रिया देना
 3.5.7 पढ़कर सार प्रस्तुत करना
3.6 पढ़ने के प्रकार
 3.6.1 मौन पठन
 3.6.2 गहन पठन
 3.6.3 व्यापक पठन
 3.6.4 शब्द और अर्थ का अनुमान लगाते हुए पठन
 3.6.5 स्किप रीडिंग
 3.6.6 स्कैन रीडिंग
3.7 पढ़ना सिखाने के विभिन्न तरीकों की समीक्षात्मक समझ
 3.7.1 वर्णविधि
 3.7.2 शब्द विधि
 3.7.3 वाक्य–शिक्षण विधि
 3.7.4 संदर्भ आधारित उपागम
3.8 सामग्री से समृद्ध कक्षा वातावरण–
 3.8.1 किताबें, किताबें, किताबें –
 3.8.2 पढ़ने का कोना –
3.9 पढ़ना सीखने–सिखाने में बाल साहित्य की भूमिका
3.10 सारांश
3.11 स्व–मूल्यांकन
3.12 संदर्भ

3.1 परिचय

हिन्दी के शिक्षणशास्त्र से संबंधित यह तीसरी इकाई है। दूसरी इकाई, भाषाई क्षमता का विकासः सुनना एवं बोलना के अंतर्गत सुनकर सोचने एवं समझने तथा बोलकर अभिव्यक्त करने की दक्षता के महत्त्व व विकास की प्रक्रिया की जानकारी हमने प्राप्त की। इस इकाई में हम पढ़ने के कौशल के महत्त्व, प्रकार तथा विकास की प्रक्रिया के बारे में जानेंगे।

बच्चों में जन्म के साथ ही सुनने तथा बोलने की क्षमता का विकास स्वाभाविक रूप से शुरू हो जाता है। सुनना एवं बोलना मानव का सहजात गुण है अतः इस हेतु विशेष प्रयास की आवश्यकता नहीं पड़ती। किन्तु पढ़ने एवं लिखने की क्षमता के विकास हेतु प्रायः तमाम विद्यालयीय व्यवस्था की आवश्यकता पड़ती है।

पठन क्षमता का विकास भाषा शिक्षण का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है। शिक्षा के प्रारम्भिक स्तर पर ही पठन क्षमता की नींव पड़ती है। अतः मजबूत नींव के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षक पठन कौशल के महत्त्व, इसके विभिन्न पहलुओं, शिक्षार्थियों के पूर्वज्ञान एवं आवश्यकताओं आदि को भलीभाँतिसमझें और भाषा शिक्षण में दक्षता हासिल करें। यह इकाई पढ़ने का अर्थ, पढ़ने की प्रक्रिया, पढ़ना सिखाने के विभिन्न तरीकों, पठन प्रक्रिया के दौरान बच्चों और शिक्षकों को आनेवाली चुनौतियाँ इत्यादि के बारे में बातें करते हुए इसकी समझ बनाने का प्रयास करती है कि बच्चों को पढ़ना सिखाने हेतु कौन–कौन सी गतिविधियाँ की जा सकती हैं।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप :

- पढ़ने का अर्थ समझ सकेंगे।
- पढ़ने की चरणबद्ध प्रक्रिया को समझ सकेंगे।
- बच्चों को पढ़ना सिखाने के विभिन्न तरीकों को जान पाएँगे।
- पढ़ना सिखाने के विभिन्न तरीकों के बारे में समीक्षात्मक समझ बना सकेंगे।
- पठन के विभिन्न प्रकारों को से परिचित होंगे।
- पढ़ना सीखने–सिखाने में बाल साहित्य की भूमिका को समझेंगे।

3.3 पूर्व अनुभव

आपने एक शिक्षार्थी और एक शिक्षक के रूप में विद्यालय को नजदीक से देखा है। बच्चे–बच्चियों के माता–पिता बड़ी उम्मीदों से उनको स्कूल भेजते हैं। वे भी बड़ी उत्साह के साथ पढ़ने की दहलीज पर कदम रखते हैं। लेकिन पहली कक्षा के अन्त तक आते–आते पढ़ना सीखने की आशा पूरी नहीं हो पाती। कुछ अध्ययनों में ऐसा पाया गया है कि स्कूल में साल भर पढ़ना सिखाया जाता है फिर भी अनेक बच्चे–बच्चियाँ पढ़ना सीख नहीं पाते। पढ़ना सीखना उनके लिए आनन्ददायी हो इसके लिए पढ़ना सीखने की प्रक्रियाकैसी हो इसपर विस्तृत चर्चा प्रस्तुत पाठ में की गई है। अगर बच्चे को पढ़ना सिखाने में सार्थक संदर्भों का उपयोग किया जाए तो पढ़ना सीखना आसान एवं सुखद हो जाताहै।

मनन के प्रश्न –

1. पहली कक्षा के अंत तक भी बच्चे–बच्चियाँ पढ़ना नहीं सीख पाते। आपके विचार से इसके क्या–क्या कारण हो सकते हैं?
2. पढ़ना सीखना बच्चे–बच्चियों के लिए आनन्ददायी होना क्यों जरूरी है?

3.4 पढ़ने का अर्थ

पढ़ने का मतलब आखिर है क्या ? विचारकों एवं भाषाविदों के अनुसारलिखे हुए से अर्थ गढ़ना ही पढ़ना है। पढ़ने का अर्थ है लिखे हुए धारणाओं को गढ़ना और साथ ही विचारों को आपस में जोड़ पाना और उन्हें अपनी स्मृति में रखना। पढ़ना सिर्फ वर्णमाला की पहचान, शब्द तथा वाक्य को बोल भर पाना नहीं है, बल्कि इसके आगे बहुत कुछ और भी है। यानी कि लिखे हुए के अर्थ को समझकर अपना नजरिया बनाना या फिर अपनी निजी समझ विकसित करना है।शब्द के हिज्जे बोलना पढ़ना नहीं है। पढ़ने का अर्थ है, लिखे हुए के साथ संवाद करना, अपने अनुभवों एवं सैद्धान्तिक संरचना के साँचे में लिखे हुए को ढालना ।

पढ़ना एक एकाकी प्रक्रिया नहीं है। इसमें शामिल है अक्षरों की आकृतियाँ और उनसे जुड़ी ध्वनियाँ, वाक्य विन्यास, शब्दों और वाक्यों के अर्थ और साथ ही अनुमान लगाने का कौशल। पढ़ने में महत्त्वपूर्ण है लिखी हुई जानकारियों या संकेतों को उनके अर्थ के साथ ग्रहण करना।

मनन के प्रश्न –

1. आपके विचार से पढ़ने का अर्थ क्या हैं?

2. सिर्फ वर्णमाला की पहचान करना पढ़ना नहीं है। क्या आप इस मत से सहमत हैं?

3.4.1 शुरुआती पढ़ना क्या है?

पहली कक्षा के शिक्षकों में यह मान्यता बैठी हुई है कि पढ़ना सिखाने की शुरुआत वर्ण परिचय से होनी चाहिए। इस मान्यता के चलते वे पहली कक्षा की पाठ्यपुस्तक में शुरुआत से ही मात्रा वाले शब्द देखकर परेशान हो जाते हैं। उन्हें लगता है कि जब बच्चा अक्षरों को ही नहीं पहचानता तो मात्रा वाले शब्दों को कैसे पढ़ेगा।

अंकुर भाग–1 की सोच यह है कि पढ़ना सिखाने का उद्देश्य बच्चों को एक जिज्ञासु एवं नियमित पाठक बनाना है। वर्ण–परिचय से शुरू होनेवाली शिक्षण पद्धति ज्यादातर बच्चों को साक्षर तो बना देता है, परंतु उत्साही पाठक नहीं बना पाती। ऐसा इसलिए क्योंकि अक्षर सार्थक नहीं होते। हर अक्षर की आकृति और ध्वनि को बच्चे की स्मृति में बिठाने के लिए शिक्षकों की काफी समय और श्रम लगता है। वर्णमाला और बारहखड़ी को पूरा करते–करते महीनों बीत जाता है।

पढ़ना सिखाने की शुरुआत सार्थक शब्दों और रुचिकर संदर्भो से करना चाहिए। पढ़ना सीखने की प्रक्रिया की स्वाभाविक शुरुआत बच्चे स्मृति चिह्न बनाकर करते हैं। यदि एक बच्चे को को घर का चित्र और चित्र के नीचे लिखा शब्द 'घर' दिखाते है तो बच्चा चित्र के बिना लिखा गया 'घर' शब्द पहचान लेता है। भले ही वह 'घ' व 'र' जैसे अक्षर नहीं पहचानता हो। एक बार जब बच्चे साथ में दिए गए चित्रों या शिक्षक के साथ बातचीत के सहारे कई शब्द पहचानने लगते है, तब उन शब्दों में आए अक्षरों की ओर ध्यान दिलाया जाता है। मात्राओं को भी बच्चे स्वयं पहचानने लगते है। इस पद्धति में शिक्षक की स्नेही भूमिका बहुत महत्त्व रखती है।

शिक्षक पढ़ना सिखाने के लिए तरह–तरह के तरीके इस्तेमाल करते है, जैसे–फ्लैश कार्ड, चार्ट, रबर के अक्षरों जैसी प्रचलित सामग्री का उपयोग। पढ़ने की प्रक्रिया में कई क्रियाएँ शामिल हैं। पढ़ते समय भाषा के उपयोग से जुड़े तीन तरह के संकेत सामने आते हैं –

- अक्षरो की आकृतियाँ और उनसे जुड़ी ध्वनियाँ।

- वाक्य विन्यास।
- शब्दों के अर्थ।

पढ़ने में अनुमान लगाने के कौशल का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस कौशल के विन्यास में कहानी और कविताएँ आश्चर्यजनक योगदान करती है। नियमित रूप से इन्हें सुनने से बच्चे भाषा की बुनियादी संरचनाएँ ग्रहण कर लेते है। अंकुर में बच्चों के लिए रोचक कहानियाँ और कविताएँ दी गई है। बच्चों को चारों ओर गोल घेरे में बैठाकर पुस्तक बीच में रखकर इन्हें सुनाएँ।

कहानियों को स्वर में उतार–चढ़ाव एवं हाव–भाव के साथ बच्चों को सुनाने से वे कहानी में खो जाते हैं। पुस्तक मे दी गई कहानियों के अलावे अन्य कहानियाँ व लोककथाएँ सुनानी चाहिए। कहानी सुनते समय बच्चे अनुमान लगाते है कि आगे क्या होगा। अनुमान का सही सिद्ध होना बच्चे को आनंदित तो करता ही है, उनका विश्वास भी बढ़ाता है। यही विश्वास पढ़ने की क्षमता के विकास में सहायक होता है। कहानी सुनते समय नन्हें बच्चें जो अभी साक्षर नहीं बने है, अपनी वास्तविक दुनिया से कही बड़ी काल्पनिक दुनिया बनाते हैं। इसलिए बच्चों को प्रतिदिन कहानियाँ सुनाएँ। पहले से सुनी कविता–कहानी बच्चे अनुमान लगाते–लगाते पढ़ना सीख जाते है। वे जल्दी पढ़ भी लेते है। अक्षर, शब्द एवं वाक्य की पहचान सहज हो जाती है। वास्तव में पढ़ना सीखने–सिखाने का सबसे अच्छा तरीका यही है कि बच्चे वही पढ़े जो उनके लिए सार्थक हो। बाल–कहानियाँ उनके लिए ऐसी ही एक सार्थक सामग्री है क्योंकि वे उनके लिए एक परिचित, रोचक एवं आनन्ददायीदुनिया रचती है।

भाषा सीखने के साधन के रूप में कविता विशेष रूप से उपयोगी होती है क्योंकि कविता आसानी से स्मृति का हिस्सा हो जाती है। बार–बार सुनने, मजा लेने और दोहराने से कविता अपने आप धीरे–धीरे स्मृति में आ जाती है। कविताओं को गाकर सुनाएँ और बच्चे साथ में गाएँ। बाद में जब वे उसे पुस्तक से पढेंगे तो शब्दों का सरलता से अनुमान लगा लेंगे। पुस्तक में दी गई रचनाओं के अतिरिक्त रचनाएँ भी बच्चों को सुनाएँ। शिक्षक के लिए जरूरी है कि अच्छी कहानी, कविताओं का चयन करें।

पढ़ना सिखाने के लिए सबसे अच्छी सामग्री शिक्षक ही बना सकते हैं। रोचक कहानियाँ, कविताएँ, गीतों एवं खेल–गीतों का संग्रह बना सकते है। पढ़ने में बच्चे की रुचि शिक्षक ही जगा सकते हैं। इसमें शिक्षक का स्नेहिल व्यवहार एवं पठन कौशल विकसित करने के लिए चुनी गई सामग्री के उपयोग की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

इस प्रकार रोचक कहानियों, कविताओं और तस्वीरों पर बच्चों से बातचीत करके उनमें पढ़ने की इच्छा जगाकर उन्हें पढ़ना सिखाया जा सकता है। जब बच्चा अपनी जिंदगी और आसपास हो रही चीजों के बारे में आत्मविश्वास से बातें करने लगे तो समझिए कि वह लिखना सीखने के लिए तैयार है। बच्चे को सुनाई गई कहानी कविताओं तथा उस दौरान दिखाए गए चित्रों के इस्तेमाल के दौरान की गई गतिविधियों से उपजी बातचीत से प्रत्येक बच्चे के लिए एक शब्द या वाक्य चुनकर बच्चे की कॉपी/श्यामपट पर साफ–साफ लिख दे। फिर उसे पढ़कर सुनाएँ। इसके बाद बच्चे से कहें कि वह आपकी लिखावट को उतारे या उसी पर लिखे। रोज जब आप बच्चे को एक नया शब्द या वाक्य लिख कर दें तो पिछली सामग्री अवश्य दुहरायें। बच्चे से कहें कि पिछले शब्दों या वाक्यों को पढ़कर सुनाएँ और जब उसे दिक्कत हो तो आप पढ़कर सुनाइए । साथ ही जब रोज नया वाक्य लिखने और पुराने वाक्य सुनने के लिए बच्चे के पास बैठें तो वाक्यों को थोड़ा विस्तार देकर उनपर बातचीत करना न भूलें। आप जब बच्चे की लिखाई रोज देखेंगे तो पाएँगे कि अलग–अलग अक्षरों में उसे एक बराबर कठिनाई नहीं होती। कुछ अक्षर ज्यादा अभ्यास माँगते है और उनका अभ्यास जितनी बार चाहे कराया जा सकता है। लक्ष्य यह है कि जो भी भाषा आप सिखा रहे हैं उसके वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर को लिखने और पहचानने में बच्चा प्रवीण हो जाए।

3.4.2 पढ़ना और वाचन में अंतर

बहुधा यह मान लिया जाता है कि लिखी या छपी हुई शब्दावली को उच्चरित करने की क्षमता ही पठन है। यह धारणा सही नहीं है। इसे हम वाचन कहते हैं, पठन नही। वाचन शव्द 'वाक्' धातु से बना है, जिसका अर्थ होता है– शब्द, वाणी या कथन। वाचन में शब्दों के उच्चारण की प्रधानता होती है, जबकि पठन में अर्थग्रहण पर बल होता है। पठन एक सोदेश्य, सार्थक तथा चिंतन प्रधान क्रिया है। पाठक लिखी या छपी हुई शब्दावली का उच्चारण करे या न करे किन्तु अर्थग्रहण अवश्य करता है तथा उसका मूल्यांकन भी करता है। पढ़ना और वाचन में अंतर को इस उदाहरण से समझा जा सकता है दूरदर्शन या आकाशवाणी पर समाचार प्रस्तुत करनेवालों का उद्देश्य श्रोताओं को समाचार स्पष्टतः सुनाना होता है। अतः उनके द्वारा शब्दों के उच्चारण पर विशेष ध्यान दिया जाता है। वे वस्तुतः वाचन करते हैं अतः उन्हें 'समाचारवाचक' कहा जाता है।वहीं समाचारपत्र पढ़नेवाला कोई सामान्य व्यक्ति समाचार पढ़कर उसका अर्थग्रहण करता है, अनुमान लगाता है तथा उसका मूल्यांकन भी करता है। वह वास्तव में पठन कार्य करता है और समाचारपत्र का 'पाठक' कहा जाता है। विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में कुछ स्तम्भ होते हैं जो उनके पढ़नेवालों को पाठक कहकर संबोधित करते हैं, यथा– पाठकों के पत्र, पाठकीय, पाठकों की समस्याएँ, पाठकों के विचार आदि।

3.5 पढ़ने की प्रक्रिया और इसके विभिन्न सोपान

पढ़ने की शुरुआत से एक उत्तम पाठक बनने तक पढ़ने की एक लम्बी प्रक्रिया है और इसके विभिन्न सोपान हैं। उनपर चर्चा से पूर्व निम्नलिखित उद्धरण पर विचार करें–

हाल में एक शिक्षिका मुझे हासिए पर रहने वाले बच्चों के साथ अपने काम के बारे में बता रही थी जो या तो पढ़ नहीं पाते थे या पढ़ते नहीं थे। बात–बात में उन्होंने कहा, ''हमारे पास कक्षा में ढेरों किताबें है और सभी उसको इस्तेमाल करते है। पर वे उसे पढ़ते नहीं है। वे सिर्फ पन्नें पलटते हैं और उन्हें देखते हैं। मैं कैसे पढ़ने में उनकी रुचि जगाऊँ ? मैने एक–दो बातें बताई जो शायद उस समय उन्हें ठीक लगी। मुझे बाद में ये बात समझ में आई कि इन बच्चों ने शायद पहले कभी कोई किताब नहीं देखी। उनके लिए सरकारी तौर पर किताबें को देखना, पढ़ने की एक लाजमी और आवश्यक पहली सीढ़ी थी। इससे पहले कि वे बच्चे सोचते कि कोई शब्द या शब्दों का समूह क्या कहता है, उनके लिए शब्दों की सूरत से परिचित हो जाना बेहद जरूरी है। ठीक उसी तरह जिस प्रकार एक बच्चा जो बोलना सीख रहा है उसके लिए बात करने की आवाज से परिचित होना बहुत जरूरी हे। अधिकांश बच्चे जब वे पढ़ना शुरू करते है, वर्णो को देखते और उनपर गौर करते है। यही वे अनुभव है जिनकी खानापूर्ति वंचित बच्चों को करनी है।

(जॉन हॉल्ट साभार पढ़ने की समझ, NCERT)

3.5.1 किताब उलटना–पलटना

बच्चों द्वारा किताबों का उलटना–पलटना पढ़ने की प्रक्रिया का प्रथम सोपान है। यह बच्चों में किताबों के प्रति जिज्ञासा एवं पढ़ने की इच्छा को प्रदर्शित करता है। जब कोई बच्चा ऐसा कर रहा होता है तो पूछे जाने पर उसका जवाब यही होता है कि वह किताब को पढ़ रहा है। साथ ही वह इसके संबंध में पूछे गए कुछ प्रश्नों का उत्तर भी दे पाता है। बच्चों के पहुँच में ढरों सारी ऐसी रंग–बिरंगी किताबों का होना उनमें किताबों से लगाव उत्पन्न करेगा। किताबों से लगाव होना पढ़ने की नींव है।

3.5.2 चित्र पठन

किताबों को उलटने–पलटने के क्रम में किताबों के रंग–बिरंगे चित्र बच्चों को सर्वाधिक आकर्षित करते हैं। बच्चे चित्रों को ध्यान से देखते हैं और चित्र के बारे में मन में उठ रहे विभिन्न सवालों –क्या, कौन, कहाँ आदि का जवाब अपने पूर्वज्ञान के आधार पर ढूँढ़ने में लग जाते हैं। चित्र के साथ बच्चों का यह कार्य–कलाप 'चित्र पठन' कहा जाता है। बच्चों से चित्र पठन करवाते हुए उनसे दिए गए चित्र के संबंध में बातचीतकर उनके सुनने, बोलने और लिखने के कौशलों का विकास किया जा सकता है। चित्र पठन करने से बच्चों में कल्पनाशीलता का विकास होता है। पहली कक्षा की हिन्दी की पाठ्यपुस्तक 'अंकुर' भाग–1 में चित्र पठन के पर्याप्त अवसर दिए गए हैं। पाठ–1 'हमारा गाँव', पाठ–2 'हमारा शहर', पाठ–4 'आओ खेलें खेल' तथा पाठ–10 'पटना का चिड़ियाघर' चित्रपठन पर ही आधारित पाठ हैं। इनके अतिरिक्त भी पाठ्यपुस्तक में चित्र पठन के अनेक अवसर दिए गए हैं।

3.5.3 अनुमान लगाते हुए पढ़ना

चित्र पठन करने क्रम में बच्चे चित्र के साथ दिए गए गद्यांश को भी पढ़ने का अभिनय करते हैं। उनके द्वारा किए जानेवाले ऐसे पठन प्रायः अनुमान आधारित होते हैं। वर्ग–1 में पाठ्यपुस्तक की बाल कविता को गाने के साथ–साथ कविता की पंक्तियों पर उंगली फिराने की क्रिया भी प्रायः अनुमान आधारित ही होती है। शब्दों के उच्चारण एवं पंक्तियों पर उंगली की स्थिति में साहचर्य का अभाव होता है। कभी–कभी ऐसे शब्दों का भी उच्चारण हो जाता है जो वाक्य में कहीं है ही नहीं।

किन्तु उच्चत्तर स्तर पर अनुमान लगाने का कौशल पढ़ने की कुंजी है। एक दक्ष पाठक एक शब्द के सारे अक्षरों या एक वाक्य के सारे शब्दों को नहीं देखता है बल्कि पढ़ते समय उसकी आँखें मुद्रित सामग्री के एक छोटे अंश पर ही गौर करती है। शेष भाग वह अनुमान के आधार पर ग्रहण कर लेता है। अनुमान का आधार होता है–अक्षरों की आकृतियाँ, शब्द एवं उनके अर्थ व संयोजन और पाठक का पूर्वज्ञान। अनुमान लगाते हुए पढ़ना, पढ़ने की एक महत्त्वपूर्ण एवं जायज विधि है।

3.5.4 लिपि पहचानना

पठन प्रक्रिया के इस सोपान में शब्द के लिपियों को पहचानना, उससे जुड़ी ध्वनियों को उच्चारण एवं उसके मानसिक बिंब की रचना करना सम्मिलित है। शब्द के रूप, ध्वनि एवं अर्थ तीनों मिलकर हमारे मस्तिष्क में शब्द का एकचित्र या बिंब का निर्माण करते हैं। मस्तिष्क में शब्द से संबंधित चित्र या बिंब का निर्माण होना हमारे पूर्व अनुभव पर निर्भर करता है। एक दक्ष पाठक शब्द को संपूर्णता में देखता है। इससे मस्तिष्क में उसके चित्र या बिंब का निर्माण अपेक्षाकृत शीघ्रता से होता है। पठन प्रक्रिया के इस सोपान में भी अनुमान क आधार पर मस्तिष्क में शब्दों के चित्रों का निर्माणकर पठन में गतिशीलता लाई जाती है।

मस्तिष्क में शब्दों के चित्रों के निर्माण में दक्षता प्राप्त कर लेने के उपरांत पाठक शब्दों को अक्षरों में तोड़कर उन लिपि चिह्नों की भी पहचान सुगमतापूर्वक कर सकता है।

3.5.5 अर्थ समझना

अर्थ समझना पढ़ने की अनिवार्य शर्त है। इसके बिना पढ़ना केवल 'वाचन' है। पढ़ने का अर्थ है– मुद्रित सामग्री से मानसिक बिंबों का निर्माण करने के बाद विचारों के साथ साहचर्य स्थापित कर अपना नजरिया बनाना, मुद्रित सामग्री के साथ संवादकर अपने अनुभवों एवं सैद्धांतिक संरचना के साँचे में उसे ढालना। इस प्रकार पठित सामग्री के अर्थग्रहण का आशय उसके निहितार्थ को

समझना है। अर्थग्रहण की दक्षता पाठक के पूर्व अनुभव पर निर्भर करती है। साथ ही यह पाठक के चिन्तन–मनन की भी अपेक्षा रखती है। पठन के क्रम में अर्थग्रहण के साथ–साथ व्याख्या एवं विश्लेषण भी चलती रहती है ताकि पाठक वहीं पहुँचे जहाँ लेखक उसे ले जाना चाहता है।

3.5.6 प्रतिक्रिया देना

मानव चिंतनशील प्राणी है। अतः यह स्वाभाविक है कि मुद्रित सामग्री के अर्थग्रहण के उपरांत अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करे। एक अच्छा पाठक पठन के साथ–साथ विभिन्न दृष्टिकोणों से पठित सामग्री का मूल्यांकन करते हुए उसके प्रति अपना विचार प्रकट करता जाता है। साथ ही साथ उसके मन में कुछ भावनाएँ भी उत्पन्न होतीं हैं जिसे वह अपनी हाव–भाव से प्रदर्शित करता है। किसी साहित्य को पढ़कर उसके रस का अनुभव एक अच्छा पाठक ही कर सकता है और इसके उपरांत वह प्रतिक्रिया भी अवश्य देगा। प्रतिक्रिया से पता चलता है कि पाठक द्वारा किस स्तर तक अर्थग्रहण किया गया है।

एक शिक्षक को बच्चों को प्रतिक्रिया देने हेतु प्रेरित करना चाहिए उनकी प्रतिक्रिया का स्वागत करें। उदाहरणस्वरूप, पहली कक्षा की हिन्दी की पाठ्यपुस्तक 'अंकुर' भाग–1 के पाठ–15 'शेर और सियार' बच्चों को पढ़ने को कहा। पढ़ने के बाद बच्चों को उसी कहानी को संक्षेप में सुनाने को कहा साथ ही कहानी के घटनाओं के संबंध में कुछ चर्चा भी की। बच्चों ने कहानी को अपने–अपने अंदाज में सुनाया। सुनाने के क्रम में उन्होंने अपने रुचि के एवं दैनिक जीवन से जुड़ाववाले बिन्दुओं पर विशेष चर्चा की। किसी ने अपने झूला झूलने के अनुभव को बताया तो किसी ने खेल में आपस में होनेवाली बेईमानी की चर्चा की। अधिकांश बच्चों ने अपने दोस्तों पर बेईमानी करने का इल्जाम लगाया तो कुछ बच्चों ने बेईमानी करने की बात को स्वीकार करने का साहस भी दिखाया। एक बच्चे ने तो अपने–आपको ग्रील गेट में फँस जाने की घटना को भी विस्तारपूर्वक सुनाया।

3.5.7 पढ़कर सार प्रस्तुत करना

किसी मुद्रित सामग्री पढ़कर सार प्रस्तुत करना पठन प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण सोपान है। जब किसी मुद्रित सामग्री के पठन के फलस्वरूप उसमें निहित जिस भाव, आदर्श अथवा मूल्य से हम सहमत हों उसे आत्मसात कर लें, पठन का उद्देश्य तभी पूरा माना जाता है। एक पाठक किसी मुद्रित सामग्री को पढ़कर उसके विषयवस्तु को लेखक की भावना के अनुरूप ग्रहणकर लेता है एवं उसकी भावाभिव्यक्ति संक्षिप्त रूप से कर सकने में समर्थ होता है तो पठन को सफल एवं पाठक को सुविज्ञ समझा जाता है।

एक शिक्षक को बच्चों को पढ़ी गई कविता एवं कहानियों को संक्षिप्त रूप में अपनी भाषा में अभिव्यक्त करने हेतु प्रेरित करना चाहिए। इससे बच्चों में गहन पठन के क्षमता का विकास होगा।

3.6 पढ़ने के प्रकार

3.6.1मौन पठन

मौन पठन, पठन कौशल सीखने का अंतिम चरण है। लिखित सामग्री को मन ही मन में शांतिपूर्वक बिना उच्चारण किए पढ़ने को मौन पठन कहते है।

मौन पठन के मुख्य रूप से दो प्रयोजन है– पाठ्य सामग्री में निहित विचारों को आत्मसात् करना तथा पठन–गति में तीव्रता लाना। मौन पठन के द्वारा हम गहराई से अर्थग्रहण करते हुए चिन्तन–मनन एवं तर्क शक्ति का विकास करते हैं। उस समय हमारा सारा ध्यान पाठ्यवस्तु में निहित विचार पर ही होता है। अवकाश के क्षणों में मनोरंजक सामग्री को पढ़कर आनंद लेने में मौन पठन बहुत सहायक होता है। पुस्तकालय तथा सार्वजनिक स्थलों पर मौन पठन का महत्त्व और भी बढ़ जाता है।

मौन पठन के लाभों को देखते हुए शिक्षक के नाते आपको अपने शिक्षार्थियों को यथाशीध्र मौन पठन में प्रवर्तित करना चाहिए। तीसरी कक्षा के अंत तक आप इसे सरलता से आरंभ करा सकते है।

फुसफुसाते हुए बोलकर पढ़ना मौन पठ़न नहीं है। अतः आपको शब्दों को फुसफुसाने या बुदबुदाने की प्रकृति पर सावधानीपूर्वक रोक लगाते हुए मौन पठन का पर्याप्त अभ्यास कराना चाहिए।

मौन पठन का एक उद्देश्य गति के साथ पढ़ने की क्षमता का विकास करना है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने का एक तरीका यह है कि कक्षा का कोई एक अनुच्छेद या एक से अधिक अनुच्छेद एक निश्चित समय के लिए पढ़ने को दिया जाए। जब किसी अनुच्छेद के मौन पठन का समय समाप्त हो जाए तो आप प्रश्नों के माध्यम से यह जाँच कर सकते है कि शिक्षार्थियों ने क्या सीखा ? मौन पठन के परीक्षण के लिए शिक्षार्थियों से अनुच्छेद का सार या केन्द्रीय भाव पूछा जा सकता है। मौन पठन के समय कक्षा में पूर्ण शांति होनी चाहिए। मौन पठन के विकास और परीक्षण का अन्य तरीका यह है कि पढ़ने से पहले शिक्षार्थियों से एक या दो दिशा–निर्देशक प्रश्न पूछे जाएँ। इससे शिक्षार्थियों को पढ़ने के प्रयोजन का बोध हो जाएगा और अनुच्छेद को पढ़ते समय यह अहसास रहेगा कि किन बातों पर ध्यान देना है। मौन पठन में उच्चारण अपेक्षित न होने के कारण विरामों की संख्या कम हो जाती है और पठन की गति बढ़ जाती है।

3.6.2गहन पठन

गहन पठन के द्वारा हम पाठ्य साम्रगी के भाव, विचार, भाषा, शैली तथा कलात्मक सौंदर्य की व्याख्या करते हुए उन्हें आत्मसात् करते हैं। गहन पठन द्वारा शिक्षार्थी–

पाठ्यवस्तु की भाषा में प्रयुक्त शब्द, पदबंध, वाक्यांश के विशिष्ट अर्थ तथा प्रयोग से परिचित होता है, पाठ में निहित विचार या भाव का सूक्ष्म विश्लेषण करता है, घटनाओं के औचित्य तथा लेखक के मंतव्य को समझकर उनका मूल्यांकन करता है, अपने पूर्व अनुभवों के आधार पर प्रतिक्रिया करते हुए अपनी स्वतंत्र विचारधारा का निर्माण करता है।

वस्तुतः गहन पठन करते समय शिक्षार्थी भाषा के प्रत्येक अंग का गहन अध्ययन करता है, विचार की एक–एक बारीकी का अवलोकन करता है, भाव की प्रत्येक लहर में डूबता–उतराता है। 'पुष्प की अभिलाषा' कविता का गहन पठन करनेवाला पाठक कविता में व्यक्त फूल की प्रत्येक चाह को गहराई से समझने का प्रयास करेंगे, जैसे– 'पुष्प किसी सुन्दरी के गले का हार क्यों नहीं बनना चाहता ? वह सम्राटों के शव पर डाला जाना क्यों नहीं चाहता? वह देवताओं के सिर पर चढ़कर गर्व का अनुभव भी क्यों नहीं करना चाहता ? आखिर वह चाहता क्या है? वह देशभक्त वीरों एवं शहीदों को इतना सम्मान क्यों देना चाहता है? आदि।

गहन पठन करनेवाला एक पाठक ऐसे तमाम प्रश्नों के उत्तर तक पहुँचने के साथ–साथ उपर्युक्त सभी पात्रों की कल्पना करेगा एवं बिम्बों को भी समझेगा। वह उन परिस्थितियों व दृश्यों की भी कल्पना करेगाजिनमें उन पात्रों के साथ पुष्प के उपयोग की चर्चा की गई है। साथ ही उन सभी परिस्थितियों के तुलनात्मक अध्ययन के उपरान्त देशभक्ति के भावना से ओत–प्रोत वीरों एवं शहीदों को सम्मान देने के लिए पुष्प की भी प्रशंसा करेगा। उसमें देशभक्ति की भावना का भी संचार होगा। गहन पठन के फलस्वरूप ही कविता के उद्देश्यों की पूर्ति होती है।

3.6.3व्यापक पठन

व्यापक पठन को विस्तृत अध्ययन भी कहते है। इसका प्रयोजन है – शब्दावली विस्तार, ज्ञान की परिधि की वृद्धि, पठन रुचि का विकास, मनोरंजन तथा तीव्र गति से पढ़ने की दक्षता का विकास।

भाषा पर अधिकार करने तथा जीवन और जगत के प्रति दृष्टिकोण को व्यापक बनाने के लिए व्यापक पठन आवश्यक है। इसके द्वारा हमारे मौन पठन की दक्षता बढ़ती है जिससे स्वाध्याय की प्रवृत्ति

का विकास होता है। अध्ययन में शिक्षार्थी को दक्ष बनाने के लिए व्यापक पठन का अभ्यास सहायक होता है।

3.6.4शब्द और अर्थ का अनुमान लगाते हुए पठन

यह पढ़ने की प्रक्रिया का हिस्सा है। बच्चा प्रिंट के प्रति सजग एवं उत्सुक होता है और अनुमान लगाते हुए पढ़ने का प्रयास करता है। साथ ही अर्थ प्राप्त करने की कोशिश करता है। यह वह पठन है जहाँ बच्चे अक्षरों की एकाकी पहचान भले ही न कर पाएँ लेकिन चित्र/शब्द आदि से संबंध जोड़ते हुए अपने स्तर पर अर्थ का निर्माण करते है। यहाँ पर यह बात अत्यंत महत्त्वपूर्ण है कि पढ़ने का संबंध केवल शब्दों या वाक्यों से नहीं होता बल्कि चित्र आदि को पढ़ना भी इसमें शामिल होता है, क्योंकि यह अंततः अर्थ से जुड़ता है।

3.6.5स्किप रीडिंग

जब कोई पाठक पढ़ रहा होता है तब वह किसी वाक्य के सभी शब्दों को नहीं पढ़ता है। वह वाक्य के एक–दो शब्दों को पढ़कर पूरे वाक्य को समझ लेता है। इस प्रकार वह पढ़ते हुए आगे बढ़ता है। इस प्रकार का रीडिंग 'स्कीप रिडींग' कहलाता है।

उपन्यास, नाटक एवं बड़ी कहानी आदि पढ़ते समय पाठक स्किप रीडिंग करते है। वह सरसरी निगाहों से शब्दों को देखते हुए आगे बढ़ जाते है। स्किप रीडिंग का उद्देश्य उस लिखित सामग्रीका सामान्य अर्थ प्राप्त करना होता है।

3.6.6स्कैन रीडिंग

किसी सूचनापट, शादी–कार्ड या इसी तरह के अन्य लिखित सामग्री पर अंकित सूचना को सरसरी निगाहों से पढ़ने की क्रिया स्कैन रीडिंग कहलाता है। इसमें सम्पूर्ण लिखित सामग्री को न पढ़कर महत्त्वपूर्ण सूचनाओं पर विषेश नजर दौड़ाई जाती है।

3.7 पढ़ना सिखाने के विभिन्न तरीकों की समीक्षात्मक समझ

पढ़ना सिखाने के लिए अनेक विधियाँ है जिनमें से वर्णविधि, शब्दविधि, वाक्यविधि इत्यादि प्रमुख है। कुछ विद्वानों के अनुसार बच्चे को अक्षरों का ज्ञान वाक्यों से आरम्भ करना उचित है, परन्तु कुछ के अनुसार शब्दों से किया जाए। पढ़ना सिखाने के निम्नलिखित विधियाँ प्रचलित हैः–

3.7.1 वर्णविधि

अनिता प्रा० वि० काजीपुर की शिक्षिका है। वह अपने विद्यालय में कई दिनों से वर्णमाला सिखा रही है। वह श्यामपट पर क, ख, ग, घ, एवं ङ लिख देती है एवं बच्चों को दुहराने व देखकर लिखने के लिए कहती है। अत्यधिक प्रयास के बावजूद अनेक बच्चे–बच्चियाँ सीख नहीं पा रहें है। अनिता परेशान है कि इतना मेहनत करने पर भी परिणाम उत्साहवर्द्धक नहीं है।

ऐसा क्यों आइए इसपर विचार करें–

यह एक अत्यत प्राचीन विधि है। इसमें बच्चे क्रमानुसार वर्णमाला के भिन्न–भिन्न अक्षरों का ज्ञान प्राप्त करते है। जब बच्चें वर्ण का ज्ञान भली प्रकार कर लेते है, तब उन्हे शब्द बनाने के लिए सिखाया जाता है। उदाहरण के लिए ट, मा, ट, र = टमाटर ।

इसी प्रकार प, न, घ, ट = पनघट । कुछ विद्वान इस विधि को अमनोवैज्ञानिक बताते है क्योंकि इसमें अज्ञात से ज्ञात को बताया जाता है। बच्चे वर्ण को नहीं जानते परन्तु वर्ण से बननेवाले शब्दों से परिचित होते हैं। चूँकि वर्ण का स्वतंत्र रूप से कोई अर्थ नहीं होता है। इसलिए यह बच्चे के लिए अरुचिकर होता है। बच्चे एकदम वर्णमाला को रटने में घबराते हैं क्योंकि रटना एक नीरस कार्य है। यदि वह मनोयोग से क, ख, ग, घ, ङ जैसे वर्ण सीख लेता है तो भी इससे बहुत कम सार्थक शब्द बन पाते है।

मनन के प्रश्न –

1. अनिता को अपेक्षित परिणाम क्यों नहीं मिल पा रहा है?

2. आपके विचार से अनिता का पढ़ना सिखाने का तरीका कैसा है?

3. आप अनिता के जगह होते तो क्या करते?

3.7.2शब्द विधि

जीतेन्द्र कन्या प्रा० वि० मई के शिक्षक हैं। वह वर्ग 1 के नामित शिक्षक हैं। भाषा की कक्षा में वे पूरे मनोयोग से पढ़ा रहे हैं। बच्चों को सबसे पहले चित्र दिखाकर पहचान करवाते हैं। चित्र के बाद उससे संबंधित शब्द कार्ड दिखाते हैं। चित्र एवं उससे संबंधित शब्द से परिचय कराने के बाद शब्द में आए अक्षरों को अलग–अलग कर बताते हैं। पुनः उन अक्षरों से बच्चों को उलट–पलटकर शब्द बनाने के लिए कहते हैं। उनके पढ़ाने का तरीका इस प्रकार है–

कमल

क+म+ल

आइए इनके तरीके पर विचार करते हैं –

शब्द विधि में प्रारम्भ में ही बच्चे को शब्दों से परिचय कराया जाता है। शब्दों का ज्ञान कराने के लिए परिचित चित्रों को माध्यम बनाया जाता है। यह विधि बड़ी ही आकर्षक और रोचक है। अनेकों बार उस चित्र और उससे संबंधित शब्द को देखने के बाद उस शब्द का चित्र बच्चे के मानस पटल पर गहरा अंकित हो जाता है। जब–जब वह उस वस्तु का चित्र स्मरण करता है, तब–तब उसे वह शब्द भी चित्र की तरह याद आ जाता है। चूँकि इस विधि में ज्ञात की सहायता से अज्ञात को बताया जाता है अतः इस विधि को मनोवैज्ञानिक माना जाता है।

इस शब्द चित्र में कई वर्ण होते है, जैसे– 'शलगम' में 'श',ल, ग तथा म । इन सभी वर्णो से वह भली भाँति परिचित हो जाता है। उदाहरण के लिए– बच्चे को कलम का चित्र दिखाया जाएगा और उन्हें कलम पढ़ना सिखाकर 'क, ल, म' अक्षरों का ज्ञान कराया जाएगा। शब्द संदर्भ से जुड़े होते है, अर्थपूर्ण होते है। इस कारण बच्चे सीख जाते हैं। सीखे हुए वणों से नए–नए शब्द बनवाए जाते हैं, जैसे– कल, मल, कह आदि।

मनन के प्रश्न –

1. आपकी दृष्टि में जीतेन्द्र का तरीका कैसा है? तर्कपूर्ण उत्तर दें।

2. जीतेन्द्र एवं अनिता के तरीकों में किसका पढ़ना सिखाने का तरीका अच्छा है और क्यों ?

3.7.3 वाक्य–शिक्षण विधि

राकेश म० वि० मकनपुर के शिक्षक हैं। वे अपनी कक्षा में बच्चों को जब पढ़ना सिखाते हैं तब बच्चों के द्वारा बोले गए वाक्य को श्यामपट पर लिख देते हैं। जैसे–

घर चल। गगन घर चल। गगन घर चलकर पढ़।

वाक्य अंकित करने के बाद वह खुद बोलते हैं एवं बच्चों को दुहराने के लिए कहते हैं। इसके बाद कोई एक बच्चा आकर वाक्य को बोलता है और अन्य बच्चे दुहराते हैं। धीरे–धीरे बच्चे उस वाक्य कों पढ़ने लगते हैं एवं उनके अक्षरों की पहचान करने लगते हैं। राकेश के प्रयास का अच्छा परिणाम मिलता है।

आइए विचार करें राकेश के तरीके के बारे में–

इस विधि में पढ़ाने का क्रम वाक्य से आरम्भ किया जाता है। मनोवैज्ञानिकों की यह मान्यता है कि बच्चे अपने मनोभावों को न तो अक्षरों द्वारा प्रकट कर सकते हैं और न वह अक्षरों को जोड़–तोड़ कर शब्दों का निर्माण ही कर सकते हैं। बच्चे अपने मनोभावों को वाक्यों में ही प्रकट कर सकते हैं। अतः इस विधि के समर्थकों के अनुसार पढ़ना सिखाने के लिए वाक्य शिक्षण विधि को ही आधार बनाना चाहिए । इस विधि में सार्थक वाक्यों के माध्यम से ही पढ़ना सिखाया जाता है। वाक्य संदर्भ से जुड़कर अर्थ प्रदान करते है। जैसे, **लाठी** का हम विभिन्न संदर्भों में अलग–अलग अर्थ पाते हैं–

वह उसके बुढ़ापे की **लाठी** है।

वह**लाठी** टेककर जाता है।

जिसकी**लाठी** उसकी भैंस।

पहले वाक्य में लाठी का अभिप्राय सहारा, दूसरे में उपकरण एवं तीसरे में सामर्थ्य के रूप में है।

मनन के प्रश्न –

1. वाक्य–शिक्षण विधि की खूबियाँ/कमियाँ बताएँ।

2. वाक्य–शिक्षण विधि, शब्द–शिक्षण विधि से किस प्रकार भिन्न है?

3.7.4संदर्भ आधारित शिक्षण विधि–

पढ़ना सिखाने के लिए जब परिचित संदर्भ का सहारा लिया जाता है तो उसे संदर्भ आधारित शिक्षण विधि कहा जाता है। अलग–अलग क्षेत्र विशेष के लिए परिचित संदर्भ अलग–अलग हो सकते हैं। साथ ही अलग–अलग उम्र के शिक्षार्थियों के लिए रोचक संदर्भ भी अलग–अलग हो सकते हैं।

चालाक चीकू

चार बिल्लियों ने मिलकर चीकू चूहे को पकड़ा।
मैं खाउँगी, मैं खाउँगी,हुआ सभी में झगड़ा ।।

बोला चीकू अरे मौसियों ! आपस में मत झगड़ों।
दूर नीम का पेड़ खड़ा है, जाकर उसको पकड़ो।।

जो भी उसको छूकर सबसे पहले आ जाएगी।
बिना किसी को हिस्सा बाँटे वही मुझे खा जाएगी।।

मूर्ख बिल्लियाँ समझ न पायीं, सरपट दौड़ लगाई।
बिल केअन्दर भागा चीकू, अपनी जान बचाई।।

हिन्दी की कक्षा 1 की पाठ्यपुस्तक अंकुर भाग–1 को दिलीप अपने कक्षा में बच्चों को पढ़ाते हैं। सबसे पहले वह अपने वर्ग के बच्चों के साथ सस्वर गायन करते हैं। बच्चे आनन्दित होकर कविता की पंक्तियों को गाते हैं। जिस बच्चे को कविता की पंक्तियाँ याद हैं वह आगे–आगे गाता है, अन्य बच्चे उसे दुहराते हैं। तत्पश्चात शिक्षक पाठमें आए परिचित संदर्भों से जुड़े हुए कई सवाल, जैसे–

- चित्र में दिखनेवाले जानवरों के बारे में बताओ–
  (क) चूहा (ख) बिल्ली
- बिल्ली क्या–क्या खाती है?
- नीम का पेड़ हमारे किस काम आता है ?
- चूहा क्या–क्या खाता है ?
- चूहे को हमलोग कहाँ–कहाँ देखते हैं ?
- बिल्ली क्या–क्या खाती है ?

इत्यादि के माध्यम से बातचीत करते हैं। बच्चे खुलकर अपनी बातों को रखते हैं। धीरे–धीरे बच्चे अनुमान के आधार पर पढ़ने लगते हैं। इसके बाद शिक्षक चित्र एवं उससे संबंधित शब्द कार्ड के माध्यम से पहचान करवाते हैं। धीरे–धीरे बच्चे अनुमान के आधार पर पढ़ने लगते हैं। इस तरह बच्चे पढ़ना सीख जाते हैं।

आइए दिलीप के द्वारा अपनाए गए तरीके पर विचार करते हैं– यहाँ दिलीप के द्वारा कक्षा 1 के शिक्षार्थियों के लिए कुछ परिचित संदर्भों की सहायता भाषा शिक्षण का कार्य किया जा रहा है। विभिन्न क्षेत्र एवं विभिन्न आयुवर्ग हेतु उचित संदर्भ की सहायता से बच्चे को पढ़ने हेतु प्रेरित किया जा सकता है। यह संदर्भ चित्र, कविता, परिस्थिति, घटना, दृश्य आदि हो सकते हैं। किसी कविता की एक पंक्ति के शब्दों को अलग कार्ड पर लिखकर, मिलाने, पहचानने की गतिविधियाँ बनाई जा सकती हैं। जिनमें शब्दों की तुकबंदी करके किसी अक्षर विशेष से प्रारंभ होनेवाले शब्दों को इकट्ठा करके शब्दों की ध्वनियों को तोड़कर पढ़ना सीखने–सिखाने की शुरुआत की जा सकती है।

मनन के प्रश्न –

1. आप दिलीप की जगह होते तो 'चालाक चीकू' पाठ किस तरह पढ़ाते?

2. 'संदर्भ आधारित उपागम पढ़ना सिखाने का सर्वोत्तम तरीका है।' क्या आप इस विचार से सहमत हैं? हाँ या नहीं, सकारण बताएँ।

3. आपके विचार से पढ़ना सिखाने का कौन–सा तरीका सबसे उपयुक्त है?

4. आप अपने पड़ोस के विद्यालय में शिक्षक को बच्चों को पढ़ाते देखे हैं। वे कौन–सी विधि अपना रहे थे?

5. आम तौर पर कक्षा 1 एवं 2 में बच्चों को पढ़ना सिखाने के लिए किन तरीकों का प्रयोग किया जाता है?

6. पढ़ना सिखाने के अन्य विधियाँ क्या–क्या हो सकती हैं?

3.8 सामग्री से समृद्ध कक्षा वातावरण

प्रारंभिक कक्षाओं में लिखित सामग्री से समृद्ध माहौल की रचना पढ़ने लिखने के कई मौके देकर विकसित की जा सकती है। पढ़ने–लिखने के मौके हम उन्हें कहेंगे जहाँ वे विविध प्रकार की सामग्री से परिचित होंगे तथा उन्हें पढ़ने की चाह और कोशिश होगी । ये सामग्री कहानी, कविता, गीत, कक्षा टाइम–टेबल कुछ भी हो सकता है। ये सामग्री खासतौर पर उपयोगी है क्योकि ये बच्चों की एक समृद्ध और अर्थपूर्ण लिखित भाषा से जुड़ने के सार्थक अनुभव प्रदान करती है। साक्षरता के सार्थक उपयोगी अनुभव से बच्चों का जब बार–बार वास्ता पड़ता है तो उसकी लिखित भाषा को लेकर उनकी समझ बनती है। उसे लिखित भाषा की उपयोगिता की समझ में आती है। इसी प्रकार जब हम प्रत्यक्ष रूप से वर्ण या ध्वनि से जुड़े निर्देश देते है तो हम भाषा के रूप को लेकर बच्चों की समझ को विकसित करते है ।

नीचे कुछ ऐसे तरीकों की चर्चा की जा रही है जिसकी मदद से कक्षाओं को लिखित सामग्री से समृद्ध किया जा सकता है।

3.8.1 किताबें, किताबें, किताबें–

किताबें सिर्फ वही नही जिसे शिक्षक रोज सुनाने के लिए पढ़े बल्कि वे किताबें भी जो बच्चे खुद बनाएँ–आरंभिक कक्षाओं को किताबें एक नया जीवन देती है। यहाँ किताबों की ऐसे वर्ग की सूची दी गई है जिन्हें कक्षाओं में उपयोगी पाया गया है –

- बच्चों द्वारा बनाई गई किताबें
- कविता की किताबें
- विषय विशेष की किताबें
- शब्दकोश और इनसाक्लोपीडिया

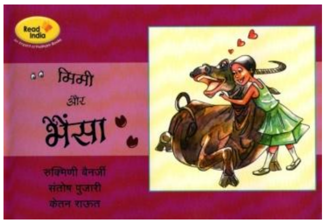

- डायरी
- बाल पत्र–पत्रिकाएँ
- फोटो अलबम
- गीतों का संग्रह

3.8.2 पढ़ने का कोना–

यह जरूरी है कि कक्षा में एक ऐसा कोना हो जहाँ अच्छे बाल–साहित्य बच्चों के पढ़ने के लिए रखे गए हों। इन पुस्तकों का इस्तेमाल बच्चों को कहानियाँ पढ़कर सुनाने के लिए भी किया जा सकता है। पढ़ी गई कहानी को सुनना, पढ़ना सीखने में बेहद मददगार साबित होता है। बच्चों की परिचित कहानी को जब बार–बार उनके लिए पढ़ा जाता है तब बच्चे कहानी की घटना, घटनाक्रम, वाक्य संरचना से भी परिचित हो जाते हैं और यही समझ उन्हें अनुमान लगाकर पढ़ने में मदद देती है। ये पुस्तके –

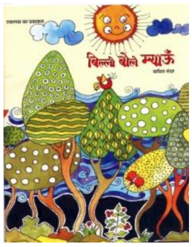

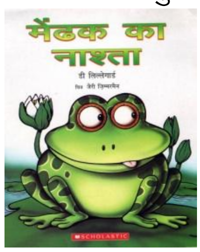

- किसी पुस्तकालय से लाई जा सकती है।
- किसी के द्वारा भेंट की गई हो सकती है।
- बच्चों द्वारा लाई गई हो सकती है।
- बच्चों द्वारा लिखी गई हो सकती है।

3.9 पढ़ना सीखने–सिखाने में बाल साहित्य की भूमिका

आइए विचार करें एक ऐसे प्रयास पर जिसमें प्राथमिक कक्षाओं के बच्चे–बच्चियों को पढ़ना सीखने–सिखाने हेतु कुछेक इस प्रकार की मुद्रित सामग्रियों का प्रयोग किया हो, जैसे– समाचारपत्रों में छपी समाचार, निविदा–सूचना, रोजगार–सूचना, शेयर बाजार सूचना इत्यादि की कतरनें। इस प्रयास के

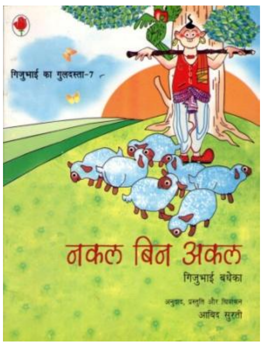

फलस्वरूपक्या बच्चे–बच्चियाँ पढ़ना सीख पाएँगे ? क्या ऐसी सामग्रियों का जुड़ाव बच्चों की दुनिया से है ? क्या इनके पठन से उनके समक्ष कोई ठोस संदर्भ का निर्माण होगा ? अगर नही तो क्या इस तरह की सामग्री बच्चे पढ़ना पसंद करेंगे ? अगर रुचि के साथ इन सामग्रियों कोपढ़ेंगे ही नहीं तो पढ़ना कैसे सीख पाएँगे ? पुनः विचार करें कि बच्चों को कैसी सामग्री दी जाए जिसे वे उत्साहपूर्वक रुचि के साथ पढ़ें।

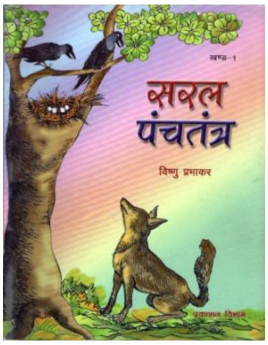

याद करें हमलोग अपना बचपन जब उम्र 7–8 वर्ष की रही होगी। कॉमिक्स (बाल साहित्य) पढ़ने की दिवानगी हद पार कर जाती थी। कोई नई कॉमिक्स आई नहीं कि उसे हर हाल में पढ़ लेने की होड़ दोस्तों के बीच मच जाती थी।एक बार हाथ लगी नहीं कि उसे आद्योपांत पढ़े बिना चैन नहीं मिलता था। हमारे माता–पिता, अभिभावकगण इसे समय और पैसे की बरबादी ही समझते थे अतः प्रायः कॉमिक्स खरीदने से परहेज ही करते थे। अतः अपने यार–दोस्तों के साथ कॉमिक्स की लेन–देन हुआ

करती थी। कॉमिक्स–लाइब्रेरी की सदस्यता प्राप्त की जाती थी। क्यों इतने अच्छे लगते थे वे? आखिर क्या हुआ करता था उन रंग–बिरंगी पत्रिकाओं में ? चंदामामा, नंदन, चंपक आदि पत्रिकाओं की कहानियों में हमलोग खोए रहते थे। चाचा चौधरी, साबू , छोटू–लम्बू , मोटू–पतलू , राम–रहीम, विक्रम–बेताल, तेनालीराम, गोनू झा, अकबर–बीरबल, 'अमर चित्र कथा' के विभिन्न पात्र, एक लम्बी फेहरिस्त है उन पात्रों की जो अपनी सूझ–बूझ, बहादुरी, साहस, हास–परिहास इत्यादि से हमारा मनोरंजन करते थे। ये बाल साहित्य क्या सिर्फ मनोरंजन करते थे या इससे बढ़कर कुछ और ? जब शिक्षक के नजरिए से देखेंगे तो महसूस करेंगे कि इनसे न केवल हमारा मनोरंजन हुआ बल्कि हमारी भाषाई क्षमता के विकास में भी इनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। जितनी अधिक सामग्री हम पढ़े उतना ही हमारे पढ़ने का अभ्यास हुआ, हमारी भाषाई क्षमता बढ़ी, हमारी जानकारी बढ़ी और हममें मानवीय गुणों का भी विकास हुआ।

आइए अब थोड़ी नज़र बच्चों की पाठ्यपुस्तकों पर भी डाल ली जाए। जब बाल साहित्य में इतना आकर्षण होता है तो क्या बच्चों की पाठ्यपुस्तकों में बाल साहित्य नहीं होता है जो बच्चों की इसमें रुचि नहीं होती ? ऐसी बात नहीं है। बच्चों की पाठ्यपुस्तकों में बाल साहित्य होता तो है लेकिन इसकी मात्रा कम होती है। उसमें भी सीख, उपदेश, नैतिक शिक्षा आदि का दबाव जबरन डाला गया होता है। कविता–कहानी पढ़ने का आनन्द बच्चे लिये नहीं कि प्रश्नों की झड़ी लग जाती है। बच्चे प्रश्नों का जवाब दे सके इस दृष्टिकोण से पढ़ना–पढ़ना होता है जिसमें आनन्द एवं मनोरंजन का सर्वथा अभाव होता है। साथ ही तीव्र गति से बदल रही बच्चों की दुनिया के अनुरूप उसमें निरंतर परिवर्तन नहीं हो पाता है। पाठ्यपुस्तकों की जो पुरातन परंपरा है उसके कारण वर्तमान संदर्भ, मूल्य, रीति–रिवाज, आदर्श, व्यावहारिकता, सामाजिक–आर्थिक–शैक्षिक विषमताएँ आदि का समावेश पाठ्यपुस्तकों में नहीं हो पाता। जबकि आज के बच्चे तीव्र परिवर्तन के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहें है। पाठ्यपुस्तकें बच्चों की आवश्यकतों व अपेक्षाओं की पूर्ति नहीं कर पातीं। फलतः पाठ्यपुस्तकों में बच्चों की रुचि नहीं होती।

उपर्युक्त स्थिति में पढ़ना सीखने–सिखाने हेतु पाठ्यपुस्तकों से इतर बाल साहित्यकी आवश्यकता है। बाल साहित्य के माध्यम से बच्चों के पढना सीखने–सिखाने के लिए यह आवश्यक है कि पढ़ने की शुरुआत व इसकी प्रक्रिया, बच्चों की रुचि एवं बाल साहित्य में तालमेल हो। आइए इस हेतु कुछ बिन्दुओं पर विचार करें–

- बच्चों द्वारा किताबों का उलटना–पलटना पढ़ने की प्रक्रिया का प्रथम सोपान है। अतः किताबें बच्चों को अपनी ओर आकर्षित कर सके इसके लिए किताबों को रंग–बिरंगी होना चाहिए।
- किताबों में काफी मात्रा में चित्र हों। ये चित्र उनके परिचित परिवेश, पशु–पक्षीं, फल–फूल, खेल–खिलौने आदि के हों।
- चित्र यथासंभव गत्यात्मक हों जिससे बच्चों को कुछ घटित होने का अहसास हो।
- चित्रात्मक कहानियाँ एवं कविताएँ अधिक मात्रा में हों।
- प्रकृति, उत्सव, खेल आदि क्षेत्रों से जुड़ी गेय, तुकांत एवं छोटी–छोटी कविताएँ हो जिन्हें बच्चे सुनते–सुनते गाने लगें।
- गद्यांश एवं उससे जुड़े चित्र में अधिकाधिक जुड़ाव हो ताकि अनुमान लगाकर भी बच्चे कहानी को समझ सकें और आनन्द उठा सकें।
- बच्चे कल्पनाशील होते हैं। अतः उनको कल्पनाशील होने के अवसर भी चित्र एवं कविता–कहानियों के माध्यम से उपलब्ध कराएँ जाएँ।

- आकर्षक, मनोरंजक एवं रोचक होना बाल साहित्य की महत्त्वपूर्ण शर्त है। इसके बिना बच्चों का लगाव संभव नहीं है। किताबों से लगाव होना पढ़ने की नींव है।
- बच्चों को स्वयं को अभिव्यक्त करने, आत्मपरख व स्वमूल्यांकन करने का भी अवसर उपलब्ध हो।
- अक्षरों का आकार बड़ा हो ताकि बच्चे लिपि चिह्नों को सुगमतापूर्वक पहचान सकें और मिलते–जुलते लिपि चिह्नों के बीच अन्तर कर सकें।
- आत्मविश्वास, स्वाभिमान, देशप्रेम, शिष्टाचार, नैतिकता, आदि मानवीय गुणों को कहानी के पात्रों के माध्यम से प्रेषित किया जाए न कि उपदेश और सूत्रवाक्यों के द्वारा।
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रोत्साहन एवं अंधविश्वास व रूढ़िवाद का विरोध भी कहानी के पात्रों के माध्यम से प्रेषित किया जाए न कि उपदेश और सूत्रवाक्यों के द्वारा।
- क्रियाशीलता, संवेदनशीलता, सृजनशीलता आदि के विकास के अवसर कविता–कहानियों के माध्यम से उपलब्ध कराएँ जाएँ।
- वर्तमान संदर्भ, मूल्य, रीति–रिवाज, आदर्श, व्यावहारिकता, सामाजिक–आर्थिक–शैक्षिक विषमताएँ आदि की समझ कविता–कहानियों के माध्यम से उपलब्ध कराएँ जाएँ।

उपर्युक्त बिन्दुओं से परिपूर्ण बाल साहित्यबच्चों मेंपुस्तकों के प्रति प्रेम उत्पन्न करेगा जो कालान्तर में पाठ्यपुस्तकों एवं उनके बीच की दूरी को भी पाटेगा। अतः बच्चों में पढ़ने की ललक जगाने एवं पढ़ना सिखाने में बाल साहित्य की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त बाल साहित्य की उपलब्धता हेतु विद्यालयों में पुस्तकालय की व्यवस्था होनी चाहिए। इस दिशा में विभागीय स्तर से काफी पहले से प्रयास किया जा रहा है। वर्ष 2008–09 में 'वाचन उन्नयन कार्यक्रम' के अन्तर्गत प्रत्येक विद्यालय में भारी मात्रा में ऐसी ही रंग–बिरंगी पत्रिकाओं एवं बाल साहित्य की उपलब्धता सुनिश्चित कराई गई थी। वर्ष 2009–10 में भी इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत पूर्वस्थापित पुस्तकालय को समृद्ध करने का प्रयास किया गया। शिक्षण अधिगम सामग्री अनुदान की राशि से भी पुस्तक क्रय करने का प्रावधान किया गया। इन तमाम प्रयासों के परिणामस्वरूप विद्यालयों में पुस्तकालय की स्थापना तो हो गई किन्तु अधिकांश विद्यालयों में ये पुस्तके आलमारी की शोभा बढ़ा रहीं होती हैं।बच्चे इनका उपयोग नहीं कर पाते हैं। विद्यालयों कीपुस्तकालय में बाल साहित्य की पुस्तकों की रखने की व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि वे बच्चों की पहुँच में हों। बच्चों को अपनी इच्छानुसार इन्हें छूने, लेने एवं पढ़ने की पूरी आजादी हो। बच्चों के भाषाई विकास एवं इस माध्यम से मानवीय विकास के लिए उन्हें बाल साहित्य उपलब्ध कराना और उसे पढ़ने का उचित वातावरण देना हमारी महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी है।

3.10 सारांश

- बच्चों के जन्म के साथ ही सुनने बोलने की क्षमता का विकास स्वाभाविक रूप से हो जाता है।
- पढ़ने और लिखने की क्षमता के विकास हेतु प्रायः तमाम विद्यालयीय व्यवस्था की आवश्यकता होती है।
- बच्चों को पढ़ना सिखाने की शुरुआत सार्थक संदर्भों से की जाए तो पढ़ना सुखद हो जाता है।
- पढ़ने का अर्थ है लिखे हुए धारणाओं को गढ़ना और साथ ही विचारों को आपस में जोड़ पाना और उन्हें अपनी स्मृति में रखना।
- पढ़ना लिखे हुए के अर्थ को समझकर अपना नजरिया बनाना या फिर अपनी निजी समझविकसित करना है।

- पढ़ना सिखाने की शुरुआत सार्थक शब्दों और रुचिकर संदर्भो से करना चाहिए।
- पढ़ने की प्रक्रिया में कई प्रक्रियाएँ शामिल हैं पढ़ते समय भाषा के उपयोग से जुड़े तीन तरह के संकेत सामने आते हैं –
  अक्षरो की आकृतियाँ और उनसे जुड़ी ध्वनियाँ।
  वाक्य विन्यास।
  शब्दों के अर्थ।
- पढ़ने में अनुमान लगाने के कौशल का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस कौशल के विन्यास में कहानी और कविताएँ आश्चर्यजनक योगदान करती है।
- कहानियों को स्वर में उतार–चढ़ाव एवं हाव–भाव के साथ बच्चों को सुनाने से वे कहानी में खो जाते हैं।
- कहानी बच्चे के लिए एक सार्थक दुनिया रचती है।
- भाषा सीखने के साधन के रूप में कविता विशेष रूप से उपयोगी होती है क्योंकि कविता आसानी से स्मृति का हिस्सा हो जाती है।
- पढ़ने में बच्चे की रुचि जगाने में शिक्षक का स्नेहिल व्यवहार एवं पठन कौशल विकसित करने के लिए चुनी गई सामग्री के उपयोग की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।
- रोचक कहानियों, कविताओं और तस्वीरों पर बच्चों से बातचीत करके उनमें पढ़ने की इच्छा जगाकर उन्हें पढ़ना सिखाया जा सकता है।
- वाचन में शब्दों के उच्चारण की प्रधानता होती है, जबकि पठन में अर्थग्रहण पर बल होता है।
- बच्चों द्वारा किताबों का उलटना–पलटना पढ़ने की प्रक्रिया का प्रथम सोपान है।
- किताबों से लगाव होना पढ़ने की नींव है।
- बच्चे चित्रों को ध्यान से देखते हैं और चित्र के बारे में मन में उठ रहे विभिन्न सवालों –क्या, कौन, कहाँ आदि का जवाब अपने पूर्वज्ञान के आधार पर ढूँढ़ने में लग जाते हैं। चित्र के साथ बच्चों का यह कार्य–कलाप 'चित्र पठन' कहा जाता है।
- अनुमान लगाते हुए पढ़ना, पढ़ने की एक महत्त्वपूर्ण एवं जायज विधि है।
- शब्द के रूप, ध्वनि एवं अर्थ तीनों मिलकर हमारे मस्तिष्क में शब्द का एक चित्र या बिंब का निर्माण करते हैं।
- मस्तिष्क में शब्दों के चित्रों निर्माण में दक्षता प्राप्त कर लेने के उपरांत पाठक शब्दों को अक्षरों में तोड़कर उन लिपि चिह्नों की भी पहचान सुगमतापूर्वक कर सकता है।
- पठित सामग्री के अर्थग्रहण का आशय उसके निहितार्थ को समझना है।
- एक अच्छा पाठक पठन के साथ–साथ विभिन्न दृष्टिकोणों से पठित सामग्री का मूल्यांकन करते हुए उसके प्रति अपना विचार प्रकट करता जाता है।
- एक शिक्षक को बच्चों को पढ़ी गई कविता एवं कहानियों को संक्षिप्त रूप से अपनी भाषा में अभिव्यक्त करने हेतु प्रेरित करना चाहिए।
- पठन कई प्रकार के होते हैं–सस्वर पठन या मुखर पठन, मौन पठन, गहन पठन, व्यापक पठन, शब्द और अर्थ का अनुमान लगाते हुए पठन, स्किप रीडिंग, स्कैन रीडिंग इत्यादि।
- मुखर पठन शिक्षार्थी में स्पष्ट उच्चारण की आदत विकसित करने में भी सहायता करता है।
- लिखित सामग्री को मन ही मन में शांतिपूर्वक बिना उच्चारण किए पढ़ने को मौन पठन कहते है।

* पाठ्य साम्रगी के भाव, विचार, भाषा, शैली तथा कलात्मक सौंदर्य की व्याख्या करते हुए उन्हें आत्मसात् करना गहन पठन है।
* व्यापक पठन विस्तृत अध्ययन को कहते है।
* पढ़ना सिखाने की विभिन्न विधियाँ है – वर्णविधि, शब्दविधि, वाक्यविधि संदर्भ आधारित उपागम इत्यादि।
* पढ़ना सिखाने में बाल साहित्य की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।
* बच्चों के भाषाई विकास एवं मानवीय विकास के लिए बाल साहित्य उपयोगी है।

3.11 मूल्यांकन

1. पठन प्रारम्भ करने से पूर्व शिक्षार्था को कौन–सी दक्षताओं का अर्जन कर लेना चाहिए?
2. पठन प्रक्रिया के कौन–कौन से चरण हैं?
3. मुखर पठन से क्या लाभ है?
4. मौन पठन का परीक्षण कैसे किया जा सकता है?
5. गहन पठन और विस्तृत पठन के लिए प्रयुक्त प्रक्रियाओं में क्या–क्या अंतर होता है?
6. वाचन एवं पठन में क्या अंतर है?
7. शिक्षार्थियों के मौन पठन का मूल्यांकन आप कैसे करेंगे?
8. शिक्षार्थी के पठन अभ्यास को प्रभावित करने वाले चार प्रमुख निर्धारकों का उल्लेख कीजिए।
9. भाषा शिक्षण में पठन की कौन–कौन सी विधियाँ हैं? प्रत्येक विधि का सविस्तार विवेचना कीजिए।
10. छात्रों में हिन्दी साहित्य के प्रति रुचि जाग्रत करने के लिए पठन के विभिन्न रूपों का प्रयोग कैसे करेंगे?
11. हिन्दी भाषा शिक्षण मं मौन पठन के उद्देश्यों पर प्रकाश डालिए।
12. क्या आप बाल साहित्य से संबंधित केवल दस पुस्तकों के नाम बता/गिना सकते हैं?
13. अच्छे बाल साहित्य की विशेषताओं को बताएँ।
14. आप अपनी कक्षा में किस प्रकार से पुस्तक कोने का संयोजन करेंगे? सिलसिलेवार ब्यौरा दें।
15. कक्षा में बाल साहित्य किस प्रकार बच्चों के लिए उपयोगी हो सकता है?
16. कक्षा में पाठ्यपुस्तक के साथ बाल साहित्य का कैसे इस्तेमाल हो सकता है? सुझाएँ।
17. कक्षा में इस्तेमाल की जा रही चार पाठ्यपुस्तकों में से दो पाठ चुने जिनसे किसी बाल साहित्य की जुड़ने की संभावना है।
18. कक्षा में पुस्तक का कोना होने से बच्चों में पढ़ने के प्रति रूझान कैसे उत्पन्न होगा? तर्क के साथ अपनी बात बताएँ।

3.12 संदर्भ :–

1. रीडिंग डेवलपमेंट सेल, पढ़ने की समझ, एन.सी.ई.आर.टी– 2008 दिल्ली
2. पढ़ना सीखाने की शुरूआत–2011 एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली
3. पढ़ने की समझ–2009, एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली
4. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005, एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली
5. बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2008, एस.सी.ई.आर.टी, दिल्ली
6. असफल स्कूल, जॉन होल्ट, एकलव्य प्रकाशन, भोपाल

इकाई–4
लेखन क्षमता का विकास

4.1 परिचय
4.2 उद्देष्य
4.3 पूर्व अनुभव
4.4 लेखन का अर्थ संकल्पना एवं विकास
4.5 षुरूआती लेखन संकल्पना एवं विकास
4.6 लेखन की चरणबद्ध प्रक्रिया–आड़ी–तिरछी रेखाएँ, प्रतीकात्मक चित्र
4.7 पढ़ना और लिखना में संबंध
4.8 प्राथमिक कक्षाओं में लेखन क्षमता के विकास के तरीकें: चित्र बनाना, रेखाचित्र से कहानी बनाकर लिखना, अपनी रूचि की चीजों के बारे में लिखना, कहानी को आगे बढ़ाकर लिखना, श्रुतलेख, लयात्मक षब्द से तुकबंदी करना, पत्र, कहानी, कविता आदि लिखना, विज्ञापन बनाना, विभिन्न उद्देष्यों के लिए लिखना।
4.9 लिखना सिखाने में आनेवाली समस्याएँ एवं उनके सामाधान के तरीकेः क्या ये वास्तव में समस्याएँ हैं या बच्चों द्वारा सीखने की प्रक्रिया के स्वभाविक चरण ? बच्चों के कार्य पर षिक्षकों की प्रतिक्रिया का महत्त्व और स्वरूप।
4.10 सारांष
4.11 मूल्यांकन
4.12 संदर्भ

4.1 परिचय

आप प्रथम सत्र में भाषा और शिक्षा विषयक पत्र के अध्याय चार में उपशीर्षक 4.5– भाषा सीखने, सीखाने के उद्देष्य के क्रम में भाषा के विविध कौशलों यथा– सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना पर अपनी समझ बना चुके हैं। ये सभी कौशल भाषा की अभिव्यक्ति का माध्यम है ये भी आप जानते ही हैं लिखना षब्द संस्कृत के लिख् धातु से निष्पन्न है। जिसका अर्थ निपुणता से सम्बंधित हैं। कौशल शब्द संस्कृत के 'कुशल' शब्द से बना है। जिसका अर्थ कुषलता एवं निपुणता से सम्बंधित है। इस प्रकार लेखन के कौशल का एकीकृत अर्थ लिखने की निपुणता एवं दक्षता से है। लिखने के सम्बन्ध में यद्यपि विचारकों का दृष्टिकोण भिन्न है । कुछ चिन्तकों का मानना है कि लिखने की प्रक्रिया वाचिक व्यवस्था को स्थायित्व प्रदान करने का साधन मात्र है। किन्तु व्यवहारिक दृष्टिकोण से यदि हम विचारते हैं तो पाते हैं कि लिखना, बोलना एवं सुनना अभिव्यक्ति के ही साधन हैं।सूक्ष्मतया यदि अवलोकन करते हैं तो पाते हैं कि हम अपने भावों को विचारों को जैसे बोलकर अभिव्यक्त करते उसी प्रकार लिखकर भी अपने भावों, विचारों को व्यक्त करते हैं। इस अध्याय में हम सब लिखना का अर्थ, विकास, प्रक्रिया, पढ़ने–लिखने सिखाने में आनेवाली समस्याओं एवं समाधानोपाय, लेखन के विविध प्रकारों का अध्ययन, एवं उसका विश्लेषणात्मक अध्ययन इस इकाई में क्रमशः करेंगें।

4.2 उद्देश्य :–

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप–

1. लेखन के अर्थ को समझ सकेगें।
2. षुरूआती लेखन की स्पष्ट समझ बना सकेंगें।
3. लेखन की विविध चरणों को समझ सकेंगें।
4. पठन एवं लेखन के बीच सम्बन्धों की समझ बना सकेंगें।
5. प्राथमिक स्तर पर लेखन क्षमता के विकास के लिए विविध तरीकों का उपयोग कर सकेंगे।
6. लिखना सिखाने में आने वाली समस्याओं एवं उनके समाधान के उपाय को जान सकेंगे।

4.3 पूर्व अनुभव

आपने छात्र, अध्यापक, अध्यापिका एवं माता–पिता के रूप में लेखन से सम्बन्धित कठिनाईयों का अनुभव प्राप्त किया होगा। बच्चा जब लिखने की क्रिया के प्रति संलग्न होता है तब वह विविध प्रकार के रेखाचित्रों, चित्रों एवं विकृत लिपियों को अपने स्लेट, अभ्यास पुस्तिका, दिवाल, इत्यादि स्थानों पर अंकित करता है। बच्चों की इन क्रियाओं को समझदार अभिभावक व्यर्थ की क्रिया समझकर उपेक्षित कर देते हैं। हम बच्चों की भावनाओं को न समझकर उसे अपने लिखने के परम्परागत स्वरूपों पर आरूढ़ करने हेतु बल का प्रयोंग तक करते हैं। इन बल प्रयोगों से बच्चा अपनी भावनाओं को वास्तविक रूप में अभिव्यक्त कर पाता है। हम यदि बच्चों की भावनाओं का सम्मान करते हुए उसके अर्थ को समझने का प्रयत्न करें तो पाएँगें कि बच्चों का वह लेखन व्यर्थ नहीं था। अतः हम अभिभावकों का यह परम कर्त्तव्य है कि हम उनकी भावनाओं के अस्पष्ट लेखन को प्रोत्साहित करें उनके वास्तविक जीवन निर्माण में सहयोग करें। ''बच्चों की आड़ी–तिरछी लकीरें पढ़ने–लिखने कि प्रक्रिया का एक बेहद जरूरी हिस्सा है। अगर हम इन आड़ी–तिरछी लकीरों को नहीं सराहेंगें तो बच्चे पढ़ने–लिखने की यांत्रिकता में ही उलझ कर रह जाएँगें।''साभार–(लिखने की षुरूआत– एक संवाद)

मनन

- बच्चों के प्रथम प्रयास आड़ी–तिरछी रेखाओं का संकलन करें। आप उन रेखाओं के माध्यम से बच्चों के लेखन कौषल को स्पष्ट कीजिये।
- आड़ी–तिरछी लेखन से बच्चे कक्षा में लेखन कौषल कैसे प्राप्त कर सकेंगे?

4.4 लेखन का अर्थः संकल्पना का विकास

जैसा कि हमलोग पूर्व में जान चुके हैं कि लेखन शब्द संस्कृत के 'लिख्' धातु से निष्पन्न है। कुछ लोगों के अनुसार यह क्रिया वाचिक प्रतीकों को स्थायित्व प्रदान करने का साधन मात्र है। जो इसके संकुचित अर्थ को ही व्यक्त करता है । यदि गंभीरतापूर्वक विचारते हैं तो यह प्रतीत होगा कि वाचिक प्रतीकों का स्थायित्व भावों की अभिव्यक्ति को ही व्यक्त करता है । हम जिस कार्य को शब्दों के द्वारा अभिव्यक्त करते हैं, क्या उस कार्य को लिखकर व्यक्त नहीं करते हैं ? निश्चय ही करते हैं। हमारे जीवन में बहुत से ऐसे उदाहरण एवं प्रयोजन मिलते हैं, जहाँ हम अपनी भावनाओं को बोलने की अपेक्षा लिखकर व्यक्त करने में सरलता एवं सहजता का अनुभव करते हैं। इतिहास इसका साक्षी है कि बहुत से ऐसे विचारक हुए जो अपनी भावनाओं को बोलने के साथ–साथ लिखकर भी व्यक्त किये हैं। जिसका प्रत्यक्ष

उदाहरण हमारे समाज में भी देखने को मिलता है। आज बाल्मीकि, व्यास, याज्ञवल्क्य, कालीदास, भारवि, वाणभट्ट, विद्यापति, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, प्रेमचंद, नागार्जुन, फनीश्वरनाथ रेणु जैसे विविध भाषाओं के विविध लेखक लेखनाभिव्यक्ति द्वारा भी अपने विचारों को प्रस्तुत नहीं करते तो निश्चय ही हम आज इन ग्रन्थों के आस्वादन से अनभिज्ञ होते । इतना ही नहीं हम यदि देवनागरी को बाँये से दाँये पढ़ते है तो बाँये से दाँये लिखते भी हैं। इस प्रकार लिखना एक तरह की बातचीत ही है। लिखते वक्त हम किसी से संवाद कर रहे होते हैं। हालांकि प्रायः वह व्यक्ति हमारे सामने नहीं होता है। बहुत सी बातें हम किसी सूचना, विचार या याद को सुरक्षित रखने के लिए लिखते हैं। यदि मैं अपने आज के अनुभव एक डायरी में लिखूं तो मैं इन अनुभवों को किसी और दिन पढ़ने की आशा में सुरक्षित रख सकूंगा। अध्यापक की हैसियत से हमें बच्चों को लेखन का परिचय बातचीत के एक रूप में देना चाहिये।

साभार –(बच्चे की भाषा एवं अध्यापक)

अक्षरों तथा वर्णों को सुडौल और सुन्दर बनाना भी लिखना कहलाता है। लिखकर हम अपने विचार दूर–दूर तक पहुँचा सकते हैं। बालकों को लिखना सिखाने से पहले उनमें लेखन सम्बन्धी जिज्ञासा उत्पन्न करना आवश्यक है। तभी वे लेखन कार्य में रूचि लेंगे। बालक क्रियाशील होते हैं, हमें उनकी इन क्रियाशीलता को प्रोत्साहित करना होगा। बालकों को रंगीन चित्रों की रूपरेखा देकर रंग भरने को कह सकते हैं। बालक इस

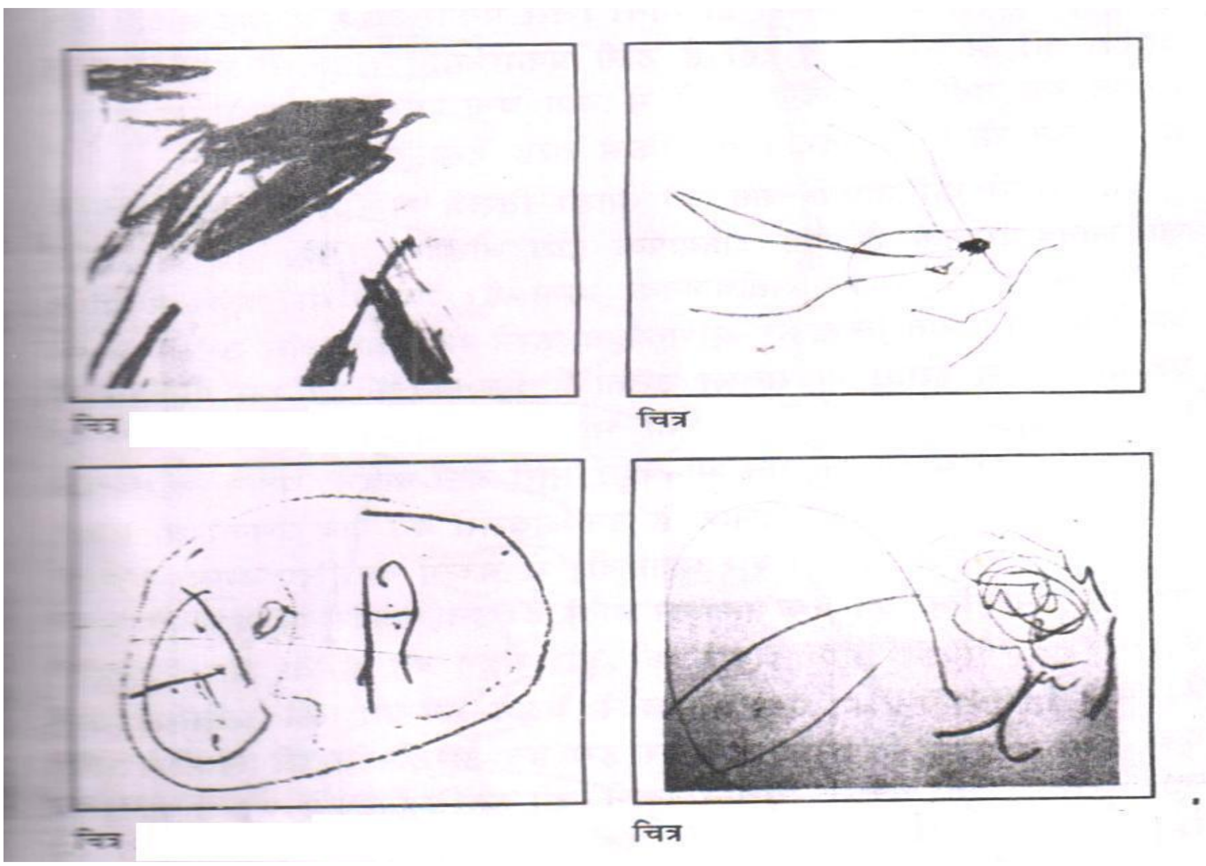

कार्य में बड़ी रूचि लेंगे। इस प्रकार हम बालकों को देखी हुई वस्तुएँ पेन्सिल आदि द्वारा बनाने को कह सकते हैं। बालकों की इस रचनात्मक वृति का उपयोग एक कुशल अध्यापक द्वारा अक्षर लेखन में कराया जा सकता है। अर्थात '' उच्चरित ध्वनियों को प्रतीक चिन्हों के रूप में व्यक्त करना ही लिखना कहलाता है। लिखने में जिन प्रतीक चिन्हों का प्रयोग होता है उन्हें अक्षर या वर्ण कहते हैं।

विषय पत्र भाषा और षिक्षा के चतुर्थ इकाई में हमलोगों ने लिपि, एवं उसके विकास के सम्बंध में विस्तारपूर्वक अध्ययन किया है। लिखने का आरंभ लिपि के विकास से ही प्रारंभ होता है। वर्तमान में देवनागरी, फारसी, रोमन, प्रभृति अनेक लिपियों में बच्चे लेखनाभिव्यक्ति का प्रारंभ करते हैं। यदि प्रारम्भिक समय में बच्चों को पैंसिल, खल्ली, चॉक आदि दिया जाता है तो वह आड़ी–तिरछी लकीरों एवं विन्दुओं के रूप में कुछ न कुछ स्लैट, पुस्तिकाओं एवं भित्ति पर अंकित करता है। प्रौढ़ों की दृष्टि से इसे लिखना नहीं कह सकते क्योंकि वे उसमें कोई अर्थ नहीं देख पाते है। किन्तु यदि बच्चों की दृष्टि से देखें तो इन सारी तिरछी रेखाओं में भी हमें एक अर्थ छिपा मिलेगा। वस्तुतः यदि देखा जाये तो मानव जीवन में लेखन का विकास यहीं से प्रारंभ होता है। अधोलिखित चित्र के द्वारा हम इसे विषेषतः समझ सकते हैं।

मनन :–

हममे से अधिकांष लोग बच्चों के इस तरह के कार्य को निरर्थक खेल समझ कर कोई महत्व नहीं देते किन्तु बच्चो की ये छोटी, लम्बी, गोल, तिरछी लकीरें ही उनके मन की बात हैं। बच्चों की ये लकीरे हम से बहुत कुछ कहती हैं, जिस प्रकार हमारे किताबो में लिखे षब्द और वाक्य। अन्तर इतना है किताब का प्रिन्ट हम पढ़ लेते और उन लकीरों को हम समझना ही नहीं चाहते हैं।

मननः बच्चों के उपरोक्त लेखन/ चित्र से आपकी क्या समझ बनती है। विस्तार से लिखें।

4.5 शुरूआती लेखनः संकल्पना और विकास

जिस तरह बच्चे एक स्वभाविक प्रक्रिया के तहत जमीन पर घुटनों के बल चलते हैं, सहारा लेकर खड़े होते हैं, फिर चलना सीखते हैं उस तरह पढ़ने – लिखने की प्रक्रिया के तहत भी कुछ ऐसे पड़ाव आते हैं जो स्वाभाविक हैं। जब बच्चे पहला शब्द बोलता है तो घर में खुशी की लहर सी दौड़ जाती है। सभी उस बच्चे को घेरकर यह उम्मीद करते हैं कि वह कब एक और शब्द बोलेगा। पर सोचने की बात यह है कि हम उसी बच्चे को तब क्यों नहीं उम्मीद भरी नजरों और उत्साह से देखते हैं जब वह पहली बार पेंसिल पकड़कर लकीर खींचता है। एक बच्चे के लिए किसी लिखित प्रतीक का अर्थ बनाना या जमीन, दीवार अथवा कागज पर रेखा खींचना एक बहुत बड़ी उपलब्धि है– एक कदम है जो बच्चों ने उठा लिया है, एक पड़ाव पार करने की तरफ। साभार – लिखने की शुरूआत– एक संवाद पृष्ठ सं0 4

मननः

- प्रारंभिक कक्षा में प्रथम दिन से ही लेखन की सार्थक शुरूआत कैसे करेंगे ?
- बच्चे को लेखन में प्रोत्साहित करने के लिये क्या करेंगे ?
- लिखने के विभिन्न चरण अपने आप में कितने महत्वपूर्ण हैं, स्पष्ट करें ?

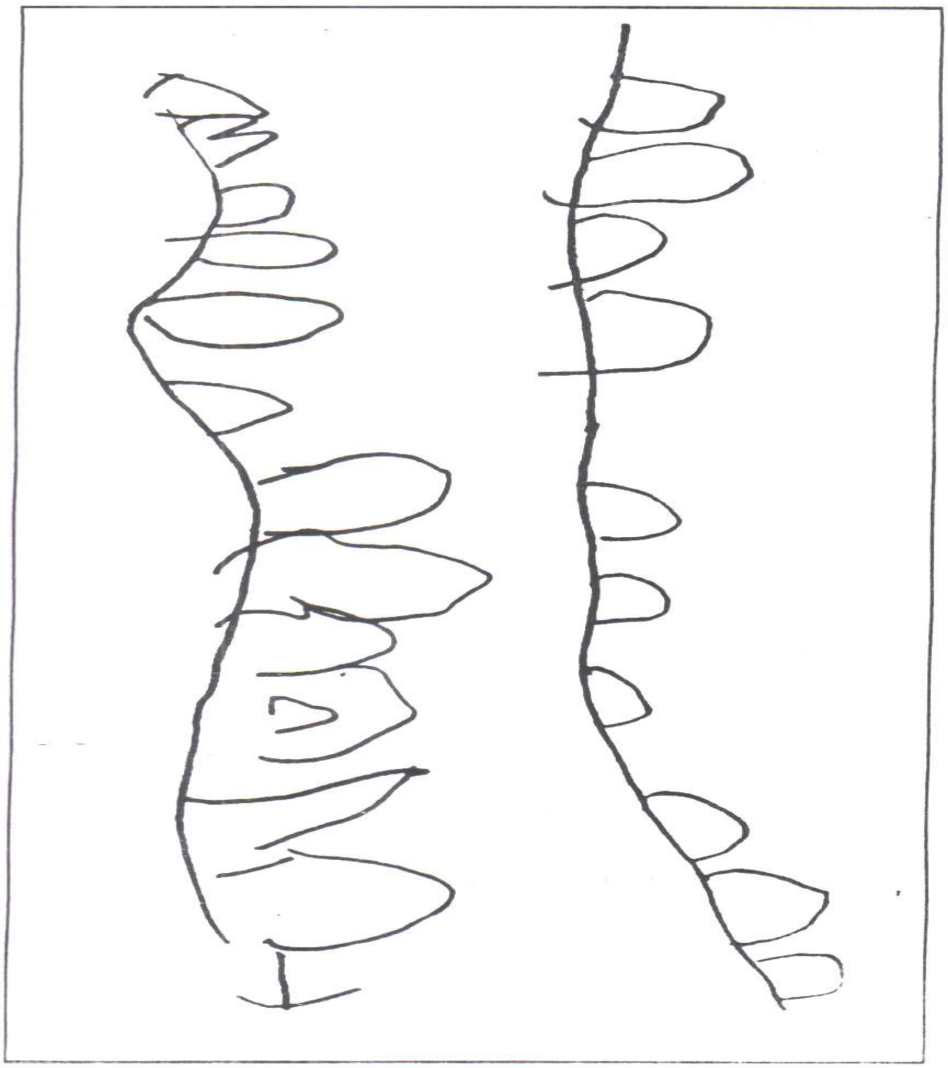

चित्र 7 अर्जुन के बादल

शुरुआती लेखन 7

प्रारम्भिक समय में बच्चों की ये तिकोनी रेखाएँ अभिव्यक्ति का एक माध्यम होती हैं। इन लकीरों में बातें हैं अर्थ हैं , भाव हैं, और पारम्परिक लेखन की ओर बढ़ने की क्षमता और विश्वास है। बच्चों की इन पहली लकीरों को कक्षा में बिना रोक–टोक स्वीकारना और उस पर बात करना महत्वपूर्ण है, क्योकि ये लकीरें बच्चों के लेखन के विकास का प्रारंभिक महत्त्वपूर्ण स्थल है जहाँ बच्चा पढ़ने–लिखने को सार्थकता से देख रहा है।

वह यह समझ रहा है कि मन की बातों को लिखा जा सकता है और लिखी गई बात को पढ़ा जा सकता है। आगे दिए हुए चित्र के द्वारा इसे और स्पष्टता के साथ समझ सकते हैं

अर्जुन उपरोक्त चित्र में आसमान में दिख रहे बादल को उत्तर पुस्तिका में लेखन साम्रगी द्वारा अंकित किया हैं। वह यथासंभव अपनी भवानाओं को व्यक्त करता हैं। हम षिक्षको की पहली दृष्टि में यह व्यर्थ लेखन हैं। लेकिन हम सूक्ष्मावलोकन करते हैं तो पाते हैं कि अर्जुन अपनी बातों को व्यक्त करने में सफल रहा हैं। यहाँ आवष्यकता है उसकी भावनाओं को समझ कर प्रोत्साहित कर माहोल बानाने की। वह अतिषीघ्र इसी क्रम में अक्षरों को भी लिखना प्रारंभ कर देगा।

मनन : आपकी दृष्टि में अर्जुन का यह षुरूआती चित्र बादल को व्यक्त करता है या नहीं ?

हम आगे लिखे चित्र से इसे और अच्छी तरह समझ सकते हैं।

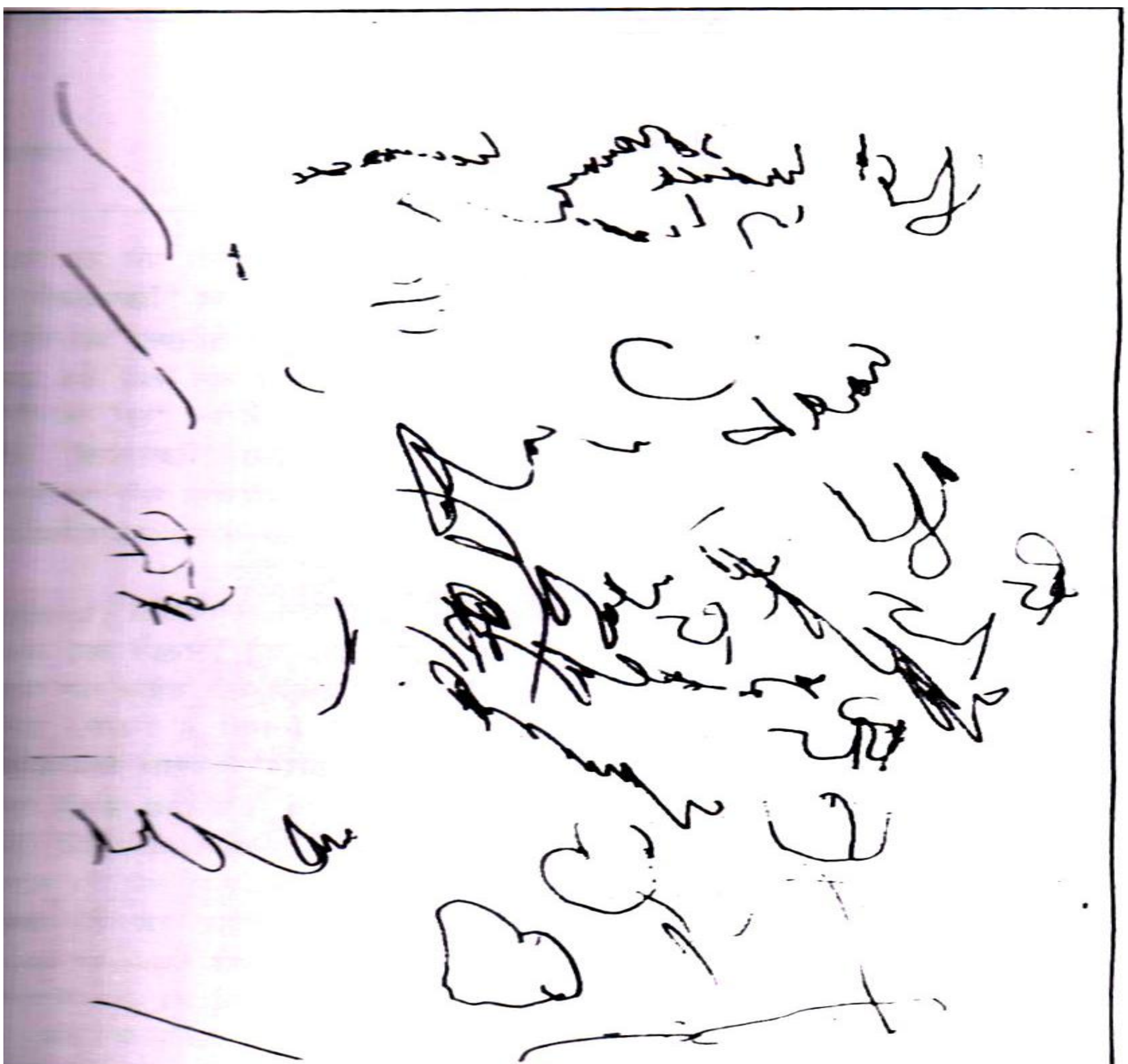

चित्र 8 प्रिया

आती लेखन 9

यह चित्र प्रिया का हैं वह आड़ी, तिरछी, रेखायें खींच रहीं है। उसे प्रोत्साहन मिला, परिवेष मिला, उसने धीरे–धीरे आड़ी, तिरछी लकीरों के साथ–साथ वर्णो को लिखना प्रारम्भ कर दी।
प्रिया ने लिखने के बाद बताया नहीं कि क्या लिखा? बस इतना कहा ''मैं लिख रही हूँ।'' प्रिया द्वारा अक्षरों की आकृति बनाना इस बात की ओर संकेत करता है कि उसकी यह समझ बनी है कि लिखना अपनी बात को कहने का एक सार्थक माध्यम हैं। जिसे आगे दिए गये चित्र से और अधिक स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं।

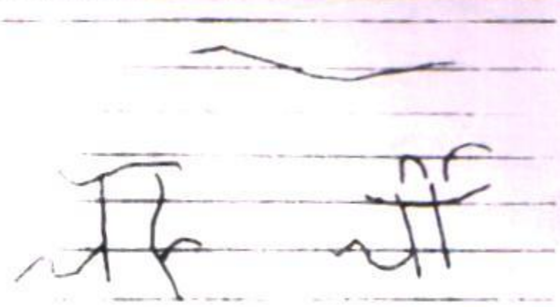

चित्र 9 तनिष्ठा

यह चित्र तनिष्ठा का हैं। छिपकली चींटी को खा गई उसने दो षब्दों में लिखने का प्रयास किया है।तनिष्ठा का लेखन यह बताता है कि उसकी ध्वनि संकेत की समझ बन रहीं है। उसने ध्वनि को ध्यान से सोच कर लिखने का प्रत्यन किया है। छिपकली के लिए चह और चींटी के लिए चीं लिखा।
'लेखन की इस प्रक्रिया में बच्चों का आगे बढ़ना इस बात पर निर्भर करता है कि बच्चों को ऐसा माहौल कितना मिल रहा है जो सार्थक प्रिंट से समृद्ध है। यहाँ प्रिट से आशय सिर्फ दिवारों पर कहानियाँ, किताबों के चार्ट बनाकर चिपका देने से नहीं है। 'प्रिंट ' की सार्थकता के मायने तब सिद्ध होते हैं जब उस प्रिंट (जैसे कहानी, कविता आदि की किताबें चार्ट, कक्षा में पढनें–लिखने से जुड़ी अन्य सामग्री) का बच्चों की रूचि एवं आवश्यकता के अनुसार भरपूर इस्तेमाल किया जा रहा हो।'' (साभार–लिखने की षुरूआत–एक संवाद पृष्ठ 08)
जहाँ बच्चों के प्रारम्भिक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहन एवं सम्मान मिलता है, वहाँ बच्चा लेखन कौशल के अन्यान्य बिन्दुओं को पार करते हुए अच्छा लेखन कौशल प्राप्त करता है। जहाँ हम उसकी इस स्वभाविक प्रारंभिक अभिव्यक्ति को न मानकर अपनी समझ को उस पर थोपते हैं तब निश्चय की बच्चों में लेखन कौशलों का स्वभाविक विकास नहीं हो पाता है। प्रायः ऐसा देखा भी जाता है कि बच्चा दोषारोपण से हतोत्साहित होकर अपने लेखन की प्रवृत्ति से ही क्रमशः सर्वदा विमुख हो जाता है। अधोलिखित चित्र से सुगमता पूर्वक इसे समझ सकते हैं।

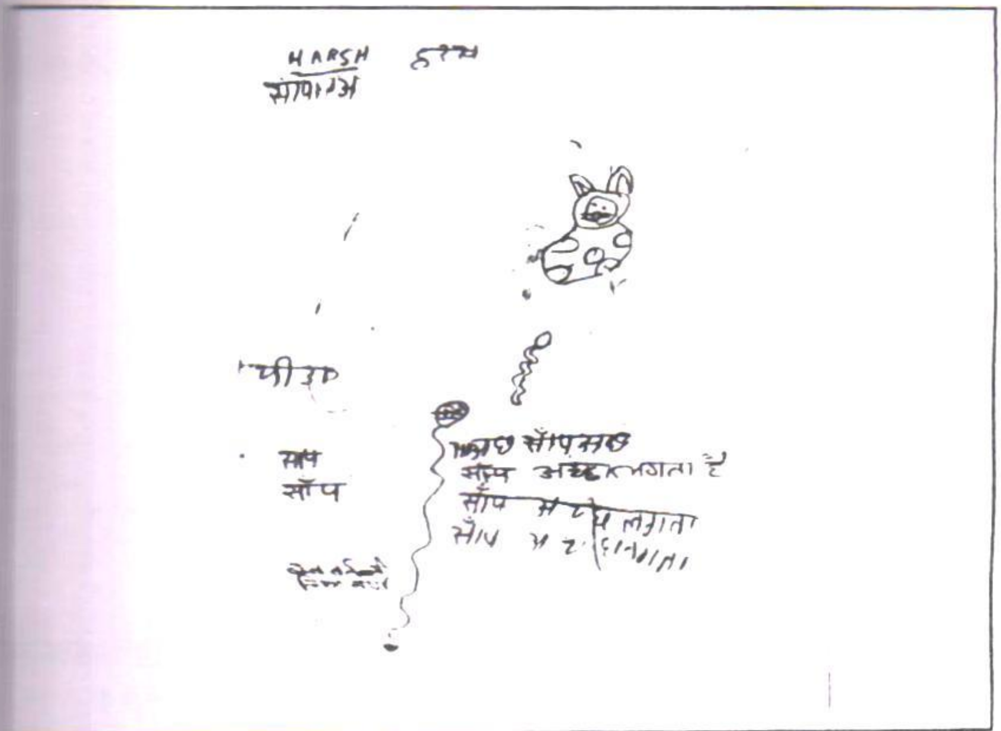

चित्र 10 हर्ष

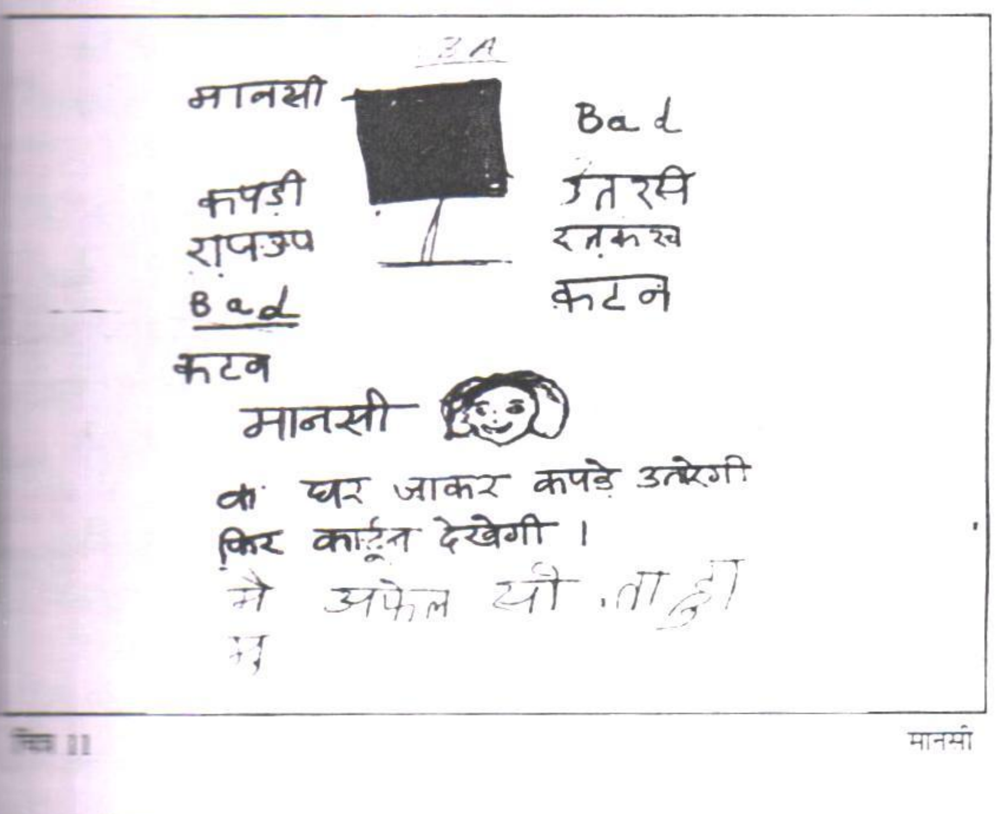

चित्र 11 मानसी

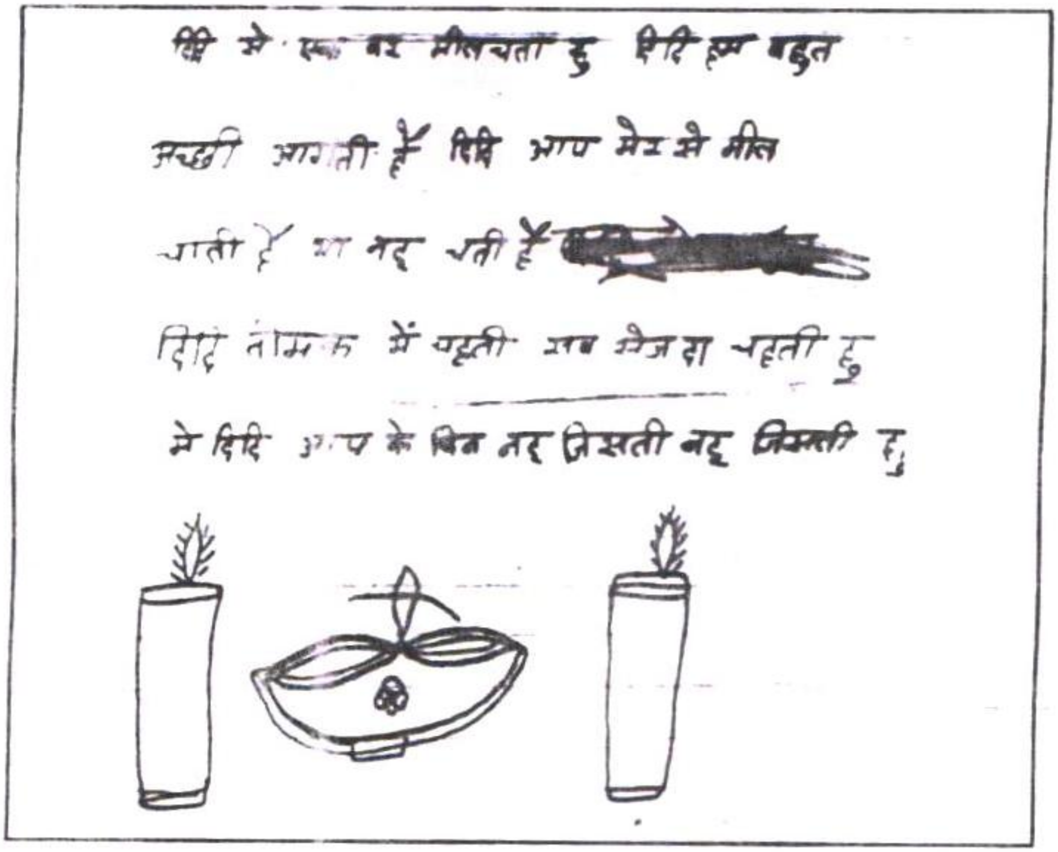

चित्र 12 पूनम

हर्ष (चित्र सं0 10) और मानसी (चित्र 11) में दोनो ही पारम्परिक लेखन की ओर प्रवृति कर रहे हैं। उनकी ध्वनि संकेतों की समझ बन रही है। मानसी के लेखन को ध्यान से देखें तो मानसी ने कुछ शब्द जैसे 'कपड़ी' 'उतर से' 'कटन' बड़े आत्मविष्वास से लिखे हैं। जबकि 'राजउप' और 'दतकरच' के आसपास बने बिंदु यह बताते हैं कि लेखक के मन में उलझन है। मन का अविष्वास लेखन में भी झलक ही रहा है। इस समय मानसी के साथ कुछ ऐसी गतिविधियाँ करनी होगी जिससे उसका अविष्वास दूर हो सके। उसका लेखन और भी समृद्ध हो जाए।

पूनम ने लेखन (चित्र 12) में अपने मन के भाव बहुत खुबसूरती से कागज पर उतारे हैं और अपनी बात को बहुत दिलचस्पी से लिखा है। पूनम भी स्व–वर्तनी से पारंपरिक लेखन की ओर बढ़ रही है। कई जगह षब्द संरचना की सही छवि वर्तनी में उभरकर आ रही है। इस प्रकार अर्जुन प्रिया तनिष्ठा, हर्ष, मानसी एवं पूनम का लेखन षुरूआती लेखन एवं विकास की संकल्पना को सुस्पष्ट रूप से व्यक्त करता है। जैसा कि पूर्व में भी कहा जा चुका है कि हमें बच्चों के इस प्रारंभिक लेखन का सम्मान करना चाहिए। इस बच्चे की लेखन की यह पारम्परिक प्रक्रिया में सहजता पूर्वक विषेष योग्यता प्राप्त कर सके और अपने उद्देष्य की प्राप्ति कर सकें।

4.6 लेखन की चरणबद्ध प्रक्रिया–आड़ी–तिरछी रेखाएं, प्रतीकात्मक चित्र, स्व–वर्तनी, पारंपरिक लेखन की ओरः

हम पूर्व में चर्चा कर चुके हैं, कि बच्चा एकाएक चलना नहीं आरम्भ करता है। सर्वप्रथम वह घुटनों के बल चलता है। फिर धीरे–धीरे खड़ा होता है अनन्तर प्रथम कदम बढ़ता है और लड़खड़ा कर गिर जाता है। गिरने पर परिवार के सदस्यों द्वारा पुनः प्रोत्साहन मिलने पर लकड़ी की गाड़ी द्वारा बाद में खुदवखुद चलना सीख लेता है। वही बालक क्रमबद्ध तरीका से चलना सीख कर विश्व का सर्वश्रेष्ट धावक भी बनता है। यहाँ विचारणीय प्रश्न यह है कि जिस समय वह बच्चा घुटनों के बल .चलकर खड़ा होना चाहता है यदि वहीं अभिभावकों के द्वारा डॉट दिया जाता वा हतोत्साहित कर दिया जाता तो वह बच्चा भविष्य में तेज धावक बनता।

ठीक यही बात लेखन के क्रिया के सम्बन्ध में भी लागू होता है। बच्चा जब लेखन सामग्री (पेंसिल, खल्ली, पेन इत्यादि) पकड़ता है तो वह अपने भावों को बिन्दुओं में आड़ी–तिरछी रेखाओं में व्यक्त करता है। यदि अभिभावक प्राथमिक काल से ही उसे प्रोत्साहित करता तो शनैः शनैः प्रतीकात्मक चि़त्रों स्व वर्त्तनी से पारम्परिक लेखने की ओर अग्रसर होता है। यदि हम उसे उसी समय हतोत्साहित कर दें तो निश्चय ही बच्चा लेखन की क्रिया से दूर भागना चाहता है। अतः हमलोगों का कर्त्तव्य है कि हम बच्चों के लेखन के प्राथमिक अवस्थाओं का सम्मान करें।हम उसकी भावनाओं को समझने का प्रयास करें।उसके प्रथम प्रयास को प्रोत्साहन दें। हमें पूरा विश्वास है कि बच्चा शनैः शनैः पारम्परिक लेखन की ओर शीघ्रातिशीघ्र अग्रसर होगा। पूर्व पठित हर्ष, प्रिया, मानसी , तनिष्ठा और पूनम का लेखन आड़ी, तिरछी रेखाओं से पारम्परिक लेखन की चरणबद्ध प्रक्रिया को क्रमषः व्यक्त करता है।

4.7 पढ़ना और लिखना में संबंध

हमलोग पूर्व कक्षा में भाषा और शिक्षा के चतुर्थ अध्याय में पढना क्या है ? लिखना क्या है? इस विषय पर विस्तृत चर्चा कर चुके हैं। अब हमलोग पढना और लिखना के अन्तर सम्बंधों के विषय में विचार करेंगें। हमलोग जान चुके हैं कि पढने एवं लिखने के कौशल का विकास साथ–साथ होता है। जब हम लिखते हैं तो उसे पढते भी जाते हैं। एक कौशल का विकास दूसरे कौशल के विकास को प्रभावित करता है। इसी क्रम में झुनियाँ की कहानी के द्वारा हमें यह ज्ञात होता है कि बच्चे लिपि– चिन्हों को जाने बिना भी उन्हें पढ सकता है। बच्चे आड़ी–तिरछी रेखाओं के माध्यम से अपने मन की बातों को अभिव्यक्त भी करता है।

कक्षा में लेखन के परिपेक्ष्य में एक बार फिर पढ़ने–लिखने का सम्बंध समझना अनिवार्य है। जैसा कि पहले चर्चा कर चुके है, ये दोनों प्रक्रियाएँ एक–दूसरे की पूरक हैं। पठन में सीखी गई अवधारणाएँ और कौशल लेखन में काम आते हैं और लेखन की पठन में। अतः बच्चों के लिखित संदेशों को उन्हीं के द्वारा पढाया जाना चाहिए तथा पढ़ी हुई सामग्री से सम्बंधित लेखन का कार्य देना चाहिए। इससे पढ़ी हुई सामग्री की समझ बच्चों को अपने निजी अनुभवों की अभिव्यक्ति में सहायता करेंगी।यह प्रक्रिया लेखन को अर्थपूर्ण सन्दर्भों में प्रयोग करने के लिए प्रेरित करेंगी। लेखन के दौरान एक लेखक अपने विचारों के साथ जुझते हुए उन्हें कागज पर उतारने की कोशिश करता है।यह प्रक्रिया पढ़ने –लिखने के बीच घनिष्ठ सम्बंध बनाने में और इन्हें गहाराई से समझने में सहायक होती हैं। एक स्थायी पाठक और एक अच्छा लेखक बनाने में यही कौशल महत्वपूर्ण है।

मनन :

- प्रारंभिक कक्षा में लिखित भाषा और कक्षा का स्वरूप कैसा होना चाहिए ?
- प्रारंभिक कक्षा के बच्चों के चित्रों लेखन को हमें किस तरह देखना चाहिए ?
- लिखना अपनी बात को कहने का सार्थक माध्यम है। उदाहरण देकर बतावें, कैसे ?
- प्रारंभिक कक्षा के बच्चें को स्कूली वातावरण के आधार पर वर्ग में नये शब्दों की रचना करवायें।
- कक्षा में चि़त्रों के जरिये वाक्य निर्माण करवायें।

4.8 प्राथमिक कक्षाओं में लेखन कौशल के विकास के तरीके –

चित्र बनाकर, रेखाचित्र से कहानी बनाकर, अपनी रूचि की चीजें के बारे में लिखना, कहानी को आगे बढाकर लिखना, श्रुतिलेख कयात्मक शब्द से तुक बन्दी । : प्राथमिक स्तर की कक्षाओं में बच्चों के लेखन कौशल को स्वभाविक रूप से विकसित कर सकते हैं। विकसित करने में सबसे ज्यादा जोर इस बात पर दिया जाता है कि बच्चे किस प्रकार वर्गमाला को सीख जायें। प्रायः अध्यापकों की यह सोच होती है कि बिना वर्णमाला ज्ञान के लिखने प्रक्रिया शुरू नहीं हो सकती । किन्तु यदि इस पर सूक्ष्मतया विश्लेषण किया जाये तो कहा जा सकता है कि हम वर्णमाला पर अवश्यकता से अधिक बल देते हैं। शुरूआत से ही हमें यह ध्यान देने की जरूरत है कि हम बच्चों को लेखन के किस तरह के मौके प्रदान कर रहे हैं तथा उपयुक्त तरीके से आकलन करने से पूर्व या तो अत्यन्त जरूरी है कि हम बच्चों को अपने मन की बात लिखकर अभिवक्त करने का मौका दें । तभी लेखन कार्य से बच्चे जुड़ पाएँगें और उनके लेखन कार्य में विविधता भी होगी।

साभार– लेखन की शुरूआत एक आकलन पृ0 43

प्राथमिक कक्षाओं में लेखन के विकास के विविध– तरीके हो सकते हैं।–

चित्र बनाना– बच्चे चित्रों के माध्यम से स्वयं अपनी बात कहकर आनन्दित होते हैं। उन्हें अपनी बात बोलने के अलावा एक और ढंग से कहने का अवसर मिलता है। परंतु शिक्षक/ अभिभावक बच्चों के चित्र–लेखन पर ज्यादा गौर नहीं करते या फिर यह समझ नहीं पाते कि यह शुरूआती लेखने से जुड़ा एक चरण है। अतः शुरूआती दौर का चित्र लेखन, पढना– लिखना सीखने का अहम हिस्सा होता है। शिक्षक और अभिभावको को इसे समझना चाहिये और इसका आकलन भी करना चाहिए ।

साभार– लिखने की शुरूआत एक संवाद पृ0 16

मनन : आपकी दृष्टि में चित्र बनाना पढ़ने–लिखने का हिस्सा है कि नहीं ?

रेखाचित्र से कहानी बनाकर लिखना :–

हम रेखा चित्र से कहानी बनाकर भी बच्चों के लेखन कौशलों की वृद्धि कर सकते हैं। पाठ्य–पुस्तकों , अखबारों इत्यादि में छपे हुए रेखा चित्रों को रंगभरवा कर बच्चों से छोटी–छोटी कहानी बनवाकर भी उसे प्रोत्साहित कर सकते हैं। बच्चों की रूचि कि अनुसार अखबार या पत्रिका में से कुछ चित्र काटकर कक्षा में प्रदर्शित किए जा सकते हैं और इन पर चर्चा की जा सकती है। चित्र आकर्षक हों, चित्रों में बातचीत करने की भरपूर संभावनाएँ हो। चित्रों को चुनते समय इन बिन्दुओं पर ध्यान देना जरूरी है।

रोचकता
स्पष्टता

बच्चों के परिवेश से जुड़ाव

किसी भी तरह की हिंसा से मुक्त

बच्चों के साथ बैठकर चित्र पर चर्चा करें और बच्चों के विवरण को बोर्ड /चार्ट पर लिखें एवं बच्चों के साथ मिलकर पढ़े। स्थानीय/क्षेत्रीय त्योहारों से जुड़े चित्र, स्थानीय घटना आदि से जुड़े चित्र, स्थानीय पषु–पक्षियों से जुड़े चित्र, चित्र विवरण एवं लेखन के विषय हो सकते हैं। साभार–लेखन की शुरूआत एक संवाद पृ0 –66

(कक्षा–1 के अंकुर की पाठ 13 में लालची कुत्ता का विविध चित्र देखें।)

लालची कुत्ता

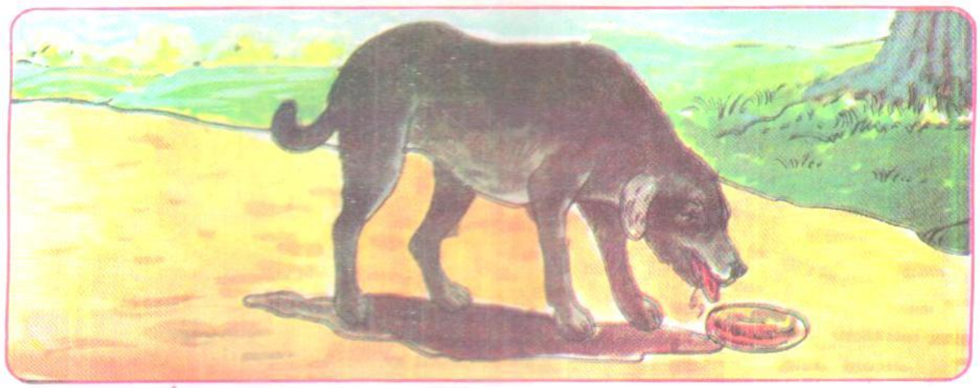

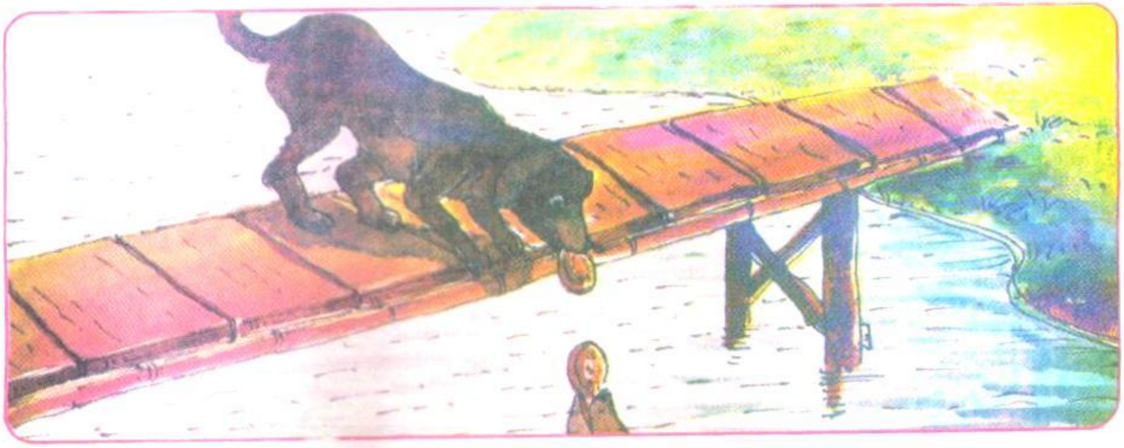

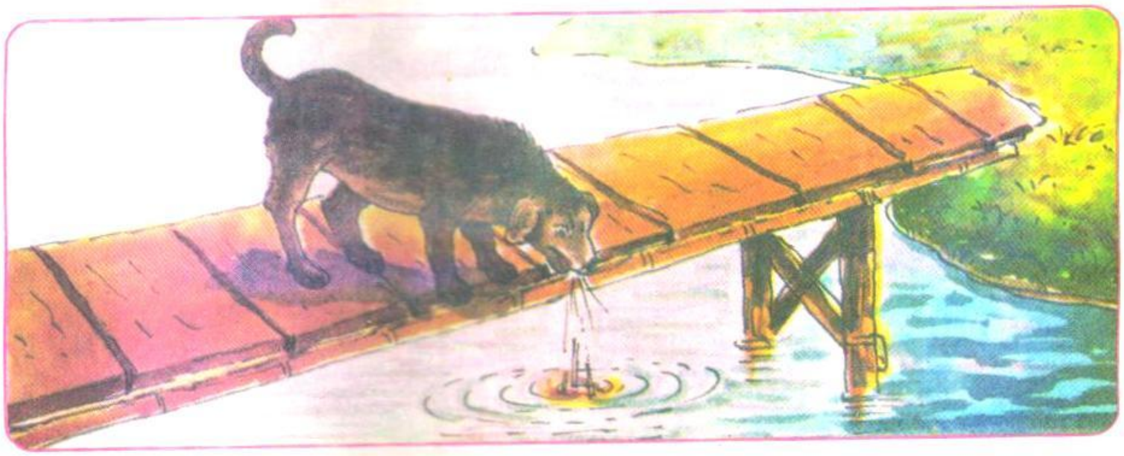

गतिविधि : उपर्युक्त पाठ में अंकित चित्र के आधार पर बच्चों से कहानी बनबावें।

षिक्षक / शिक्षिका इस प्रकार की क्रियाओं के द्वारा छात्रों के लेखन कौषल का विकास कर सकते हैं इसप्रकार की गतिविधि द्वारा बच्चा अन्यान्य चित्र पर भी अपनी भावनाओं को लेखन कौषल द्वारा व्यक्त कर सकते हैं।

अपनी रूचि की चीजों के बारे में लिखना –

अच्छा लेखन वह माना जाता है जिसमें लेखक का अपना दृष्टिकोण और लिखी गई बात से उसका जुड़ाव होता है। बच्चों को भी अपने दृष्टिकोण का विकास करने के मौके लेखन सम्बंन्धित गतिविधियों द्वारा दिये जाने चाहिए। बच्चों से लेखन के पूर्व चर्चा करना उन्हें नए–नए विचारों तथा पहलूओं का लेखन में समावेश करने की प्रेरणा देता है। इसलिए किसी भी लेखन के पूर्व बच्चों से चर्चा कर लें कि वे उसमें कौन–कौन सी बातें सम्मिलित करने की सोच रहे हैं। यदि बच्चे किसी विषय पर नहीं लिखना चाहते और चर्चा के बाद भी वे सक्षम महसूस नहीं कर पा रहे तो उन्हें इतनी छूट जरूर मिलनी चाहिए कि वे विषय बदल लें। विशेष रूप से प्रारम्भिक कक्षा के बच्चों के लेखन के अवसर उनकी जिन्दगी से जुड़े अनुभवों, जो कि उनके बहुत करीब हों, से सम्बन्धित होने चाहिए। इससे बच्चों को यह स्पष्ट रहता है कि क्या–क्या लिखना है और कैसे लिखना है और उन्हें अपनी बात खुलकर कह देने से उनके अपने दृष्टिकोण का निर्माण होता है। साथ ही उसका आत्मविश्वास भी बढ़ता है।

साभार– लिखने की शुरूआत एक संवाद – पृ0 46

कहानी को आगे बढ़ाकर लिखना –

हम कहानी को आगे बढ़ाकर भी प्रारम्भिक कक्षा के छात्रों का लेखन कौशल बढ़ा सकते हैं। कहानी के मूल संदर्भ में परिवर्त्तन करके कि – यदि ऐसा होता तो क्या होता ? तब निश्चय ही बच्चा अपनी कोमल–कल्पनाओं से विविध सन्दर्भों को सन्निहित करता है। धीरे–धीरे उसकी रूचि कथा लेखन के प्रति बढ़ती जाती है।बच्चों के साथ मिलकर आस–पास रहने वाले पालतू जानवरों के घरों के बारे में चर्चा करे और बच्चों को सोचने का मौका दें। अगर जानवरों के घर बदल दिए जाएँ तो क्या होगा ? जैसे – कबूतर कौवे के घोसलें में रहने लगे तो ? चिड़िया चूहे बिल में चली जाए तो ? चिटीं के घर में केंचुआ रह पाएगा ? अगर गाय हमारी कक्षा में आ जाए तो ? क्या होगा ? इन गतिविधियों से निश्चय ही बच्चों में लेखन के प्रति अभिरूचि बढ़ती जायेगी।

साभार– लिखने की शुरूआत एक संवाद पृ0 58

श्रुतलेख – श्रुतलेख का तात्पर्य सुनकर लिखना से है। इस प्रक्रिया में शिक्षक / शिक्षिका गद्यांश वा पद्यांश के कुछ भागों को बोलते हैं और छात्र उसे लिखते हैं। श्रुतलेख में सुन्दर लिखावट का सर्वाधिक महत्त्व नहीं होता है। इसमें महत्त्व भाषा की शुद्धता का हो जाता है। इसका उद्देश्य छात्रों की श्रवणेन्द्रियाँ प्रशिक्षित करना है, ताकि वह भाषा के शुद्ध रूप को सावधानी से सुन सके। इसके द्वारा बच्चे के हाथ, कान, मस्तिष्क की क्रियाओं में सन्तुलन स्थापित किया जाता है, उसकी स्मरण शक्ति का विकास किया जाता है। श्रुतलेख की शिक्षा के लिए अध्यापक को गद्यांश या पद्यांश चुनते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि वह न तो बहुत अधिक कठिन हो और न ही बहुत अधिक सरल। कुछ लोगों के मतानुसार श्रुतलेख वर्तनी– शिक्षण के लिए भी आवश्यक है। श्रुतलेख वर्तनी शिक्षण के लिए इतना आवश्यक नहीं है, जितना कि सुनकर समझने और एक निश्चित गति में लिखने के अभ्यास के लिए आवश्यक है। श्रुतलेख से वर्तनी का परीक्षण हो सकता है, शिक्षण नहीं।

(साभार– हिन्दी शिक्षण)
डा0 रामशकल पाण्डेय पृ0 102

इससे बच्चों में कल्पाषीलता के साथ–साथ लेखन कौषल का भी विकास होता है।

लयात्मक शब्द से तुकबंदी करना– इसके द्वारा शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में हल, नल, चल जैसे दो–चार शब्द का लेखन श्यामपट्ट पर करें। अनन्तर बच्चों से कहे कि इसी के समान अन्य शब्दों वाले षब्द लिखें। धीरे – धीरे बच्चा भी इसी के समान शब्दों का लयपूर्वक तुकबंदी करने लगता है – पल, थल इत्यादि। इसे हम कविताओं और कहानियों में भी प्रयोग कर सकते हैं। जिसमें छोटे–छोटे वाक्य संरचना का दोहराव हो, उसे ढूँढ़े और बच्चों के सामने उसकी कम से कम दो पंक्तियॉ/अनुच्छेद ब्लैक बोर्ड/ चार्ट पर लिख दें। एक– दो बार उसे बच्चों के साथ उसे रोचक ढ़ग से पढ़ें। उसके बाद बच्चों को उसे आगे बढ़ाने के लिए कहें। इसमें हर बच्चा अपनी कल्पना से कुछ भी जोड़ सकता है, उसे मान्यता दें।जेसे –

चींटीं ओ चींटीं
कहाँ गई थी?
अरे, यहीं थी पास में
चीनी की तलाश में
गाय ओ गाय
कहाँ गई थी?
अरे, यहीं थी पास में
घास की तलाश में
................ओ.............
कहाँ गई थी?
अरे, यही थी?
चूहें की तलाश में।
.............ओ.................
कहाँ गई थी?
अरे, यहीं थी पास में
....................की तलाश में। **सुशील शुक्ल**

साभार– लेखन की शरूआत – एक संवाद पृ0 सं0–60

इस प्रकार अपनी समझ बनाने के बाद आपको लिखने सिखने की समस्या प्रतीत नहीं होगी। यहीं इसका समाधान भी हैं।

मनन

अपनी कक्षा में करके देखें–

- बच्चों को उन चीजों के बारे में लिखने के लिए कहे जो वे अपने घर में देखते है।
- बच्चों को अपने स्कूल की वे चीजें बनाने के लिए कहें जो उन्हें बेहद पसंद है।
- बच्चों को अपने मन की वह बात लिखने के लिए कहें जो अपने दोस्त से कहना चाहते है।
- बच्चों के काम को देखें और विश्लेषण करें कि बच्चों ने अपने लेखन में क्या–क्या उकेरने की कोशिश की हैं।

(बच्चों से करवाएँ)

पत्र लेखनः— पत्र लेखन एक प्राचीन उपयोगी कला है। पत्राचार का इतिहास तब से मानना चाहिए जब से मनुष्य ने पढ़ना लिखना सीखा। घर से दूर रहने वाले संबंधियों के संबंध में चिंता बनी रहती है। रास्ते में कोई व्यवधान तो उपस्थित नहीं हुआ, कोई दुर्घटना तो नहीं हुई? छोटे भाई की परीक्षा कैसी रही? इत्यादि प्रश्न मस्तिष्क में कौधते रहते हैं और चिंता का कारण बने रहते हैं। ऐसी परिस्थिति में पत्र लिखने या पत्र पाने की आवश्यकता महसूस होती हैं। इस प्रकार के पत्र निजी, घरेलू या पारिवारिक की श्रेणी में आते हैं। (व्याकरण सर्वस्व)

जैसा कि हम जानते हैं कि पाठक वह होता है जो लिखित या मुद्रित सामग्री को पढ़ता हैं। जब हम लिखते हैं तो उसे कोई पढ़ने वाला भी होता हैं। बच्चे अक्सर किसी खास पाठक को ध्यान में रखकर लिखते हैं, जैसे— दादी, नानी छोटी बहन के लिए लिखी गई कविता, कहानी,चिट्ठी आदि लेखन का पाठक किसी भी सामान्य लेखन की प्रक्रिया से इस रूप में थोड़ा सा भिन्न है कि यहाँ हम किसी लक्षित पाठक को ध्यान में रखकर लिखते है, इससे बात लिखने का पूरा अंदाज बदल जाता है। पत्र लेखन के द्वारा बच्चे अपने मनोभावों को सहजता एवं सरलता से व्यक्त करते हैं । अतः षिक्षक का दायित्व है कि वह बच्चों को पत्र लेखन के प्रति उन्मुख करें।

गतिविधि :— कक्षा पाँच के कोंपल में ''चिट्ठी आई'' है पाठ के आधार पर अपने बच्चों से पिता जी को एक पत्र लिखवायें।

कहानी लेखन — जहाँ जीवन है वहाँ कहानी भी अवश्य है। कहानी कहने की परम्परा उतनी ही प्राचीन है— जितना पुराना हमारा जीवन। वर्तमान काल में मनोविज्ञान की नवीन खोजों ने शिक्षा—क्षेत्र में महान् परिवर्त्तन ला दिया है। शिक्षा का केन्द्र बिन्दु शिक्षक नहीं बच्चा होता है। बच्चा को ज्ञान सुरूचिपूर्ण, सरल एवं स्वभाविक रूप से देने में कहानी की महती भूमिका होती है। बच्चा में कहानी कहने एवं सुनने की प्रवृत्ति प्रारम्भिक अवस्था से ही होती है। शिक्षक को बच्चे के वर्तमान जीवन एवं उनके चारों ओर दिखाई पड़ने वाले वातावरण से सम्बद्ध घटना को लेकर कहानी लेखन की ओर प्रवृत्ति करना चाहिऐ। बच्चे निश्चय अपनी स्वभाविक अभिव्यक्ति को व्यक्त करते हुए लेखन कौशलों में प्रवीण होंगे। हम प्रारम्भिक में किसी सरल कहानी को श्यामपट्ट पर कुछ रिक्त स्थानों को छोड़ते हुए लिखेंगे। रिक्त स्थान की पूर्ति बच्चों से पूछ कर करें। जैसे—

एक ....था। वह बहुत........... था। उसे एक ....दिखाई पड़ा। उसमें थोड़ा—सा ....था। आस—पास ....बिखरे थे। उसने ....उठाकर घड़े में डाले। एक बार नही, ...बार डाले। अब .... ऊपर आ गया। वह ....पी कर ....गया। (पानी, प्यासा, कंकड़, पानी, कौआ, कई उड़, कंकड़, घड़ा पानी)

इससे बच्चों में कहानी लेखन की ओर प्रवृत्ति बढेगी। तथा बच्चा भी धीरे—धीरे लेखन कौशलों में निपुणता प्राप्त कर सकेंगे। अपनी मनो भावनाओं को भी व्यक्त कर सकेंगें।

विज्ञापन लेखन— किसी भी वस्तु, विचार एवं संदेशों को अधिकाधिक लोगों के मध्य शीघ्रति—शीघ्र पहुँचाने के लिए हम विज्ञापन का सहयोग लेते हैं। आज जिसमें ऐसे विज्ञापन से सम्बंधित विचारों का निर्माण करने की क्षमता होती है, उसकी माँग सर्वत्र देखी जाती है। विज्ञापन भी लेखन कौशल का एक अंग है। हम बच्चों को प्रारम्भिक काल से ही ऐसे विज्ञापन निर्माण से संबंधित कार्य में प्रोत्साहित कर सकते हैं। जिससे वह लेखन कौशल के साथ—साथ व्यावसायिक रूप से भी उसे निपुण बन सकता है।

व्यावसायिक विज्ञापन का उदाहरण–

(1) ठंडा मतलब कोका कोला

(2) सब बढ़े सब पढ़े–सर्वशिक्षा अभियान

(3) एक बूँद जिन्दगी को बचा सकता है।– पल्स पोलियों अभियान

(4) मतदान हमारा है अधिकार – चुनाव आयोंग

(5) कर लो दुनिया मुट्ठी में – रिलायंस

(6) साथ चलो साथ बढ़ो – सर्व षिक्षा अभियान

इन उदाहरणों की चर्चा से हम छात्रों को ऐसे विज्ञापन लेखन के प्रति उत्साहित कर सकतें है। जिससे उसके लेखन कोशल में वृद्धि होगी।

गतिविधि :– आप जहां कहीं भी रहते हैं। वहाँ तरह–तरह के नाम आपको दुकानों, बसों या मील के पत्थरों और दीवारों पे मिल जाएगें। गाँवों में दीवारों पर लिखे नारे या पोंस्टर और विज्ञापनों में लिखी जानकारी भी काम आ सकती है। बच्चों से कहिये कि वे घर से स्कूल के रास्ते में दिखने वाले नामों, संदेषों, एवं विज्ञापनों की सूची बनायें। सारे नामों को ब्लैक बोर्ड पर लिख कर एक–एक बच्चों से उनकी व्याख्या (यानी वह कहाँ लिखा है, उसका अर्थ क्या है,) करवाइए।

साभार : बच्चों की भाषा और अध्यापक

विभिन्न उद्देष्यों के लिए लिखना – आज हर जगह विविध कार्यों जैसे अनुमति प्राप्त करने, नामांकन कराने में एकाउन्ट खोलबाने के लिए, आरक्षण करवाने के लिए फार्म भरने की आवश्यकता होती है। इस प्रकार दिनचर्या से जुड़ा यह कार्य भी एक लेखन कौशल हैं। विशिष्टता ज्ञात होने के बाद भी लोग गलतियाँ कर लेते है। इस छोटी सी भुल लोगों का होने वाला कार्य रूक जाता है। यदि काम चल भी जाता है तो अधिकारी के आक्षेप से शर्मिन्दगी भी झेलनी पड़ती है। अतः बच्चों को प्रारम्भिक काल से ही इस प्रकार के विभिन्न उद्देष्यों के लिए लेखन कार्य में कुशल बनाने के लिए इसका अभ्यास कराना परमावश्यक हैं। इससे बच्चों की हिचकिचाहट भी दूर होती है एवं लेखन कौशल की प्राप्ति होती है।

गतिविधि : आवेदन का प्रारूप– कक्षा छः में नामांकन सम्बंधी आवेदन प्रपत्र छात्रों से पूर्ण करावें।

4.9 लिखना सिखाने में आने वाली समस्याएँ व उनके समाधान के तरीके : क्या ये वास्तव में समस्याएँ हैं या बच्चों द्वारा सीखने की प्रक्रिया के स्वभाविक चरण ?बच्चों के कार्य पर षिक्षकों/शिक्षिकाओं की प्रतिक्रिया का महत्व और स्वरूप

संसार में जिस किसी भी कार्य को सम्पादित करने हेतु हम प्रयत्नशील होते है, वहाँ छोटी वा बड़ी कोई न कोई समस्या उत्पन्न हो ही जाती है। विवेकशील व्यक्ति अपनी बृद्दि विवेक से उत्पन्न समस्याओं का समाधान करता है, अथवा परिस्थित्यानुकूल सामन्जस्य बैठाने का प्रयत्न करता है।

बच्चें जब पहली बार लेखन कला का क्रिया परिचय प्राप्त कर होते है, तब उनके लिए यह क्रिया अपरिचित सी प्रतीत होता है। शिक्षक/शिक्षका उन्हें वर्णमालादि लेखन कौशल से युक्त करने हेतु प्रत्यन करते रहते हैं। हम उनकी भावनाओं का कद्र न करते हुए उन पर अपने प्रयोगो को थोपना चाहते है । निश्चय ही तब वहाँ समस्या उत्पन्न हो जाती है । यदि हम बच्चों की भावनाओं को ध्यान में रखें , उनके द्वारा खीची गई वेतुकी, बिनाअर्थ की रेखाओं को भी उनके लेखन सीखने का ही अंग स्वीकारें तो निश्चय ही यह समस्या नहीं बच्चों द्वारा सीखने की प्रक्रिया के स्वभाविक चरण प्रतीत होगें। हम अभिभावकों को यह

जनाना अत्यन्त आवश्यक है कि हम बच्चों पर प्रारम्भिक काल में किसी भी क्रिया को थोपने का कार्य ने करें। हमें उनकी भावनाओं व बालमनोविज्ञान को समझना होगा। उनके प्रारम्भिक लेखन का कद्र करते हुए मात्र मार्गदर्शन की भुमिका निभानी होगी।

इस प्रकार से अपना समझ बनाने के बाद आपको लिखना सिखना कभी समस्या प्रतीत नहीं होगा। यह इसका समाधान भी है।

बच्चों के द्वारा कृत कार्य पर षिक्षकों की प्रतिक्रिया अनुदेषन का महत्वपूर्ण अंग हैं। ऐसे बहुत से उदाहरण सुनने–पढ़ने एवं देखने को मिलता है कि किसी व्यक्ति महापुरूष व अन्यान्य लोगों की प्रेरणा से लोग सफलता के षीर्ष तक पहुंच जाते है। इसीप्रकार यह भी देखने को मिलता है लोगों के अनुचित मार्ग दर्षन एवं प्रतिक्रिया से व्यक्ति घर, परिवार, समाज आदि से विमुख हो संन्यासी अथवा आतंकी बन जाता है। एक बच्चा के लिए षिक्षक का निर्देष उसके माता–पिता के निर्देष से अधिक महत्वपूर्ण होता है। बच्चा हमारी बातों को, विचारों को जितनी एकाग्रता से श्रवण कर आत्मसात् करता है उतना किसी अन्य का नहीं। जैसा कि हम पूर्व में चर्चा कर चूके हैं कि एक धावक भी प्रारंभिक काल में घुटनों के बल चलता है अनन्तर धावक बनता है। यदि आरंभिक काल में ही उसे हतोत्साहित कर दिया जाता तो निष्चय ही वह धावक नहीं बन पता। बच्चा जब लेखन के प्रारंभिक काल में आड़ी–तिरछी रेखाओं द्वारा अपनी भावनाओं को व्यक्त करता है तब हमें उसकी भावनाओं का कद्र करते हुए उसे प्रोत्साहित करना चाहिए। हम उसे उसी समय डाँटते–फटकारते हैं तो वह हतोत्साहित हो लिखने से विमुख हो जाएगा।अतः बच्चों के लेखन कार्य पर षिक्षकों की प्रतिक्रिया का महत्व निर्णायक होता है बच्चों के सफल एवं असफल होने में ।

बच्चों के कार्य पर षिक्षकों/शिक्षिकाओं की प्रतिक्रियाओं का महत्व और स्वभाव

प्रायः देखा जाता है कि बच्चों के लेखन पर षिक्षकों की प्रतिक्रिया दो प्रकार की होती है : एक अपने लिए, दूसरा बच्चों के लिए। इसे हम इस चित्र के माध्यम से समझ सकते हैं।

→ Why are you so small?
'No' you are so beautiful
Why are you telling you are not beautiful every one is beautiful

Because I dont get water and I am not beautiful.

you are absolutely right, Nistha I agree.

3|05

एक बार एक औषधशाला थी वो औषधशाला अदरक की औषधशाला उसका नाम रखा था वो उसको हर रोज पानी देता था वो उसको उगाता था गाजर, मूली टमाटर आलू अगर वो हर दमी औषधशाला को पानी देता था एक दिन वो घर से बीज लाया उगाने के लिए मिट्टी को मैदान में उपजाए बीज उगे

गरमी का मौसम

जोब पत्ती बहुत उदास होगई थी।
गरमी से सूरज लाल होके गरम गरम हवा होगई।
पत्ती इसलिए उदास होगई थी
क्यूंकी उसको बहुत गरमी लगी थी

इस उदाहरण में you are absoulutely right, Nistha I agree. यह शिक्षक / शिक्षिकाओं की प्रतिक्रिया है । यहाँ षिक्षक / शिक्षिका बच्चों के लेखन कार्य पर जिस तरह टिप्पणी दे रहे हैं उस पर विचार करने की आवष्यकता है। क्या वे स्वयं भी अपने लेखन में उन्हीं बातों का ध्यान रखते हैं ? अक्सर षिक्षक अपने लिए अलग ही मानदंड बनाते हैं और बच्चों के लिए अलग। षिक्षक स्वयं को बच्चें के कार्य का निर्धारक मानते हैं और उसी के अनुसार कार्य की जाँच करते हैं। उनका ज्यादातर ध्यान विचार अभिव्यक्ति के स्थान पर लेखने यांत्रिक पक्ष पर ही रहता है। इन सब में बच्चों की स्व अभिव्यक्ति खो जाती है।

यह एक विडंबना है कि षिक्षक / शिक्षिका को बच्चों से यह अपेक्षा होती है कि सही आकार में षुद्ध षब्द पंक्तियों के बीच में बिल्कुल स्पष्ट लिखें, पर खुद हम इससे आसानी से छुट पा लेते हैं। दरअसल बच्चें के लिये षिक्षक जिस तरह उसकी कॉपी में लिखते हैं, वहीं आदर्ष होता है। अतः षिक्षक का दायित्व होता है कि उसकी प्रतिक्रियाएँ अनुकूल एवं स्पष्ट षब्दों में हो। प्रायः देखा जाता है कि जब बच्चा कहानी या पत्र आदि लिखता है तो वह अपनी बातों को अभिव्यक्त करना चाहता है। वह यह भी चाहता है कि षिक्षक / षिक्षिका उसके विचार को पढ़े और उसके बारे में कुछ कहें। ऐसे में अगर उसके विचारों को छोड़कर सिर्फ इस बात पर ध्यान दिया जाता है कि बच्चें द्वारा लिखे गए षब्दों की वर्तनी अथवा उसकी वाक्य संरचना ठीक है या नही ंतो बच्चें यह समझने लगते हैं कि उनके विचारों की कक्षा में कोई अहमियत नहीं है। धीरे–धीरे उनके विचारों की मौलिकता और सहजता खत्म होती जाती है और उसकी रचनात्मकता क्षीण हो जाती है। हमारी कक्षा में ऐसा न हो इसके लिए यह जरूरी है कि षिक्षक बच्चों के विचारों को प्रमुखता दें। बच्चों के लेखन में सहभागी हो सकते हैं। जैसे अगर एक बच्चा अपनी कोई कहानी लिखता है तो षिक्षिका / षिक्षक यह लिख सकते हैं कि उस कहानी को पढ़कर उन्हें क्या लगा ? कहानी पढ़कर उन्हें कुछ याद आया ? किसी बात पर हँसी आयी ? किस बात पर दुःख हुआ ? इत्यादि। षिक्षक को चाहिए कि वह बतायें कि उसे बच्चें क`लेखन में क्या पसंद आया ? साथ ही यह भी जरूरी है कि षिक्षक लिखें कि बच्चा अपने लेखन को कैसे बेहतर बना सकता है। षिक्षक अपनी प्रतिक्रिया में ऐसा भी लिख सकते हैं जिससे बच्चों को अपनी लिखी बात आगे बढ़ाने का भी मौका मिलें। इसे समझने के लिए आइये एक उदाहरण देखते हैं।

मनन :–

नीचे दिया गया लेखन एक बच्चें का है जो दूसरी कक्षा में पढ़ता है। आप इसे पढ़िये और बताइये कि एक षिक्षक / शिक्षिका के रूप में आप इस लेखन पर किस प्रकार की प्रतिक्रिया देगें और क्यों ?

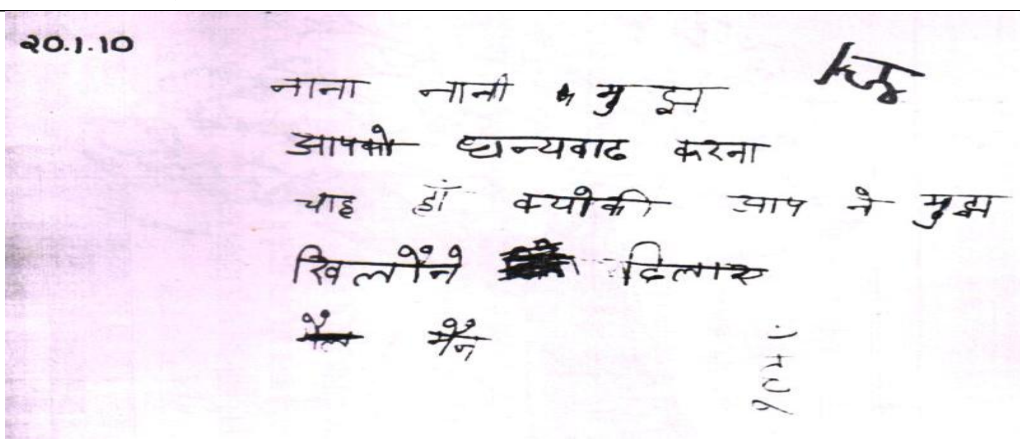
२0.1.10
नाना नानी मुझ
आपको धन्यवाद करना
चाह डॉ क्योंकि आप ने मुझ
खिलौने दिलाए
मैं

साभार : लिखने की शुरूआत एक संवाद।

पहले दिये गए उदाहरण में बच्चा अपने नाना–नानी को धन्यवाद ज्ञापन कर रहा है कि आपने मुझे खिलौने खरीद दिये हैं। इस पत्र में व्याकरण एवं संरचनात्क बहुत सी अषुद्धियाँ हैं। तथापि इसमें बच्चें के कहने का भाव स्पस्ट रूप से प्रतीत हो रहा है। यदि अध्यापक बच्चें के इस पत्र पर साकारात्मक प्रतिक्रिया देते हैं तो बच्चों में आत्मविष्वास बढ़ेगा। धीरे–धीरे उसके अनुभवों एवं स्व वर्तनी में भी सुधार होगा। सबसे खास बात यह है कि हमें लेखन के साथ–साथ पढ़ने के अवसरों को भी साथ लेकर चलना है क्योंकि ये क्रमबद्ध प्रक्रियाएँ नहीं बल्कि एक–दूसरे में गुँथी हुई प्रक्रियाएँ हैं जो एक–दूसरे पर गहरा प्रभाव डालती है।

मनन :–

नीचे दिया गया लेखन अध्यापक/अध्यापिका की प्रतिक्रिया है जो उन्होनें दूसरी कक्षा में पढ़ने वाले बच्चा के लेखन पर की है। वह बच्चा द्वारा नाना–नानी को लिखे गए पत्र पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर रहे हैं। आप बच्चा के नाना–नानी के पत्र पर किस प्रकार की प्रतिक्रिया देंगे।

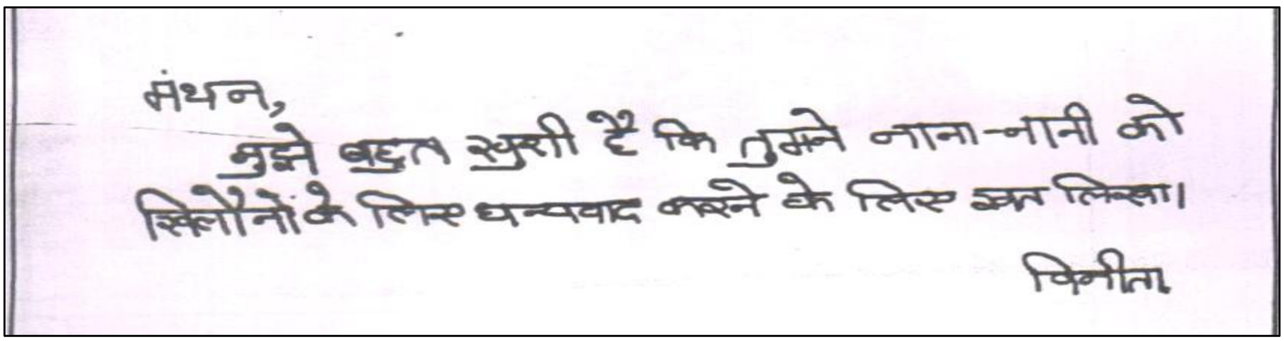
संथन,
मुझे बहुत खुशी है कि तुमने नाना-नानी को खिलौनों के लिए धन्यवाद करने के लिए पत्र लिखा।
विनीता

उपर्युक्त लेखन अध्यापक की प्रतिक्रिया है जो उन्होने दूसरी कक्षा में पढ़ने वाले बच्चे के लेखन पर दी है। बच्चा द्वारा नाना–नानी को लिखे पत्र पर अपनी प्रतिक्रिया उत्तम, अतिउत्तम,अच्छा, बहुत अच्छा, हववकएटमतल हववक नहीं देकर इस प्रकार देते हैं।यहाँ अध्यापक बच्चों की भावनाओं का सम्मान करता है, जो त्रुटियाँ बच्चों के द्वारा की गई थी, उसके लिए किसी प्रकार की प्रतिक्रिया नहीं दी गई। हाँ इतना जरूर किया कि जो भाव बच्चा क्रमबद्ध तरीके से कहने में असमर्थ था, अध्यापक ने उसे प्रतिक्रिया में ही व्यक्त कर दिया है। अध्यापक ने लिखने के तरीके को भी प्रतिक्रिया में ही व्यक्त करना अच्छा समझा, इसके लिए बच्चों को किसी भी प्रकार का निर्देष नहीं दिया। वस्तुतः अध्यापकों को ऐसी ही प्रतिक्रिया देनी चाहिए। जिससे निष्चय ही बच्चों में आत्मविष्वास का संचार होगा। आत्मविष्वास से पूर्ण बच्चा लेखन की प्रारंभिक अवस्था(आड़ी–तिरछी लेखन) से प्रारंभिक लेखन की क्षमता को षीघ्र ही सुगमतापूर्वक प्राप्त कर सकेगा। बच्चा लिखने में आने वाली समस्याओं से कभी भयभीत नहीं होगा। वह सहजतापूर्वक विविद चरणों को पार करते हुए भविष्य मे अच्छा लेखक बन सकेगा। यही तो लेखन का उद्देष्य भी है।

लेखन के संबंध में विभिन्न गतिविधियों, विषयों, उदाहरणों को पढ़ा । जिसमें एक भाव सर्वत्र है कि लेखन की विकास की प्रक्रिया में बच्चे /बच्चियों के अनुभव संसार को महत्वपूर्ण माना गया है । लिखने का मतलब यह नहीं कि किसी भी विषय पर लिखने की क्षमता हासिल करना, अपितु लिखने का मतलब यह है कि हम जो लिखना चाहते हैं उसे स्वानुभव द्वारा उत्तम तरीके से लिख सकें। हम विविध भाषाओं के रचनाकारों यथा कालीदास, विद्यापति, भूषण, प्रेमचंद, महादेवी, नागार्जुन आदि के काव्य कृतियों को पढ़ते हैं तो क्रमशः प्रकृति सौन्दर्य, भक्ति एवं सौन्दर्य, सामाजिक कुरीतियों का विरोध, वीरता, वेदना, सामाजिक

शोषण के विरुद्ध विद्रोह इत्यादि का दिग्दर्शन होता है जो उनकी रुचि एवं अनुभव का परिणाम है। यहाँ प्रश्न है कि यदि इन साहित्यकारों को उनके अनुभव के विपरीत अथवा अनुभवरहित विषयों पर लिखने को कहा जाता तो क्या वे उसी प्रकार की रचना करते जिस प्रकार की उन्होनें की ? इसका उत्तर नहीं ही होगा। क्या उन्हें लिखना नहीं आता ? फिर क्यों नहीं लिख सकते ? इसका सामान्य सा उत्तर है कि वह विषय जो उनके अनुभवजन्य नहीं है उस पर वे स्वाभाविक, सहज एवं सरस रचना का निर्माण नहीं कर सकते हैं । जब महान् कवियों के विषय में हम ऐसा सोचते हैं तो बच्चों के विषय में हम क्यों नहीं सोचते ? हम क्यों बच्चों के लेखन में उनके अनुभव, रुचि एवं अनुभूति का अवधान नहीं रखते हैं ।

हम शिक्षकों /शिक्षिकाओं एवं अभिभावकों का दायित्व है कि हम बच्चे/बच्चियों उनके अनुभवों को सम्मिलित करें। इस प्रकार यदि हम बच्चों/बच्चियों के अनुभव आधारित लेखन को प्रोत्साहित करेंगे तो निश्चय ही बच्चे /बच्चियों के लेखन कौशलों में विशेषज्ञता प्राप्त कर श्रेष्ठ रचनाकार बन सकते हैं। हमें अपने इस कर्त्तव्य का निर्वहन निश्चय ही करना चाहिए ।

मनन :1. बच्चा द्वारा नाना–नानी को लिखे गये पत्र पर अध्यापक/अध्यापिका द्वारा की गई प्रतिक्रिया कैसी प्रतिक्रिया है। आप बच्चों के पत्र पर कैसी प्रतिक्रिया देगें ?
2. बच्चों/बच्चियों के द्वारा स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर अनुभव आधारित एक लेख पर आप किस प्रकार की प्रतिक्रिया देंगे।

4.10 सारांश

- लिखने की प्रक्रिया वाचिक व्यवस्था को स्थायित्व प्रदान करते हैं। बच्चों की आड़ी–तिरछी लकीरें पढ़ने–लिखने की प्रक्रिया का एक बेहद जरूरी हिस्सा है।
- लिखना भावाभिव्यक्ति का ही साधन है।
- बालकों को लिखना सिखाने से पहले उनमें लेखन सम्बन्धी जिज्ञासा उत्पन्न करना आवष्यक है।
- उच्चरित ध्वनियों को प्रतीक चिन्हों के रूप में व्यक्त करना ही लिखना कहलाता हैं।
- प्रारंभिक समय में बच्चों की तिकोनी रेखाएँ अभिव्यक्ति का एक माध्यम होती है।
- जहाँ बच्चों के प्रारंभिक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहन एवं सम्मान मिलता है। वहाँ बच्चा लेखन कौषल के अन्यान्य बिन्दुओं को पार. करते हुए अच्छा लेखन कौषल प्राप्त करता है।
- श्रुतलेख सुनकर समझने और एक निष्चित गति में लिखने की अभ्यास के लिए आवष्यक हैं।श्रुतलेख से वर्तनी का परीक्षण हो सकता है षिक्षण नहीं।
- षिक्षा का केन्द्र बिन्दु षिक्षक नहीं बच्चा होता है।
- बच्चा को ज्ञान सुरूचिपूर्ण सरल एवं स्वभाविक रूप से देने में कहानी की महती भूमिका होती हैं।
- किसी भी वस्तु, विचार एवं संदेषों को अधिकाधिक लोगों के मध्य षीघ्रातिषीघ्र पहुँचाने के लिए विज्ञापन का सहयोग लेते हैं।
- 'लिखना' भी एक तरह का संवाद है जिसमें हम अपने मन की बातों को लिखकर अभिव्यक्त करते हैं।

- षुरूआती पढ़ना–लिखना विद्यालयी जीवन के षुरूआती वर्षों यानी कक्षा एक और दो में पढ़ने–लिखने की प्रक्रियाओं के बारे में चर्चा करता है।
- यदि बच्चों को षुरू से पुस्तकों के सम्पर्क में रखा जाय तो वे अपेक्षाकृत बेहतर तरीके से पढ़ना–लिखना सीख सकेगें।

4.11 स्व–मूल्यांकन :–

1. लिखना क्या है, इसका क्या महत्व है? सविस्तार लिखे।
2. लिखना एक तरह से बात–चीत है कैसे ? अपने षब्दों में व्यक्त करें।
3. लिखने का विकास कहाँ से प्रारंभ होता है?
4. आपकी दृष्टि में अर्जुन का चित्र लेखन का कैसा स्वरूप है?
5. प्रारभिक वर्ग के बच्चों के लिए उनकी जिन्दगी से जुड़ी अनुभवों को उनके लेखन में क्यों सम्मलित करना चाहिए ?
6. पढ़ना–लिखना में क्या संबंध है ?
7. लेखन कौषल के विविध तरीके कौन–कौन से हैं ? प्रारंभिक कक्षा में उसकी उपयोगिता क्या है?
8. एक षिक्षक के रूप मे बच्चों के प्रारंभिक लेखन पर आपकी प्रतिक्रिया कैसी होगी ?
9. लिखना सिखाने आने वाली समस्या बच्चों द्वारा सीखने की प्रक्रिया के स्वाभाविक चरण हैं कैसे?

4.12 संदर्भ

- लिखने की षुरूआत– एक संवाद
- बच्चे की भाषा और अध्यापक एक निर्देषिका
- व्याकरण सर्वस्व
- हिन्दी षिक्षण डा0 राम सकल पाण्डेय
- अंकुर– भाग 1 एवं 2, एस.सी.ई.आर.टी, पटना
- कोंपल– भाग 1, 2 एवं 3, एस.सी.ई.आर.टी, पटना
- बिहार की पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2008, एस.सी.ई.आर.टी, पटना
- पढ़ने की दहलीज पर– प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी, दिल्ली
- पढ़ना सीखाने की षुरूआत
- नन्हा राजकुमार
- भाषा शिक्षण, सिद्धांत और प्रतिधि, मनोरमा गुप्त, 1985 केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा
- रिमझिम (भाग 1 से 5), एन.सी.ई.आर.टी, दिल्ली

इकाई–5
सीखने की योजना और कक्षा प्रकियाएँ

5.1 परिचय
5.2 उद्देश्य
5.3 पूर्व अनुभव
5.4 सीखने की योजना का अर्थ, आवश्यकता एवं महत्व
 5.4.1 पाठयोजना का अर्थ
 5.4.2 आवश्यकता और महत्व
5.5 सीखने की योजना का प्रारूप एवं विवरण
5.6 रचनात्मक शिक्षण उपागम और सीखने की योजना
5.7 सीखने की योजना और रचनात्मक कक्षा प्रकियाओं में संबंध
5.8 सारांश
5.9 स्वमूल्यांकन
5.10 संदर्भ

5.1 परिचय

बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के लिए एक अच्छी योजना का होना आवश्यक है। अच्छी योजना का तात्पर्य है जो विद्यार्थी को सीखने –सिखाने, उसे आगे की अवधारणाओं पर ले जाने के लिए दिशा देती है। योजना विद्यार्थी का सीखना सुनिश्चित करती है तथा भटकाव को रोकती है। जब शिक्षण की योजना बनाते हैं तो प्रत्येक विद्यार्थी की छवि, सामने होती है। इससे उसकी जरुरतों समस्याओं पर विचार करते हुए उसके संभावित समाधान को योजना में सम्मिलित किया जा सकता है। योजना बनाकर किए गए काम की समीक्षा हो सकती है तथा जिन समस्याओं के समाधान पूर्व में बनाई हुई योजना से नहीं हुए तो शिक्षक अपनी योजना के काम की समीक्षा करके उसे ठीक कर सकते हैं। इस प्रकिया में शिक्षक को अपना मूल्यांकन करने का अवसर भी मिलता है। बच्चों के साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षण के लिए एक मजबूत योजना की आवश्यकता होती है जिसे कक्षाकक्ष की प्रकिया में पाठ योजना के नाम से जानते हैं।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप

- प्रशिक्षु सीखने की योजना का अर्थ, आवश्यकता एवं महत्व के बारे में समझ सकेंगें।
- रचनात्मक शिक्षण उपागम और पाठ योजना के बारे में समझ सकेगें।
- पाठ योजना और रचनात्मक कक्षा प्रक्रियाओं के संबंध के बारे में समझ बना सकेंगें।

5.3 पूर्व अनुभव

सामान्यतः किसी भी कार्य को करने से पूर्व हम एक योजना अवश्य बना लेते हैं चाहे वह योजना अपने मस्तिष्क में बनाते हैं या फिर लिखित तौर पर उस योजना का निर्माण करते हैं। जैसे हम यदि बाजार से सामान खरीदने जाते हैं तो पहले उन सामानों की सूची बना लेते हैं या उन सामानों को मस्तिष्क में बैठा लेते हैं। सूची बनाते समय हम कई बातों को ध्यान में रखते हैं जैसे –

- बजट
- किस दुकान से सामान खरीदना है
- कितनी देर में सामान खरीद लेना है । (समय)
- किस उत्पाद या कम्पनी का सामान खरीदना है।
- किस वाहन से बाजार जाना है।......................आदि।

इस योजना के निर्माण के बाद हम थैला लेकर बाजार के लिए निकल जाते हैं। घर से बाजार जाने, सामान खरीदने और सामान खरीदकर घर लौटने तक हम अपने द्वारा बनाई गई योजना का क्रमबद्ध रुप से पालन करते हैं। किसी भी योजना की रीढ़ होती है क्रमबद्धता । बिना क्रमबद्धता के कोई योजना सफल नहीं होती जैसे यदि हम बाजार जाकर ये सोचें की हमें क्या–क्या खरीदना है तो क्या हम सफल हो पायेंगें? शायद नहीं क्योंकि उस समय सामान की सूची बना पाना मुश्किल हो जाएगा खरीदारी की सारी प्रकिया उलट पुलट हो जाएगी ।

ठीक उसी प्रकार किसी पाठ को पढ़ाने के पूर्व शिक्षक :–

- किस पाठ को पढ़ाना है
- किस प्रकार पढ़ाना है
- क्या पढ़ाना है
- किन्हें पढ़ाना है

आदि की योजना बना लेता है। पाठ से संबंधित इसी योजना को पाठ योजना कहते हैं।

मननः– प्रश्नः– यदि आपको अपने विद्यालय के लिए पौधे खरीदने हैं आप क्या योजना बनाऐगें ? क्रमबद्ध तरीके से लिखें और इस बात का वर्णन भी करें कि यदि किसी चरण में इस क्रमबद्धता को भंग कर दिया जाए तो क्या – क्या मुश्किलें सामने आएगीं।

5.4 सीखने की योजना का अर्थ आवश्यकता एवं महत्व

5.4.1 सीखने की योजना का अर्थ

शिक्षण का काम एक औपचारिक काम है। इसमें अनेक प्रकार की औपचारिकताऍं शामिल होती हैं । इसका संबंध समय, स्थान, विषय वस्तु , पाठ्यक्रम की मात्रा तथा क्रमबद्धता आदि से होता है। इनके कारण किसी भी शिक्षक या शिक्षिका के लिए यह जरुरी हो जाता है कि कक्षा में जाने से पहले योजना बनाकर जाऍं योजना की तैयारी के लिए कुछ सवालों पर विचार करना मददगार हो सकता है।

- क्या पढ़ना है
- किन्हें पढ़ना है

- कहाँ पढ़ना है
- कब पढ़ना है
- क्यों पढ़ना है

आदि ऐसे सवाल हैं जिन्हें योजना बनाते समय स्वयं से पूछा जाना जरुरी है।

पाठ योजना का अर्थ यह नहीं है कि योजना के बाहर के किसी विषय या विचार को कक्षा में स्थान नहीं मिलेगा। इसका मतलब यह है कि शिक्षक या शिक्षिका विषय के संबंध में जरुरी तैयारी करके जाएँगे लेकिन उस योजना में उतना लचीलापन अवश्य हो ताकि जिन जरुरी बातों को विद्यार्थी कक्षा में रखना चाहते हैं वे उन्हें रख सके । साथ ही उन बातों के लिए भी उसमें जगह जो शिक्षक या शिक्षिका यह भी समझें कि योजना सरल रेखा में न बनकर वृत्ताकार होती है यानि उसे तैयारी से शुरु हो कर तैयारी पर ही खत्म होना चाहिए।

5.4.2 सीखने की योजना की आवश्यकता एवं महत्व :–

पाठ योजना के अर्थ को समझने से पूर्व यदि हम योजना के अर्थ को समझ लें तो पाठ योजना के अर्थ एवं महत्व को समझना आसान होगा। किसी भी कार्य को पूरा करने के लिए हम योजना का निर्माण करते हैं। बिना योजना के किया गया कार्य समुद्र में बिना पतवार की नाव की तरह होता है। जिस प्रकार बिना पतवार की नाव समुद्र में गलत दिशा में भटक जाती है वैसे ही बिना योजना के किया गया कार्य दिशाविहीन होता है और दिशाविहीन किया गया कार्य कभी लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता और यदि लक्ष्य की प्राप्ति ही न हो तो कोई भी कार्य व्यर्थ हो जाता है और उसके पीछे की गई मेहनत भी बेकार जाती है। अतः हमारी शिक्षा प्रकिया जिसका स्वरुप काफी वृहद है वो बिना योजना के कैसे पूर्ण हो सकता है।

हम जानते हैं कि स्कूल एक औपचारिक संस्था है। इसमें समय पाठचर्या, पाठ्यक्रम, आकलन की सीमा तथा पैमाने इसकी औपचारिकता के संकेतक हैं। क्या तथा कितना पढ़ाया जाना है । इसकी रुपरेखा किन्हीं औपचारिक स्तरों पर तय की जाती है। क्या और कितना पढ़ाया जाना है में एक क्रमबद्धता भी पाई जाती है । इसलिए जरुरी हो जाता है कि कक्षा में जाने से पहले विचार किया जाए कि जिस पाठ या विचार पर चर्चा होनी है वह पाठ्यक्रम में किस विचार से पहले तथा किसके बाद आता है। ताकि उससे पहले तथा बाद वाली बातों के साथ उसका संबंध जोड़ा जा सके ।

सीखने की योजना की आवश्यकता के आधार

- बच्चे की आवश्यकता के अनुभवों में विविधता–हम जानते हैं कि अनुभवों का संबंध जगह तथा वातावरण की ऐतिहासिकता, संस्कृति, अर्थव्यवस्था, सामाजिक स्तरों, भेदभाव के स्तरों आदि से होता है। क्योंकि भिन्न जगहों तथा वातावरणों की ऐतिहासिकता इत्यादि अलग अलग होती है इसलिए उनमें जीने वाले के अनुभव भी भिन्न होते हैं। यही तथ्य बच्चे–बच्चियों के अनुभवों के बारे में भी पाया जाता है । पाठ योजना बनाना आवश्यक है ताकि बच्चे बच्चियों के विविध अनुभवों में से दिए गए पाठ या विचार के संदर्भ मे संगत अनुभवों को उस कक्षा प्रकिया का हिस्सा बनाया जा सके।

- घर तथा स्कूल के वातावरण में अंतर का होना सीखने की योजना बनाने का एक आधार है। घर में किसी बच्चे या बच्ची के आसपास व्यस्कों की संख्या स्कूल की तुलना में अधिक होती है। साथ ही व्यस्क तथा बच्चे–बच्चियों एक दूसरे की जरुरतों आदतों, परंपराओं, इशारों से परिचित होते हैं तथा उनका उपयोग एक दूसरे को समझने और स्वयं को व्यक्त करने में करते हैं। स्कूल में शिक्षक शिक्षिका तथा बच्चे बच्चियों के

बीच इस प्रकार की पहचान बननी होती है । इसलिए जरुरी हो जाता है कि उन बातों को आधार बनाया जाए जो दोनों के बीच अपेक्षाकृत अधिक समझे संसार की रचना करती है। किसी पाठ विशेष के संदर्भ में यह सोचना और भी सार्थक होता है कि उस पाठ के बारे में बेहतर समझ बनाने में किन अनुभवों को सेतु के रुप में इस्तेमाल किया जाए।

- पाठ्यक्रम की क्रमबद्धता तथा विस्तार की सीमाः— हम जानते हैं कि स्कूल एक औपचारिक संस्था है। इसमें समय, पाठचर्या, पाठ्यक्रम, आकलन की सीमा तथा पैमाने इसकी औपचारिकता के संकेतक हैं । क्या तथा कितना पढ़ाया जाना है । इसकी रुपरेखा किन्हीं औपचारिक स्तरों पर तय की जाती है क्या और कितना पढ़ाया जाना है में एक क्रमबद्धता भी पाई जाती है । इसलिए जरुरी हो जाता है कि कक्षा में जाने से पहले विचार किया जाए कि जिस पाठ या विचार पर चर्चा होनी है वह पाठ्यक्रम में किस विचार से पहले तथा किसके बाद आता है । ताकि उससे पहले तथा बाद वाली बातों के साथ उसका संबंध जोड़ा जा सके ।

- समय सीमाः समय सीमा से अभिप्राय यह है कि तय की गई योजना को कितनी समय सीमा के अन्दर प्राप्त कर लेना है/पूर्ण कर लेना है।

- दिए गए समय तथा स्थान पर शिक्षक / शिक्षिका द्वारा अपने चयनित अनुभवों का उपयोग कर पाने की बंदिश।

मननः— प्र. 1 :— एक शिक्षक /शिक्षिका को कक्षा में जाने से पूर्व पाठ योजना बनाना आवश्यक क्यों है?

सीखने की योजना से लाभ एवं उसकी उपयोगिता

सफल शिक्षण, शिक्षण विधियों, शिक्षण सूत्रों एवं शिक्षण युक्तियों के ज्ञान पर निर्भर करता है। परंतु कक्षा शिक्षण के पूर्व सीखने की योजना बना लेना आवश्यक है। शिक्षक को विचार कर लेना चाहिए कि

- क्या पढ़ाना है।
- किन उद्देश्यों को प्राप्त करना है।
- अमुख विषय पढ़ाने के क्या लक्ष्य हैं।
- कितना समय है।
- विद्यार्थियों की क्या क्षमताएँ हैं।
- विषय से संबंधित उनका पूर्व अनुभव और पूर्व ज्ञान क्या है।
- कौन सी सहायक सामग्री लाभप्रद होगी
- विषय को किस प्रकार प्रस्तुत किया जाए।
- छात्रों को कैसे अभिप्रेरित कर उनका सहयोग प्राप्त किया जाए ।

उपरोक्त सभी बिन्दुओं पर विचार कर पाठ की तैयारी करनी चाहिए।
पाठ योजना शिक्षण प्रकिया का अनिवार्य अंग है।
इसमें

- नियोजन अर्थात लक्ष्यों का निर्धारण
- संगठन लक्ष्य के प्राप्त करने हेतु प्रभावशाली, कुशल एवं मितव्ययी व्यवस्था
- मार्गदर्शन अर्थात् छात्रों को अभिप्रेरित और उत्साहित करना।

सीखने की योजना के निम्नलिखित लाभ एवं उपयोगिता हैं:–

i .नियोजित पाठ से शिक्षण का कार्य उद्देश्यपूर्ण होता है अर्थात पाठ के उद्देश्यों एवं लक्ष्यों को स्पष्ट करके शिक्षण उसी के अनुरुप होता है।

ii.नियोजित पाठ पढ़ाने से शिक्षक के अंदर आत्मविश्वास का संचार होता है और वह कक्षा में धैर्य एवं विश्वास के साथ शिक्षण करने में तत्पर रहता है।

iii.विद्यार्थियों की समझ के बारे में अनुभव आधारित अनुमान शिक्षक को हो जाता है और उसी के अनुकूल शिक्षण करना सरल हो जाता है।

iv. पाठ नियोजित करते समय शिक्षक को ध्यान रखना चाहिए कि वह जिन बातों के लिए पाठ योजना बना रहा है उसे विद्यार्थियों के जीवन से कैसे जोड़ा जाय।

v.नियोजित पाठ से शिक्षकों को पाठ सामग्री का वर्गीकरण एवं समायोजन करने में सहायता मिलती है। इससे पाठ का विकास सुव्यवस्थित एवं तर्कसंगत हो जाता है।

vi.कक्षा में कितना समय उपलब्ध है, उसका सदुपयोग एवं कक्षा कार्य कराने के लिए उचित अवसर का आभास शिक्षक होना चाहिए।

vii.नियोजित पाठ से शिक्षक को शैक्षिक मूल्यों से जुड़े प्रेरणादायक प्रश्नों को पूछने का अवसर मिल जाता है।

viii.नियोजित पाठ से शिक्षक को शैक्षिक उपकरणों की व्यवस्था एवं उपयोग करने में सहायता मिलती है। इससे पाठ सरल, सरस और रुचिकर ढंग से प्रस्तुत किया जाता है।

ix.नियोजित पाठ का विकास योजनानुसार सुचारु रुप से होता है।

x .नियोजित पाठ से शिक्षक को विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विभिन्नता का ज्ञान हो जाता है जिससे वह कक्षा में अधिक से अधिक विद्यार्थियों को सक्रिय बनाए रखता है।

xi. सीखने की योजना बनाते समय शिक्षक अगले पाठों को भी क्रमबद्ध संगठित कर लेता है।

xii. पाठ योजना से शिक्षक को विद्यार्थियों के ज्ञान को धारण करने के मूल्यांकन में सहायता मिलती है और कहाँ कहाँ असफल होने की सम्भावना है, उसे दूर करने में भी नियोजन से सहायता मिलती है।

xiii.नियोजित पाठ से शिक्षकों को अप्रासंगिक निष्कर्षहीन वाद –विवाद और बेमेल व्याख्यान से बचने में सहायता मिलती है।

सीखने की योजना से पूर्व की तैयारी

1.शिक्षा के उद्देश्यों एवं प्रस्तुत प्रकरण के लक्ष्यों पर विचार कर लिख लेना चाहिए ताकि पाठ इसी दिशा में बढ़ता रहे ।

2.पाठ्य सामग्री को स्पष्टता एवं पूर्णता से संबंधित तथ्यों, प्रसंगों, सूचनाओं की कक्षा में उठने वाली समस्याओं को ज्ञात कर लेना चाहिए।

3.शिक्षक को पाठ्य योजना बनाने के पूर्व छात्रों की प्रवृति, शैक्षिक स्तर सम्बन्धी ज्ञान, मानसिक योग्यता, ग्रहण शक्ति, रुचि एवं मनोवृत्तियों का अनुमान कर लेना चाहिए। उसी के अनुसार शिक्षण करना लाभकारी होगा।

4. सरलतापूर्वक पढ़ाने की कई पाठ्य योजनाएँ बन सकती हैं । इसलिए शिक्षक को ध्यान रखना चाहिए कि वह पाठ्य योजना का निर्माता है दास नहीं । उसे कक्षा की तात्कालिक आवश्यकतानुसार योजना में थोड़ा परिवर्त्तन भी करना पड़ सकता है।

5.पाठ्य योजना को केवल मौखिक रुप से विचार कर लेना पर्याप्त नहीं है बल्कि पाठ्य योजना लिखित रुप में होना चाहिए ।

सीखने की योजना निर्माण की सावधानियाँ

हिन्दी शिक्षक को पाठ योजना तैयार करते समय कुछ बातों पर विशेष महत्व देना चाहिए :–

1 हिन्दी शिक्षण में मौखिक, मानसिक और लिखित कार्य साथ साथ मिलना चाहिए।

2 हिन्दी शिक्षण से विद्यार्थियों में समस्या की व्याख्या करने और परिकल्पना करने की योग्यता आनी चाहिए।

3 शिक्षक को विद्यार्थियों के मध्य भाषा की समस्या इस प्रकार रखनी चाहिए कि छात्र सूक्ष्म बातों पर ध्यान दें और समस्या का हल स्वयं निकालें।

4 पाठ –योजना इस प्रकार तैयार की जाए कि समस्या का हल विद्यार्थी विश्लेषण की मानसिकता से कार्य करें और उनकी आदत बन जाए।

5 सीखने की योजना निर्माण इतनी सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए कि विद्यार्थी उस पाठ से स्वयं को जोड़ सके।

6साहित्य का ज्ञान सत्य एवं तथ्यात्मक के आधार पर निर्भर करता है । विद्यार्थियों में कल्पना शक्ति का विकास एवं रस के भावों को महसूस करने की क्षमता उत्पन्न करना भी पाठ – शिक्षण का मूल उद्देश्य होना चाहिए।

मनन

प्रश्नः– पाठ योजना के लाभ एवं उसकी उपयोगिता का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
प्रश्नः– आपके अनुसार पाठ योजना में कौन–कौन सी बातें सम्मिलित होनी चाहिए?

5.5 सीखने की योजना का प्रारूप एवं विवरण

सीखने की योजना
Learning Plan

शिक्षक/शिक्षिका का नाम :			
कक्षा :	**कालांश :**		**तिथि :**
विषय :		**इकाई :**	
विषयवस्तु :			

विषयवस्तु से संबंधित पुर्व समीक्षा	(शिक्षण से पहले किया जानेवाला कार्य)
नये विषयवस्तु की चर्चा शुरू करनी है ☐	पिछले कालांश के विषयवस्तु का विस्तार करना है ☐
यह विषयवस्तु इस कक्षा के पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रम में उल्लेखित किन उद्देश्यों/बिन्दुओं से जुड़ा हुआ है	
क्या यह विषयवस्तु पूर्ववत कक्षाओं के पाठ्यक्रम में भी शामिल है? कैसे :	
क्या मैने इस विषयवस्तु का शिक्षण पहले किया है? हाँ ☐ नही ☐	
यह विषयवस्तु इस कक्षा के और किन–किन विषयों/इकाइयों से जुड़ा है :	
कक्षा के विद्यार्थियों के पास इस विषयवस्तु से संबंधित क्या आधारभूत समझ हो सकती है : बहुत कम ☐ थोड़ा–बहुत ☐ बहुत–अधिक ☐	
विषयवस्तु/उप विषयवस्तु का विवरण : (संक्षिप्त परिचय तथा क्या महत्वपूर्ण है इसमें?)	

सीखने–सिखाने की विधि/विधियां :	कुछ सुझावात्मक उदाहरण	
....	सामूहिक चर्चा	प्रयोग
....	समूह कार्य	खोज
....	एकल कार्य	खेल
	पठन–लेखन	रोल–प्ले

विधि/विधियों को क्यों चुना गया : (शिक्षाशास्त्रीय चयन का आधार/Pedagogical basis)

....

....

....

....

सीखने की विधि/विधियों तथा शिक्षाशास्त्र का संक्षिप्त विवरण (शिक्षण से पहले किया जानेवाला कार्य)	
योजना	*ध्यान में रखने योग्य समावेशी बिन्दु*
....	• क्या बच्चों के संदर्भ को ध्यान में रखा गया है? आप किसप्रकार के उदाहरणों को प्रस्तुत करेंगे। • बच्चों को स्वयं से सीखने का कितना अवसर है? उन्हें सवाल पुछने का कितना अवसर है? • सीखने–सिखाने का समयानुपात क्या है? एक कालांश का कितना समय शिक्षक के सक्रिय निर्देशन में है और कितना समय बच्चों को स्वतंत्र चिंतन व कार्य करने के लिए दिया गया है। • क्या चर्चा में समाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, आदि मुद्दों को शामिल करने की संभावना है? • एन.सी.एफ.–2005 व बी.सी.एफ.–2008 के सुझाए बिन्दुओं का कितना ध्यान रखा गया है? • क्या योजना में सामाजिक व संवैधानिक मुल्यों को समाहित करने की संभावना है? • क्या सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की कोई प्रक्रिया भी साथ–साथ चल रही है? • इस योजना के क्रियांवयन में आपको क्या–क्या चुनौतियां आ सकती हैं? • इस योजना में कितना लचीलापन है, अर्थात कक्षा के माहौल के हिसाब से इस योजना में बदलाव की कितनी संभावना हो सकती है। • क्या योजना में जेण्डर संवेदनशीलता का ध्यान रखा गया है।

शिक्षक/शिक्षिका द्वारा स्वमूल्यांकन के सुझावात्मक बिन्दु (शिक्षण के बाद किया जानेवाला कार्य)
क्या विद्यार्थी ने उन उद्देश्यों को समझा जिसके लिए यह विषयवस्तु थी? इसका मूल्यांकन किया कि नहीं। ....
क्या इस विषयवस्तु को फिर से कक्षा मे चर्चा करने की आवश्यकता है? क्यों या क्यों नहीं? ....
विद्यार्थियों द्वारा पूछे गए प्रमुख सवाल क्या थें? कितने विद्यार्थियों ने सवाल पूछें? ....
मैने उन सवालों को कैसे समझाया? क्या विद्यार्थियों से स्वयं उन सवालों को हल करने का मौका मिला? ....
इस विषयवस्तु के सीखने–सिखाने में किस प्रकार के संसाधनों का प्रयोग किया गया? उनकी क्या उपयोगिता रही? ....
इस विषयवस्तु को यदि दुबारा पढ़ाना हो तो मैं सीखने–सिखने की योजना में क्या बदलाव करूंगा/करूंगी। ....
इस विषयवस्तु से संबंधित कोई ऐसा सवाल जिसे अपने संस्थान के विषयविशेषज्ञ तथा मेंटर से चर्चा करना की अपेक्षा है। ....
कोई अन्य टिप्पणी ....

मेंटर/अवलोकनकर्ता की टिप्पणी	(शिक्षण के दौरान किया जानेवाला कार्य)
अवलोकनात्मक बिन्दु	कक्षा में प्रत्यक्ष रूप से आपने जो अवलोकित कर रहे हैं उसे नीचे लिखें। ....

सीखने की योजना

सीखने की योजना का मूल उद्देश्य है शिक्षार्थियों में भाषायी कुशलताओं एवं क्षमताओं का विकास। आगे बढ़ने से पहले यह आवश्यक है कि एक बार हम हिन्दी शिक्षण (प्राथमिक स्तर पर) के उद्देश्यों को पुनः स्मरण कर लें जिसकी संप्राप्ति हेतु भाषायी कुशलताओं एवं क्षमताओं की अपरिहार्यता या प्रौढ़ता आवश्यक है। प्राथमिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण के उद्देश्य को दो भागों में बाँटकर देखते हैं, पहला वर्ग–I एवं II तथा दूसरा वर्ग–III एवं IV एवं V।

वर्ग–I एवं II के भाषा शिक्षण के उद्देश्यः–

- विद्यार्थियों में अपने अनुभवों और विचारों को बताने की इच्छा और उत्सुकता जगाना।
- दूसरों की बात सुनने में रूची और धैर्य उत्पन्न करना और उनसे सुनी बात पर प्रतिक्रिया देना।
- वर्णों, संयुक्ताक्षर और मात्राओं की समझ एवं उनका विभिन्न कौशलों में सफलता पूवर्क उपयोग।
- अपनी दुनिया तथा अपने पूर्व ज्ञान की मदद से पाठ्य सामग्री और स्कूली परिवेश में उलपलब्ध लिखित सामग्री से अर्थग्रहण करना।
- चित्रकला को स्वंय की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाना।
- लिपि चिन्ह्नों को देखकर समझते हुए पढ़ने और लिखने का कौशल विकसित करना।
- सरल कहानियों और कविताओं को समझते हुए मजे के साथ पढ़ना।
- अनुमान लगाने की क्षमता का विकास करना।

वर्ग–IV, IV एवं V

- वर्ग–I एवं III में अर्जित भाषायी कौशलों का उत्तरोत्तर विकास करना विभिन्न ध्वनियों को सुनकर उनमें अंतर करने की योग्यता विकसित करना, यथा– अ–आ, छ–क्ष, र–ड़, ढ–ढ़, न–ण आदि।
- सरल कहानियों, संवादों, कविताओं आदि द्वारा कल्पनाशीलता, सृजनशीलता, संवेदनशीलता जैसी भाषायी क्षमताओं का विकास करना।
- व्यवहारिक व्याकरण की समझ एवं उपयोग का अवसर प्रदान करना, यथ–विराम चिन्ह्नों का पठन एवं लेखन में उपयोग आदि।
- देखी–सुनी घटनाओं को मौखिक या लिखित वर्णन करना।
- शब्द भंडार में वृद्धि करना, अनुच्छेद लिखना, पाठों पर प्रतिक्रिया, द्रुत पठन आदि के लिए अवसर प्रदान करना।
- बाल साहित्य के प्रति रूची प्रदान करना।

यहाँ भाषा शिक्षण के उद्देश्य की चर्चा करने का स्पष्ट संकेत है हिंदी शिक्षण के क्रम में सिर्फ नैतिक संदेश जो उद्देश्य पर हावी हो जाते हैं, उनसे बचना दरअसल भाषा शिक्षण या हिंदी शिक्षण का उद्देश्य सिर्फ नैतिक शिक्षा या उद्देश्य नहीं है, हमारा प्राथमिक उद्देश्य है शिक्षार्थियों के भाषायी कौशलों एवं क्षमताओं में वृद्धि करना। हाँ, साहित्य की यह विशेषता है कि वह अपने समानान्तर नैतिक संदेश एवं शिक्षा को भी लेकर चलता है। इस तरह के उद्देश्य हमारे द्वितीयक या गौण उद्देश्य हो सकते हैं, जिनकी भी जरूरत विद्यार्थियों को है। अतः सीखने की योजना (Learning Plan) बनाते समय उल्लिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर ही योजना बनाने की आवश्यकता है। ऊपर दिये गये वर्गवार उद्देश्य आपकी समझ के लिए दिए गए हैं। शिक्षार्थियों की आवश्यकता एवं परिस्थिति के अनुसार आप अपने अनुसार भी उद्देश्य को चिन्हित कर सकते हैं जो शिक्षार्थियों की भाषायी क्षमता एवं कौशल को और पुख्ता बना सके।

शिक्षण अभ्यास

दरअसल शिक्षण अभ्यास के क्रम मे ंआलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र को समझना और उसे अभ्यास क्रम का हिस्सा बनाना इस पाठ्यचर्या का प्रमुख उद्देश्य है। यह जरूरत होती है कि हम शिक्षण अभ्यास के क्रम में अपनी जिम्मेदारी (आकादमिक, शैक्षिक व सामाजिक) को शिक्षा के बृहत्तर परिणाम व लोकतांत्रिक समाज के संदर्भ में समझें कक्षा के भीतर की प्रक्रिया कोई पृथक घटना नहीं है। बल्कि इसका गहरा जुड़ाव विभिन्न सामाजिक व ऐतिहासिक प्रक्रियाओं से होता है। शिक्षक अपने सार्थक कर्म के माध्यम से असमान सामाजिक व्यवस्थाओं के विरूद्ध हस्तक्षेप करता है। उसकी यह भूमिका एक सांस्कृतिक कर्मी की तरह होती है। शिक्षण अभ्यास में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाए कि प्रशिक्षु शिक्षक न सिर्फ शिक्षा के तकनीकि पक्ष्य को समझ पायें बल्कि वे हस्तक्षेपकारी भूमिका को भी साकार रूप दे सकें। कोशिश यह होनी चाहिए कि वे अनुभवों के जरिये रूढ़वादी सामाजिक, सांस्कृतिक मान्यताओं आदि तार्किक ढंग से चुनौती दे सके। इस क्रम में पाठ् योजना के पारंपरिक स्वरूप में क्रांतिकारी बदलाव लाने की अपेक्षा है। जिसकी नये स्वरूप में बाल केन्द्रित शिक्षा लोकतांत्रिक सोच सृजनशीलता आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र आदि अवधारणाओं को बढ़ाया जा सके। इसी संदर्भ में यहाँ पाठ योजना (Lesson Plan) के पारंपरिक प्रारूप के स्थान पर सीखने की योजना (Learning Plan) के एक लचीले, तार्किक एवं नवाचारी स्वरूप को लाने की कोशिश है।

'सीखने की योजना' में कई ऐसे सवालों को उठाया गया है कि जिससे प्रशिक्षु शिक्षण के प्रक्रिया तथा उसमें अपनी भूमिका को बेहतर तरीके से समझ सके। इसके साथ–साथ नये प्रारूप में प्रशिक्षुओं से कई अपेक्षाएं भी हैं जैसेः– अलग–अलग नीतिगत दस्तावेजों से अपने Learning Plan को जोड़कर देखना अलग–अलग पाठ्यपुस्तकों से लेकर पाठ्यक्रम तक के संदर्भ में रखकर लर्निंग प्लान को बनाना। आगे सीखने की योजना का एक सुझावात्मक प्रारूप दिया जा रहा है।

सीखने की योजना के प्रारूप का विवरण

उद्देश्य (विषय वस्तु)

प्रायः हिंदी शिक्षण में हम कविता–कहानियों के वाचन, पाठ में आये कठिन शब्दों के अर्थ, पाठान्त में दिए गए अभ्यास प्रश्नों के हल साथ उस ईकाई के अध्ययन को समाप्त मान लेते हैं। हाँ इतन जरूर बताते हैं कि संबंधित पाठ ने कौन–सी नैतिक शिक्षा दी। अब यहाँ सावधानी बरतते हुए किसी एक या दो उद्देश्य को ही लेना है जिसे निर्धारित कालांश में हम पूरा कर सकें। उदाहरण के तौर पर यदि हम अंकूर भाग– I वर्ग–I के प्रथम पाठ हमारा गाँव चित्र पठन को अपनी योग्यता में शामिल करते हैं तो, हमारे उद्देश्य हो सकते हैंः–

1. दिए गए चित्र पर बातचीत (सुनने एवं बोलने के कौशल में वृद्धि)
    - पालतू जानवर
    - यातायात के साधन
    - विद्यालय
    - अपना गाँव इत्यादि
    - चित्रांकन

A. नये विषय–वस्तु की चर्चा शुरू करनी है ☐

B. पिछले कालांश के विषय–वस्तु का विस्तार करना है ☐
उपर दो विकल्प दिए गए हैं जिसमें किसी एक पर सही का निशान लगाना है। एक ईकाई के वर्ग कक्ष पठन–पाठन हेतु लगभग 8–10 से कालांश प्राप्त होता है। प्रत्येक कालांश या तो नीचे उद्देश्य के साथ शुरू होगी या पूर्व निर्धारित उद्देश्य के अधूरे हिस्से को पूर्ण करने हेतु होगी। उदाहरण के तौर पर पहले कालांश का उद्देश्य पालतू जानवरों पर बातचीत है, तो पहले दिन की योजना में उपर वाले बॉक्स में सही का निशान लगेगा। यदि कार्य अधूरा है अर्थात् पालतू जानवरों पर चर्चा या बातचीत को और नियोजित तरीके से आगे बढ़ाना है तो दूसरे कालांश में दूसरे बॉक्स में सही का निशान लगाना है। हर नये उद्देश्य के साथ योजना शुरू होने पर पहले बॉक्स में अन्यथा दूसरे बॉक्स में सही लगाना है।

C. यह विषय–वस्तु इस कक्षा के पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रम में उल्लेखित किन उद्देश्यों/बिंदुओं से जुड़ा हैः– उदाहरण के तौर पर हम बातचीत को समझ सकते हैं। बातचीत का यहाँ उद्देश्य हैः– शिक्षार्थियों में सुनने एवं बोलने के कौशल, दूसरे शब्दों में मौखिक अभिव्यक्ति के कौशल में वृद्धि करना है। यह गतिविधि विद्यार्थियों में अपने अनुभवों और विचारों को व्यक्त करने का न सिर्फ अवसर प्रदान कर रहा है बल्कि उत्सुकता भी जगा रहा है।

D. क्या यह विषय वस्तु पूर्ववत् कक्षाओं के पाठ्यक्रम में भी शामिल हैः– यदि आपकी योजना वर्ग–I के लिए है तो पूर्व की कक्षा कोई नहीं होगी। यदि आपकी योजना वर्ग–II से V तक की है तो संभव है, विषय वस्तु का जुड़ाव पूर्व की कक्षाओं से हो उदाहरण के तौर पर यदि आपकी योजना वर्ग–II की हिंदी कि किसी चित्रकला

या चित्र पठन के बातचीत पर हो तो इसका जुड़ाव वर्ग– I की कक्षाओं से है। प्रशिक्षु से यह अपेक्षा है कि सभी वर्गों के पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन समग्रता में करें तभी इस कॉलम का सटीक जवाब दे सकते हैं।

E. क्या मैंने इस विषय वस्तु का शिक्षण पहले किया है?
हाँ ☐ नहीं ☐
प्रशिक्षु शिक्षक यह निर्णय संबंधित विषय–वस्तु के आलोक में लेंगे। यदि पहले इस पर कार्य किए हैं तो 'हाँ' नहीं तो 'ना'।

F. यह विषय वस्तु इस कक्षा के और किन–किन विषयों/इकाईयों से जुड़ा है:– संबंधित विषय वस्तु का जुड़ाव उसी कक्षा की अन्य विषयों या ईकाईयों से भी हो सकता है। उदाहरण के तौर पर वर्ग–II की हिन्दी पाठ्यपुस्तक के पृष्ठ संख्या–..........................के प्रश्न संख्या.....................को देखें। यहाँ पर दिए गए चित्र में कौओं की संख्या पूछी गयी है। निश्चित रूप से इसका जुड़ाव गणित विषय की गिनती से है। ध्यान देने योग्य बात है कि प्रशिक्षु से अपेक्षा है कि संबंधित वर्ग की सभी पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन समग्रता में करें।

G. कक्षा के विद्यार्थियों के पास इस विषय वस्तु से संबंधित क्या आधारभूत समझ हो सकती है।
बहुत कम ☐ थोड़ा कम ☐ बहुत अधिक ☐

स्पष्ट है उपर दिए गए विकल्प बच्चों की समझ से संबंधित हैं यहाँ ध्यान रखना आवश्यक है होगा कि यह समझ सिर्फ आधारित नहीं है। यहाँ आधारभूत समझ का अभिप्राय शिक्षार्थी को परिवेशील एवं पूर्व ज्ञान सहित एवं समग्र समझ से है। प्रशिक्षु शिक्षक के लिए यह जानकारी कक्षा–कक्ष विनियन में अवधारणा के स्पष्टीकरण के साथ–साथ ज्ञान के निर्माण में मददगार सिद्ध हो सकता है।

<u>विषयवस्तु/उप–विषयवस्तु का विवरण</u>

एक ही पाठ पर आधारित कई सीखने की योजना बनाई जा सकती है। सभी योजनाएँ अलग–अलग भाषायी उद्देश्यों के साथ या एक ही उद्देश्य की पूर्ति हेतु एक से अधिक योजना के रूप मे भी हो सकती है। उदाहरण के लिए यदि हमने विषय हम कई भाषाई उद्देश्यों को लेकर अपनी योजना बना सकते हैं, यथा– सुनने–बोलने के कौशल का विकास, अनुमान लगाने की क्षमता का विकास, दूसरों की बातों को सुनकर प्रतिक्रिया देने की क्षमता, चित्रकला को स्वयं की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाने की क्षमता आदि। इसके लिए हमारी गतिविधियाँ हो सकती है:– बातचीत, चित्रकला से संबंधित विविध कार्य, चित्रों के आधार पर कहानी कविता निर्माण की सृजनात्म्क गतिविधियाँ आदि।

इस खंड में संबंधित विषयवस्तु गतिविधि एवं उद्देश्य के बारे में जानकारी दी जाएगी।

<u>सीखने– सीखाने की विधि/विधियाँ</u>

अधिगम उद्देश्य, संबंधित विषय वस्तु एवं चिन्हित उद्देश्य कक्षा–कक्ष की परिस्थितियाँ आदि एक या एक से अधिक विधियों के चयन का आधार होंगे। यदि वर्ग प्रथम का प्रथम पाठ 'हमारा गाँव' ही लें और इसके उद्देश्य यदि सुनने–बोलने के कौशल का विकास हो तो सीखने–सीखाने की विधियाँ हो सकती है:–

1. सामूहिक चर्चा– चित्र में आप कया देख रहे हैं, इनका उपयोग क्या है? दिख रही सामग्री पर बातचीत आदि।

2. समूह कार्यः—छोटे—छोटे समूहों में या पीयर (Peer Group) में छोटी—छोटी कहानी या तुकान्त कविता का निर्माण, घर से विद्यालय आने में देखी गई चीजों पर चर्चा आदि।
3. एकल कार्यः— आपको अपने परिवेश में या दिए गए चित्र में पसंद हो उसका चित्र बनाएँ, कोलाज बनाएँ।
4. रोलप्लेः— गाँव में प्रायः बुजुर्गों की बैठक होती रहती है जिन्हें बच्चे भी देखते, सुनते हैं, किसान पालतू जानवरों की आवाज, भोजन करने, कार्य करने आदि से संबंधित गतिविधियों का रोल प्ले कराया जा सकता है। इसी तरह अन्य विधियों को उनकी उपयुक्तता के आधार पर चयन कर सकते हैं। कहने का तात्पर्य है कि उद्देश्य एवं विषय वस्तु के आलोक में सटीक सीखने—सीखाने की विधियों का चयन करें। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि आवश्यक नहीं कि एक सीखने की योजना में सभी विधियों को लेना आवश्यक ही है।
5. विधि/विधियों को क्यों चुना गया (शिक्षाशास्त्री चयन का आधार) उपर हमने विधि/विधियों पर चर्चा के क्रम में इनके चयन के आधार को भी समझा। दरअसल बच्चे, बच्चों से, समूह कार्य में, परिवेश से, संदर्भ आदि से सीखते हैं। बच्चे/बच्चियों को नाटकीयता पसंद होती है जो रोल प्ले के चयन का आधार है। खेल, खोज, प्रयोग तो वे प्रायः करते हैं, आवश्यकता बस इतनी रहती है कि ये इनके सीखने—सीखाने, अवधारणा स्पष्ट आदि करने का जरिया बनें।

   सीखने—सीखाने के विधियों के चयन का आधार मूल्यांकन/स्वमूल्यांकन भी होगा अवलोकन प्राथमिक कक्षाओं विशेष कर वर्ग— I से II में मूल्यांकन का सशक्त तरीका है। पीयर (Peer) समूह में शिक्षार्थियों का एक दूसरे का और स्वंय के मूल्यांकन स्वमूल्यांकन का अवसर प्राप्त होता है। बेशक, सीखने की योजना में इनकी चर्चा आवश्यक है।
6. सीखने की विधि/विधियों तथा शिक्षाशास्त्र का संक्षिप्त विवरण—योजना सीखने की योजना के प्रारूप के इस खंड में दाहीनी तरफ, ध्यान रखने योग्य समावेशी बिन्दु' शीषर्क के तहत बुलेट लगे कुछ संकेतक (Indications) गए हैं। योजना निर्माण के क्रम में इन शिक्षाशास्त्रीय बिन्दुओं को ध्यान में रखना आवश्यक है। बच्चों के सीखने—सीखाने में उनके संदर्भ को नकारने का मतलब उनके पूर्वज्ञान, परिवेशीय समझ, भाषा आदि के रूप में उनके संपूर्ण व्यक्तित्व को नकारना है। सफल योजना उसे माना जाता है जो शिक्षार्थियों को स्वंय से सीखने का प्रयाप्त अवसर प्रदान करे। जब शिक्षार्थी प्रभावी सीखने की प्रक्रिया से गुजर रहे हैं तो वे कई तरह के प्रश्न पूछेंगे। शिक्षण कार्य के दौरान यदि विद्यार्थियों द्वारा संबंधित विषयवस्तु से प्रश्न नहीं किया जा रहा है तो। पूरे कालांश में शिक्षक/शिक्षिका की तुलना मे शिक्षार्थियों का सक्रिय सहभागिता (Active Practicipation) की समयावधि अधिक होनी चाहिए, अन्यथा वह बाल केन्द्रित शिक्षण नहीं होकर शिक्षक केन्द्रित शिक्षण प्रक्रिया होगी। इस तरह की शिक्षण प्रक्रिया शिक्षार्थियों के सृजनात्मक शक्ति, क्षमता, चिंतन आदि को कुंद करती है। योजना लचीली होनी चाहिए जो परिस्थिति विशेष में अपने को ढाल ले। इसी तरह जेंडर संवेदनशीलता भी पूरी योजना में दिखनी चाहिए। सतत् व्यापक मूल्यांकन शिक्षण प्रक्रिया के साथ—साथ चले। गौरतलब है सतत व्यापक मूल्यांकन को सिर्फ मूल्यांकन के उपकरण या तरीके के रूप में देखने की भूल नहीं करनी होगी। यह प्रभावी शिक्षण का ही एक भाग है जो शिक्षार्थी को यथा आवश्यक योजना सहित मदद की मांग करता है। NCF एवं BCF 2008 पूरी शिक्षार्थी योजना के मार्गदर्शी ग्रंथ है। निश्चित रूप से इनमें सुझाए गए बिन्दुओं या सिद्धांतों को सीखने की योजना का निर्माण करते समय ध्यान रखना आवश्यक है। योजना निर्माण करते समय संभावित चुनौतियों को ध्यान में रखना आवश्यक होगा जो समय विशेष में कोई अवरोध न खड़ा कर सकें, आप उनसे आसानी से निबट सकें।

7. शिक्षक/शिक्षिका द्वारा स्वमूल्यांकन के सुझाात्मक बिन्दुः—
   कक्षा—कक्ष में प्राप्त वास्तविक अनुभव के आधार पर इसमें शामिल बिन्दुओं को लिखा जायेगा।
8. मेंटर/अवलोकनकर्त्ता की टिप्पणीः—
   प्रशिक्षु इस बात का ध्यान रखें कि यह बिन्दु मेंटर/अवलोकनकर्त्ता की टिप्पणी से संबंधित है जो उनके कक्षा का अवलोकन करेंगे। अवलोकन के पश्चात् उनके द्वारा समीक्षात्मक टिप्पणी दर्ज की जायेगी।
9. समीक्षात्मक बिन्दुः—

दिए गए प्रारूप में दाहीनी तरफ कुछ मार्गदर्शी सिद्धांतों को लिखा गया है। मेंटर और बाह्यपरीक्षक अवलोकन के बाद इन मार्गदर्शी सिद्धांतों के आलोक में सीखने की योजना एवं कक्षा—कक्ष विनिमयन की समीक्षा करेंगे।

अच्छी सीखने की योजना के लक्षण

एक अच्छी सीखने योजना के लक्षणों को निम्नलिखित बिन्दुओं में सूत्रबद्ध किया जा सकता हैः

- उद्देष्यों की स्पष्टता, व्यापकता एवं क्रमबद्धता।
- उद्देष्य प्राप्ति हेतु विभिन्न गतिविधियों के संकेत।
- स्कूल तथा स्कूल के बाहर के अनुभवों को जोड़ने हेतु प्रष्न और गतिविधियाँ।
- वैयक्तिक भिन्नताओं को ध्यान देने के अवसर
- उपयुक्त सहायक सामग्री का उपयोग
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का कक्षा—प्रक्रिया का अभिन्न हिस्सा होना।

5.6 रचनात्मक शिक्षण उपागम और सीखने की योजना

रचनावादी शिक्षण उपागम मुख्यतः रचनात्मक शिक्षक और पियाजे के बाल्यावस्था विकास शिक्षा शोध पर आधारित है। रचनात्मक शिक्षण उपागम के अनुसार ज्ञान का संगठन एक आधारभूत ज्ञान से होता है। छात्र एक खाली स्लेट नहीं होता है। उसके साथ उसके अपने अनुभव जुड़े होते हैं। बच्चे तभी अच्छा सीख सकते हैं जब उन्हें उनकी समझ जो कि उनके अनुभवों पर आधारित हो पर सोचने की छूट दी जाए। रचनावादी शिक्षण अधिगमकर्ता को अर्थ और ज्ञान का निर्माता मानता है। यह सैद्धांतिक रुपरेखा अधिगम को ज्ञान पर आधारित मानती है जो कि बच्चा पहले से जानता है जिस आधारभूत ज्ञान को हम 'स्कीमा' कहते हैं। रचनात्मक शिक्षण उपागम की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैंः—

1. सक्रिय अधिगमकर्ता :— अब यह सर्वसम्मत विचार है कि हर बच्चे मे सीखने की स्वाभाविक उत्कंठा और क्षमता होती है जो लगभग स्वतः भाषा सीखने के उसके ढंग में सबसे पहले उजागर होती है। बालकेंद्रित शिक्षाशास्त्र के विचार का मतलब है बच्चों के अनुभवों, उनकी बोलियाँ और उनकी सक्रिय भागीदारी को प्रमुख महत्व देना । हमारे पारंपरिक विद्यालयों में बच्चों के अनुभवों का कोई महत्व नहीं होता क्योंकि वहाँ अध्यापकों को जानने योग्य समस्त ज्ञान का भंडार माना जाता है। अनुशासन व आशा पालन के नाम पर बच्चों की आवाज दबा दी जाती है और उन्हें निष्क्रिय शिक्षा बना दिया जाता है। यह स्थिति पूरी तरह बदलनी चाहिए । हर बच्चे की पारिवारिक और सामाजिक पृष्ठभूमि होती है तथा सीखने का एक अपरिहार्य सामाजिक चरित्र होता है। इसलिए बच्चे के अंदर जो कुछ है और जो कुछ लेकर वह विद्यालय आता है, उसकी कद्र की जानी चाहिए। विद्यालयों और शिक्षकों को चाहिए कि वे सीखने की प्रकिया में बच्चों की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करें । अपनी उत्सुकता के पोषण के लिए उन्हें खुद से अभ्यास करना चाहिए, सवाल पूछना चाहिए और जाँच पड़ताल में उतरना चाहिए। रचनात्मक शिक्षण उपागम में बच्चा सक्रिय और स्वाभाविक शिक्षार्थी होता है। वह अपनी गति से सीखता है।

2. लोकतांत्रिक वातावरणः– रचनात्मक शिक्षण उपागम बच्चों को लोकतांत्रिक वातावरण प्रदान करता है जिसमें बच्चा खुलकर अपनी बातों को, अपने अनुभवों को बाँट सकता है। रचनात्मक शिक्षण उपागम परंपरागत कक्षा शिक्षण से बिल्कुल विपरीत होता है । जहाँ परंपरागत कक्षा शिक्षण में कक्षा शिक्षक केंद्रित होती है शिक्षक की भूमिका आधिकारिक होती है बिल्कुल इसके विपरीत रचनात्मक शिक्षण में कक्षा बाल –केंद्रित होती है शिक्षक एक सुगमकर्ता के रुप में होता है। रचनात्मक कक्षा शिक्षण का वातावरण लोकतांत्रिक होता है जिसमें खुलकर अपने भावों को अभिव्यक्त करने की छूट होती है।
3. अंतः क्रियात्मक और विद्यार्थी केंद्रित गतिविधियाँ :–शिक्षार्थी उन्हें दी गई सामग्री / गतिविधियों (अनुभव) के आधार पर विद्यमान विचारों के साथ नए विचारों को जोड़ने के जरिए अपना खुद का ज्ञान सक्रियतापूर्वक निर्मित करता है। सीखने की प्रकिया में शिक्षार्थी जैसे –जैसे आगे बढ़ता है रचना और पुनर्रचना के विचार उनकी मूलभूत विशेषता बन जाते हैं । बहरहाल यहाँ इस अर्थ में सामाजिक पहलू भी संलग्न है कि किसी जटिल काम के लिए आवश्यक ज्ञान समूह की स्थिति में ही प्राप्त हो सकता है। इसलिए इसमें सहयोगात्मक अधिगम और तात्पर्यों की सामाजिक निर्मिति के लिए गुंजाइश रहती है।
4. शिक्षक एक सुगमकर्ता के रुप में :– बच्चा जिस ज्ञान के निर्माण में संलग्न हो सकता है, एक अच्छा शिक्षक उसकी प्रकिया को सहयोग देता व सुगम बनाता है। बच्चों को सवाल पूछने की अनुमति देने, अपने शब्दों में अपने अनुभवों के आधार पर उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित करने तथा भली भांति चुने गए चुनौतीपूर्ण कार्य व प्रयत्नों में उन्हें लगाने से उनकी समझदारी के विकास में मदद मिलेगी । दूसरी ओर महज किताबों में लिखे या अध्यापकों द्वारा कहे शब्दों में सिर्फ सवालों का जवाब देने तक उन्हें सीमित कर देना तथा उन्हें जो कुछ पढ़ाया गया है उसे सिर्फ याद करने और फिर प्रस्तुत करने की अपेक्षा करना उचित समझदारी के साथ सीखने की प्रकिया को रोकने के ही पक्के रास्ते हैं।

मननः
रचनात्मक शिक्षण उपागम और सीखने की योजना के संबंधों की चर्चा करें ।

5.7 सीखने की योजना और रचनात्मक कक्षा प्रकियाओं में संबंध

रचनात्मक कक्षा प्रकियाएँ छात्र केंद्रित होती है जिसमें प्रत्येक छात्र की आवश्यकताओं एवं वैयक्तिक विभिन्नताओं को ध्यान में रखा जाता है। पाठ योजना और रचनात्मक कक्षा प्रकियाओं में घनिष्ठ संबंध है । पाठ योजना का निर्माण यदि रचनात्मक कक्षा प्रकिया को ध्यान में रखकर किया जाए तो शिक्षण को रुचिकर और आसान बनाया जा सकता है। सीखने की प्रक्रिया कार्यवाही और भाषा दोनों माध्यमों से अपने चारों ओर के पार्यावरण, प्रकृति, वस्तुओं और लोगों के साथ परस्पर क्रिया के जरिए संपन्न होती है। खुद से अपने बराबरी वालों के साथ या बड़े लोगों की उपस्थिति में घूमने–फिरने, खोजने, ढुँढने और कुछ करने जैसी शारीरिक गतिविधि तथा भाषा का प्रयोग (जैसे पढ़ना, बोलना या पूछना, सुनना और वार्ता करना ही वे प्रमुख प्रकियाएँ हैं जिनके जरिए सीखने की क्रिया आगे बढ़ती है। अध्यापकों की ओर से एकतरफा संप्रेषण के बजाए वार्तालाप बच्चों को हिस्सेदार बनाएगा और उन्हें सोचने व अभिव्यक्त करने के लिए प्रेरित करेगा। रचनात्मक कक्षा प्रकियाओं को समझने से पहल परंपरागत कक्षा शिक्षण और रचनात्मक कक्षा शिक्षण के अंतर को समझना आवश्यक हैः–

व्यवहारवादी कक्षा शिक्षण	रचनात्मक कक्षा शिक्षण
1 शिक्षण	1. अधिगम

2.अध्यापक केंद्रित	2. विद्यार्थी केन्द्रित
3.शिक्षक ज्ञानप्रदाता	3.शिक्षार्थी सीखने की प्रकिया में सक्रिय भागीदार
4.पाठ्यचर्चा का स्थिर ढ़ांचा	4.लचीली पाठ्यचर्या और पद्धतियाँ
5. अध्यापक निर्देश देता है	5. शिक्षार्थी की स्वायतता की कद की जाती है।
6. सिर्फ पाठ्यपुस्तकों से सीखना	6. विविध संभव स्रोतों से सीखना
8. सुनने और पढ़ने के जरिएसीखना	7. समाज और प्रकृति के व्यापकतर संदर्भ में
9.चंद सावधिक परीक्षाओं के	8. करने के जरिए सीखना
10. अर्द्ध से पूर्ण की ओर ।	9. सतत और समग्र मूल्यांकनजरिए मूल्यांकन
11. निश्चित पाठ्यक्रम का	10.पूर्ण से शुरु होकर भागों में बँटना
12.ज्ञान गतिहीन होता है	11.छात्रों के प्रश्नों और रुचियों पर ध्यानकठोरता से पालन
13.छात्र व्यक्तिगत रुप से कार्य	12.ज्ञान गतिशील होता है। अनुभवों के साथ बदलता है।
14. रटने पर जोड़ देते हैं।	13. छात्र समूहों में कार्य करते हैं।
	14.अधिगम एक अंतःक्रिया होती है और इस अंतः क्रिया का आधार छात्र का पूर्वज्ञान होता है।
	आधार कौशलों पर विशेष जोड

मननः— परंपरागत कक्षा शिक्षण और रचनात्मक कक्षा शिक्षण की समानता और असमानता की विस्तारपूवर्क चर्चा करें।

5.7 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् हमने जाना किः—

- शिक्षण कार्य में पाठ योजना का महत्वपूर्ण स्थान है।
- पाठ योजना शिक्षक के शिक्षण कार्य में प्रभावोत्पादकता ला देती है।
- पाठ योजना के कई प्रकार है।
- रचनात्मक कक्षा शिक्षण परंपरागत कक्षा शिक्षण से अधिक प्रभावी एवं रुचिकर है।
- पाठ योजना का निर्माण रचनात्मक उपागम को ध्यान में रखकर किया जाए तो कक्षा शिक्षण रुचिकर और प्रभावी हो जाता है।
- पाठ योजना के कई महत्वपूर्ण भाग हैं जिनको ध्यान में रखकर पाठ योजना बनानी चाहिए।
- पाठ योजना और रचनात्मक कक्षा प्रकियाओं में घनिष्ठ संबंध है।

सामान्य रुप से जब कोई अध्यापक कक्षा शिक्षण करता है या करने की तैयारी करता है उस समय वह सोचता है कि आज उसको कक्षा में क्या शिक्षण करना है ? यहाँ पर अध्यापक की कक्षा शिक्षण की कोई पूर्व योजना नहीं है । वह कक्षा शिक्षण का कार्य पूर्ण करेगा किन्तु उसका कार्य संतोषजनक नहीं होगा। इसलिए किसी भी अध्यापक को शिक्षण से पहले अपनी कार्य योजना बना लेनी चाहिए, जिससे वह योजनाबद्ध तरीकों से अपना कार्य पूर्ण कर पाएगा। इसलिए कोई भी कार्य करने के पूर्व कार्य की योजना बना लेना आवश्यक होता है।

कार्य के द्वारा हमें :–

- किन उद्देश्यों को प्राप्त करना है।
- कार्य की रुपरेखा एवं कार्याविधि क्या होगी
- कार्य को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए हमें क्या –क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए
- कार्य में किन संसाधनों का प्रयोग होना है
- कार्य पूरा होने पर उसका क्या प्रतिफल प्राप्त होगा______आदि

बातों पर अच्छे से विचार कर लेनी चाहिए । इसी को हम योजना शब्द से संबंधित करते हैं । शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक को सीखने की योजना का महत्व समझना चाहिए, और सफलता प्राप्त करने हेतु योजनानुसार शिक्षण कार्य करना चाहिए । भाषा अध्यापक के लिए तो सीखने की योजना का निर्माण एवं पूर्व नियोजन अति आवश्यक है। वह एक महत्वपूर्ण विषय का अध्यापन करता है । जिससे छात्रों को पूर्ण लाभ हो, उसका ऐसा प्रयास होना चाहिए।

हमने सीखा

- हमने समझा कि पाठ योजना का अर्थ, आवश्यकता और महत्व क्या है।
- हमने समझा कि सीखने की योजना के कितने प्रकार होते हैं।
- हमने समझा की अच्छी इकाई योजना और पाठ योजना के लक्षण क्या होते हैं को समझना।
- हमने समझा कि रचनात्मक शिक्षण उपागम क्या होता है और इसका पाठ योजनाओं की आवश्यकता होती है।
- हमने समझा की रचनात्मक कक्षा प्रक्रियाओं के लिए कैसी पाठ योजनाओं की आवश्यकता होती है।

5.9 स्व–मूल्यांकन

1. शैक्षिक प्रक्रियाओं में पाठ योजना का क्या महत्व है?
2. पाठ योजना में कमबद्धता की आवश्यकता क्यों है? उदाहरण सहित व्याख्या करें।
3. रचनात्मक शिक्षण उपागम क्या है? रचनात्मक शिक्षण उपागम एवं कक्षा प्रक्रियाओं में क्या संबंध है? स्पष्ट करें।
4. पाठ योजना के कितने प्रकार हैं विस्तृत व्याख्या करें।

5.10 संदर्भ

1. शरतेन्दु, डा. सत्यनारायण दूबे 2007 सरल हिन्दी भाषा शिक्षण, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।
2. बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2008, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, पटना, बिहार।
3. शर्मा, डा. मार्तण्ड 2011 हिन्दी शिक्षण इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन
4. संदर्भ पुस्तक/वेबसाईट

इकाई–6

हिन्दी शिक्षण में आकलन

6.1 परिचय,
6.2 उद्देश्य,
6.3 पूर्व अनुभव,
6.4 आकलन और मूल्यांकन की अवधारणा,
6.5 सतत एव व्यापक मूल्यांकन,
6.6 आकलन के उद्देश्य,
6.7 आकलन किसका और कब,
6.8 आकलन कैसे,
6.8.1 आकलन के तरीके,
6.8.2 आकलन के उपकरण और तकनीक,
6.9 आकलन प्रपत्र एवं प्रगति पत्रकः संबंध एवं संधारण,
6.10 आकलन से संबंधित कुछ प्रस्तावित गतिविधियाँ
6.11 सारांश
6.12 स्व–मूल्यांकन और
6.13 संदर्भ।

6.1 परिचय :–

हम शिक्षकों की आम धारणा है कि हिन्दी शिक्षण सबसे सरल है। कविता–कहानी के वाचन, श्रुतलेख, लिंग निर्णय, निबंध लेखन आदि के सिवाय हिन्दी शिक्षण कुछ है ही नहीं। लगभग सभी शिक्षकों में इतनी क्षमता तो होती ही है कि वे आसानी से उल्लिखित शिक्षण कार्यों को संपन्न कर लें। सबसे खराब स्थिति तो पारंपरिक आकलन एवं मूल्यांकन की है जो कुछ रटे–रटाए प्रश्नों के लिखित या मौखिक जवाब के साथ पूरी मान ली जाती है। पूरी मूल्यांकन प्रक्रिया औपचारिक ताने बाने में गुँथी हुई है। सच पूछिए तो पारंपरिक व्यवस्था में केवल शिक्षार्थी के पाठ्यपुस्तकीय जानकारी या सूचना का मूल्यांकन होता है। हम पारंपरिक मूल्यांकन के गिरफ्त में इस कदर समा चुकें हैं कि वार्षिक या अर्द्धवार्षिक परीक्षा के अतिरिक्त दूसरा कोई सटीक जरिया उनके साल भर चलने वाले भाषाई विकास एवं कौशलों को आकलित करने का दिखता ही नहीं। बेशक, ये सावधिक परीक्षाएँ यह तो बताती हैं कि शिक्षार्थी कितना जानते हैं, लेकिन वे जो नहीं जानते हैं उनका कारण क्या है, यह नहीं बतलाती। इस तरह की मूल्यांकन प्रक्रिया शिक्षार्थी में असुरक्षा, तनाव, चिंता, भय और अपमान की स्थिति पैदा करती है। भारतीय भाषाओं का शिक्षण आधार पत्र में स्पष्ट उल्लेख है कि *''मूल्यांकन एक सतत चलने वाली प्रक्रिया है और इसका उद्देश्य है– सीखने वाले*

की भाषा की संरचना और एकरूपता की समझ का आकलन, इसे विभिन्न संदर्भों में उपयोग करने की क्षमता और इसके सौंदर्यपरक पहलू को परख सकने की क्षमता का भी आकलन।''

इन सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए मूल्यांकन को पुनः परिभाषित करने की जरूरत है। इस इकाई में हम यह समझ बनाने का प्रयास करेंगे कि आकलन क्या है? इस इकाई में आकलन के उद्देश्य, आकलन कब, कैसे और किसका? आकलन के तरीके आदि पर अपनी समझ स्पष्ट करेंगे। यह भी समझने की कोशिश करेंगे कि क्या आकलन सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का हिस्सा है?

6.2 उद्देश्य :–

- हिन्दी भाषा में आकलन की अवधारणा एवं उद्देश्य से परिचित हो सकेंगे।
- यह जान सकेंगे कि पारंपरिक मूल्यांकन से आकलन किस प्रकार अलग है।
- हिन्दी भाषा सीखने में आकलन की भूमिका को सुनिश्चित कर सकेंगे।
- हिन्दी शिक्षण में आकलन के विविध तरीकों को समझ सकेंगे।
- शिक्षार्थियों की हिन्दी भाषायी क्षमता का आकलन सही तरीके से कर सकेंगे।

6.3 पूर्व अनुभव :–

मूल्यांकन को लेकर जो हमारी चिंता है वह हमारी राष्ट्रीय चिंतन और चिंता में शामिल है। इस दुश्चिता का सबसे बड़ा कारण परीक्षा का हौवा जो कई तरह के भ्रम के साथ शिक्षर्थियों एवं अभिभावकों के मन में भय एवं तनाव के साथ कुंडली मार बैठा है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 के अनुसार भी *भारतीय शिक्षा में मूल्यांकन शब्द परीक्षा, तनाव और दुश्चिंता से जुड़ा हुआ है। पाठ्यचर्या की परिभाषा और नवीनीकरण के सभी प्रयास विफल हो जाते हैं, अगर वे स्कूली शिक्षा प्रणाली में जड़ें जमाए मूल्यांकन और परीक्षा तंत्र के अवरोध से नहीं जूझ सकते। हमें परीक्षा के उन दुष्प्रभावों की चिंता है जो सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को सार्थक बनाने और बच्चों के लिए आनंददायी बनाने के प्रयासों पर पड़ते हैं।* इस राष्ट्रीय चिंता को एक संदर्भ के परिप्रेक्ष्य में देखने की कोशिश करते हैं कि शिक्षार्थी, शिक्षक और अभिभावक का मूल्यांकन के प्रति नजरिया क्या है?

नगर निगम के एक प्राथमिक विद्यालय में 'प्राथमिक स्तर पर मूल्यांकन की प्रक्रिया' नामक विषय पर एक बैठक का आयोजन किया गया था। इस बैठक में भाग ले रहे थे– चौथी और पाँचवीं कक्षा के विद्यार्थी तथा उनके अभिभावक। साथ ही पहली से पाँचवीं तक की कक्षाओं के अध्यापक/अध्यापिकाएँ भी। अभिवादन संबंधी औपचारिकताओं को पूरा करने के बाद बैठक की संचालिका ने सभी को एक–एक पर्ची दी। पर्चियों के रंग अलग–अगल थें। पर्चियाँ बाँटने के बाद कहा गया कि संचालिका एक शब्द बोलेंगी। उस शब्द को सुनकर मन में जो भाव पहले कौंधे, उसे पर्ची पर लिख दिया जाए।
शब्द था ....'परीक्षा'

मात्र एक मिनट का समय देकर पर्चियाँ वापिस ले ली गई। पर्चियों में लिखे भाव जानने के लिए आप उत्सुक होंगे/होंगी। विद्यार्थियों की पर्चियों पर कुछ इस प्रकार की टिप्पणियाँ थीं – पास या फेल, ओफ! घोंटे–लगाने का समय आ गया, खेल–कूद की छुट्टी, टी.वी. पर ताला, थोड़े दिन घर के काम से छुटकारा, रट्टू तोते के तो मजे आ गए, ज्योमैट्री बॉक्स की तैयारी कर लो, रोज वाली कॉपी की बातें मैडम वाली कॉपी पर, घोटे लगओ नंबर पाओ, नालायक नंबर वन, लाल–लाल गोले, जीरो बटा सन्नाटा, पेट में मरोड़, आदि–आदि। शिक्षकों की पर्चियों पर कुछ इस तरह के भाव थे– प्रश्न पत्र बनाओ, दस–दस लिस्टें बनाओं, गलतियाँ निकालो, नकल पकड़ो, बेतुकी एक्सरसाइज, नो यूज़, चेकिंग, उच्च रक्तचाप, घबराहट के दिन, आदि–आदि। अब आप यह भी जानना चाहेंगे कि अभिभावकों ने अपनी पर्चियों में क्या–क्या लिखा होगा। (बहुत से अभिभावक लिखना नहीं जानते थें। उन्होंने मौखिक रूप से अपनी बात कही।) तनाव, अवसाद, प्रतिष्ठा का सवाल, उम्मीदों पर पानी न फिर जाए, टेंशन, ट्यूशन का इंतजाम, मोमबती और लालटेन का जुगाड़, बिना देखे लिखना आदि। शायद हम सब की प्रतिक्रिया इनसे अलग नहीं होंगी। दरअसल परीक्षा का स्वरूप कुछ है ही इस प्रकार कहा कि नकारात्मक भाव यानी कि न चाहने वाली बातें ही सामने अधिक आती हैं।

साभार–आकलन स्रोत पुस्तिका, भाषा हिन्दी (NCERT, Delhi)

कमोवेश पारंपरिक मूल्यांकन की परीक्षा प्रणाली के प्रति अपने प्रदेश का नजरिया भी मिलता–जुलता है। आइए मनन के कुछ बिन्दुओं पर विचार कर अपनी अपनी समझ को पुख्ता करते हैं।

मनन– 1

- एक शिक्षक के रूप में मूल्यांकन की पारंपरिक तरीके को किस रूप में देखते हैं? आपके विचार से इसमें कौन–से बदलाव अपेक्षित हैं?
- क्या आपको ऐसा लगता है कि भय की वजह से शिक्षार्थी ज्यादा तेजी से सीखते हैं? अपने उत्तर तर्क सहित लिखें।
- क्या शिक्षार्थी परीक्षा के नाम से खौफ खाते हैं? आपकी दृष्टि में इसके संभावित कारण क्या हो सकते हैं?

6.4 आकलन और मूल्यांकन की अवधारणा :–

आकलन और मूल्यांकन पर बात करने से पहले आइए एक छात्रा की मासिक जाँच की कॉपी देखते हैं। सोनी गाँव के एक प्राथमिक विद्यालय में वर्ग– 5 में पढ़ती है। 'मेरा गाँव' पर निबंध लिखकर जमा करती है। विद्यालय के दो शिक्षक निबंध को पढ़ते हैं और दोनों अपनी अलग–अलग टिप्पणी देते हैं।

मेरा गाँव (6)

मेरे गाँव का नाम , इमरा है । वहा पर मेरा एक बहुत बड़ा घर है। और वहा पर बहुत सारा बगिचा है । तरह - तरह के बगीचे मे सुंदर सुंदर फुल है । गॉव मे छोटा - छोटा स्कूल भी है और वहाँ पर पढ़ाई भी होती है। गाँव के स्कूल मे बहुत सारे बच्चे पढ़ने आते है। मेरे गाँव मे चारो तरफ हरियाली है। और मै भी वहां पर एक सरकारी स्कूल मैं पढ़ती हूँ। वहा पर पढ़ाई के साथ खेलने की सुविधा है। मेरे गांव मे बहुत सारे बड़े - बड़े मंदिल है। मेरे गांव मे वर्ष मे एक - दो बार मेला भी लगता है और उस मेले मे तरह - तरह के वस्तु मिलते है और वह मेला देखने के लिए बहुत लोग वहाँ पर आते है। मेरे गाँव मे बड़ा - बड़ा बजार भी है। जहाँ हर वस्तु मिलता है। मेरे गांव मे एक बहुत बड़ा तलाब है वहाँ पर लोग स्नान करने के लिए जाते है। मेरी तरह हर बच्चों को अपना - अपना गाँव अच्छा लगता होगा।

आपकी लिखावट गंदी और अशुद्धियों से भरी पड़ी है। लिंग और वचन की समझ भी कमजोर है। वाक्य विन्यास भी काफी ठीक नहीं है। आप हिन्दी विषय मे काफी कमजोर हैं।
मनोज
25/8/14

मेरा गाँव

मेरे गाँव का नाम इमरा है। वहा पर मेरा एक बहुत बड़ा घर है। और वहा पर बहुत अच्छा बगिचा है। तरह-तरह के बगीचे मे सुंदर फुल है। गाँव मे छोटा-छोटे स्कूल भी है और वहाँ पर पढाई भी होती है। गाँत के स्कूल मे बहुत सारे बच्चे पढने आते है। मेरे गाँव मे चारो तरफ हरियाली है। और मैं भी वहां पर एक सरकारी स्कूल मैं पढ़ती हूँ। वहा पर पढाई के साथ खेलने की सुविधा है। मेरे गाँव बहुत सारे बड़े-बड़े मंदिर है। मेरे गाँव मे वर्ष मे एक-दो बार मेला भी लगता है और उस मेले मे तरह-तरह के वस्तु मिलते है और वह मेला देखने के लिए बहुत लोग वहां पर आते है। मेरे गाँव मे बड़ा-बड़ा बजार भी है, जहाँ हर वस्तु मिलता है। मेरे गांव मे एक बहुत बड़ा तलाब है वहां पर लोग स्नान करने के लिए आते है। मेरी तरह हर बच्चो को अपना-अपना गाँव अच्छा लगता होगा।

आपने निबंध अच्छा लिखा है। इसमें आपके विचार और सूचनाएँ स्पष्ट हैं। एक वाक्य का दूसरे वाक्य के साथ संबंध तार्किक है। कहीं-कहीं पर वर्तनी की गलतियाँ हैं, जिन्हें सुधारने की आवश्यकता है।

24/8/2014

आपने सोनी की कॉपी को दोनों शिक्षकों के नजरिए से पढ़ और समझ लिया होगा। आइए अब हमने जो देखा और समझा उसका विश्लेषण करते है।

मनन– 2

1. आप किस शिक्षक के कॉपी जाँचने के तरीके से संतुष्ट/असंतुष्ट हैं और क्यों? अपने उत्तर कारण सहित लिखें।
2. सोनी की कॉपी जिसे अलग–अगल दोनों शिक्षकों ने देखा, उसे आप किस रूप में देख रहें हैं? यदि यही कॉपी आपको दी जाए तो आप इसे कैसे देखेंगे और क्यों?
3. आकलन के बारे में जो आपका पूर्वज्ञान है वह दोनों में से किस शिक्षक से मेल खा रहा है और कहाँ–कहाँ?
4. अब तक जो आपने समझा उसके अनुसार मासिक जाँच सिर्फ सोनी सहित अन्य शिक्षार्थियों की जाँच के लिए है कि वे कितना जानते हैं या उन क्षेत्रों का पता लगाने के लिए है कि सोनी या वे क्या नहीं जानते हैं और क्यों?
5. उल्लिखित जानकारी या सूचना आपके शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में किस तरह के बदलाव की माँग करते हैं?

बेशक, आप सभी दूसरे शिक्षक के क्रिया कलाप से संतुष्ट हो सकते हैं और संभव है प्राप्त परिणाम के आलोक में शिक्षण प्रक्रिया में बदलाव से सहमत भी होंगे। आप यह समझ चुके होंगे कि आकलन की सही प्रक्रिया क्या है? आकलन का प्रयोजन निश्चय ही सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं एवं सामग्री का बदलाव करना है और उन लक्ष्यों पर पुनर्विचार करना है जो स्कूल के विभिन्न चरणों के लिए तय किए गए हैं। यह पुनर्विचार और बदलाव इस आधार पर किया जा सकता है कि शिक्षार्थियों की क्षमता किस हद तक विकसित हुई। यह कहने की जरूरत नहीं होनी चाहिए कि यहाँ आकलन का मतलब विद्यार्थियों का नियमित परीक्षण कतई नहीं है। शिक्षा का सरोकार एक सार्थक और उत्पादक जीवन की तैयारी से होता है। इस तरह मूल्यांकन को आलोचनात्मक प्रतिपुष्टि (फीडबैक) देने का उपकरण बनना चाहिए। यह तभी संभव है जब आकलन की प्रक्रिया निर्देश आदि सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के साथ–साथ चले।

बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा– 2008 के अनुसार आकलन एवं मूल्यांकन की एक सतत प्रणाली से ही सच्चे और प्रभावकारी तौर पर शिक्षण अधिगम रणनीतियों में सुधार लाया जा सकता है और वह भी तब, जब अध्यापक परिणामों की व्याख्या करने में सक्षम हों और इसके आलोक में रणनीतियों को पुनर्निमित करें। उल्लिखित उद्धरण यह स्पष्ट करता है कि आकलन सीखने के उपकरण (Learning Tool) और उपलब्धि स्तर जानने के उपकरण (Testing Tool) के रूप में साथ–साथ कार्य करता है।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि आकलन एवं मूल्यांकन शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाते हैं। शिक्षण प्रक्रिया, सामग्री आदि में अपेक्षित बदलाव हेतु इनसे प्राप्त पृष्ठपोषण की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। इनके लिए किसी विशेष परिस्थिति को पैदा करने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि आकलन एवं मूल्यांकन दोनों ही अधिगम की स्वाभाविक प्रक्रिया में ही होने चाहिए। आकलन करते समय दो बातों को हमेशा ध्यान में रखना आवश्यक होगा कि शिक्षार्थी का आकलन, उसके पूर्व की प्रगति और उम्र सापेक्ष तय किए गए मापदंडों (दक्षताओं) की तुलना में होनी चाहिए। लेकिन इसके लिए आवश्यक है कि सभी बच्चों के लिए पर्याप्त मात्रा में भौतिक और मानवीय संसाधन सुनिश्चित किए जायें। ऐसी स्थिति में किसी बच्चे का सापेक्ष

आकलन करना अधिक तार्किक और न्याय संगत होगा। हाँ, इसके लिए आवश्यक होगा कि समय–समय पर शिक्षार्थियों की विकसित होती क्षमताओं एवं कौशलों आदि का दस्तावेजीकरण किया जाय।

मनन– 3

1. शिक्षार्थी का आकलन उसके पूर्व की प्रगति से या कक्षा के शेष शिक्षार्थियों की उपलब्धि से या दोनों रुप से किया जाना चाहिए?
2. सीखने के उम्र सापेक्ष मापदंड से आप क्या समझते/समझती हैं?
3. आकलन के दौरान प्राप्त पृष्ठपोषण (फीडबैक) की भूमिका की पड़ताल शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में करें।
4. अबतक की चर्चा से आप आकलन एवं मूल्यांकन की भूमिका को कैसे समझायेंगे?

6.5 सतत एवं व्यापक मूल्यांकन –

शिक्षार्थी के गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए शिक्षा के अधिकार अधिनियम–2009 में शिक्षार्थी के सतत एवं व्यापक मूल्यांकन पर जोर दिया गया है। इस चर्चा को शुरू करने से पहले एक छात्र के 'शिक्षक के नाम पत्र' का अध्ययन करते हैं।

एक शिक्षार्थी का अपने वर्ग शिक्षक के नाम खुला पत्र

आदणीय गुरु जी

चरण स्पर्श।

गुरू जी! विद्यालय से घर लौटते समय मोटर साइकिल की धक्का से पैर टूट गया। इसकी जानकारी सर आपको दी थी। पैर टूटने के कारण की वजह से मैं वार्षिक परीक्षा में शामिल नहीं हो पाया। कल परीक्षाफल घोषित की गई। दोस्तों ने बताया मैं फेल हो गया हूँ।

सच गुरु जी! क्या मैं फेल हो गया हूँ? आप तो सबों से कहते थें– ''राजू सबसे तेज है।'' सर मैं आपके बयान को सही मानूँ या परीक्षा परिणाम को। हिन्दी की पाठ्यपुस्तक को पढ़ने की बात हो या अभ्यास प्रश्नों को हल करने की, मैं सबमें प्रथम रहा। गणित के सवाल तो मैं आपकी उपस्थिति में श्यामपट्ट पर हल कर देता था। पूरे वर्ष भर मन लगाकर पढ़ा और दो ढाई घंटे की परीक्षा में अनुपस्थिति ने मुझे फेल कर दिया। यह कहाँ का न्याय है गुरु जी!

मैं धाराप्रवाह पढ़ लेता हूँ, विभिन्न मुद्दों पर अपनी राय बेबाकी से देता हूँ, कार्यक्रम के दौरान मंच संचालन करता हूँ, नाटक में अच्छा अभिनय कर लेता हूँ, इनका मूल्यांकन क्यों नहीं होता गुरू जी? जिसे सीखने के लिए हम सालों भर प्रयत्नशील रहते हैं, उसकी जाँच दो–ढाई घंटे में दो चार प्रश्नों से। गुरु जी कुछ तो कीजिए नहीं तो आपका राजू बर्बाद हो जाएगा। इस अन्यायपूर्ण प्रणाली को बदल दीजिए गुरु जी, नहीं तो फिर परीक्षा से विश्वास ही उठ जाएगा।

आपका विश्वासी

राजू, वर्ग– 5

मनन– 4

1. गुरु जी के नाम पत्र में राजू ने जिन मुद्दों को उठाया है, क्या वह पारंपरिक मूल्यांकन पद्धति के सामने प्रश्न चिह्न हैं? यदि हाँ तो कैसे?
2. ''सीखने में सालों भर प्रयत्नशील रहना पड़ता है, और उसकी जाँच दो–ढ़ाई घंटे में दो–चार प्रश्नों से।'' एक शिक्षक के रूप में आकलन से संबंधित जो आपका अनुभव है, उसके आलोक में कथन की सत्यता की पड़ताल कीजिए।
3. राजू की नजर में पूरी परीक्षा व्यवस्था अन्यायपूर्ण है, क्यों?
4. राजू अपनी बर्बादी रोकने के लिए अपने गुरु जी से प्रार्थना करता है। यदि वह गुरु आप ही हों तो परीक्षा प्रणाली (आकलन) में कौन–सा सुधार करना चाहेंगे?
5. राजू ने अपनी चिट्ठी में मूल्यांकन के विस्तार के संबंध में अनेक जरूरी बातों की ओर संकेत किया है। वे कौन–सी बातें हैं?

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 में यह बार–बार कहा गया है कि बच्चे के अनुभव को महत्त्व मिलना चाहिए एवं उसकी गरिमा सुनिश्चित की जानी चाहिए, परन्तु यह तब तक पूर्णतया संभव नहीं है जब तक की प्रचलित मूल्यांकन पद्धति में परिवर्तन न किया जाए। वर्त्तमान मूल्यांकन व्यवस्था में किसी समय विशेष पर लिखित परीक्षा की व्यवस्था है, जबकि छात्र का संवृद्धि एवं विकास सम्पूर्ण सत्र में विकसित होता है। इस तरह के मूल्यांकन से कुछ बच्चों को असुरक्षा, तनाव, चिंता और अपमान जैसी स्थितियों का सामना करना पड़ता है। सावधिक परीक्षाओं से यह पता चलता है कि बच्चे कितना जानते हैं, पर यह नहीं पता चलता है कि जो नहीं जानते उनके न जानने के क्या कारण हैं। इस तरह का मूल्यांकन पाठ्यपुस्तकों में पढ़ाई गई विषयवस्तु और रटंत प्रणाली द्वारा प्राप्त की गई जानकारी/ज्ञान का मूल्यांकन करने तक ही सीमित है।

अधिकांशतः यह बच्चों में तुलना करने जैसे भाव रखता है और अवांछनीय प्रतिस्पर्धा को जन्म देता है। वर्तमान व्यवस्था में केवल बच्चे की अकादमिक प्रगति का मूल्यांकन होता है, जबकि बच्चे के सर्वांगीण विकास में अकादमिक प्रगति के साथ–साथ उसकी अभिवृत्तियों, परिवर्तनों आदि का भी समान महत्त्व होता है। उपर राजू के जिस चिट्ठी का उदाहरण दिया गया है उसमें उन बातों का स्पष्ट उल्लेख है जिन्हें मूल्यांकन की प्रक्रिया में शामिल किया जाना चाहिए। अन्य शब्दों में कहें तो राजू अपने तरीके से सतत एवं व्यापक मूल्यांकन को लागू करने की प्रार्थना कर रहा है।

अब यह सर्वमान्य तथ्य है कि प्रत्येक बच्चे की प्रकृति एवं सीखने की गति में भिन्नता होती है तथा वे अलग–अलग विधियों से सीखते हैं। हर विषयवस्तु को सीखने–सिखाने की विधियों में भिन्नता होने के कारण प्रत्येक बच्चे की प्रस्तुति एवं अभिव्यक्ति भी पृथक एवं विशिष्ट होती है। अतः यह आवश्यक है कि बच्चों का मूल्यांकन कागज–कलम परीक्षा के अतिरिक्त अन्य विधिओं द्वारा भी किया जाये। अन्य उच्चतर क्षमताओं, यथा–अभिव्यक्ति, विश्लेषण, समस्या का समाधान एवं अनुप्रयोग आदि दक्षताओं का विकास संभव होगा। चूंकि प्रत्येक बच्चे की प्रकृति विशिष्ट है और शिक्षण पद्धतियाँ भी भिन्न होती हैं, अतः एक समान मूल्यांकन पद्धति उपयुक्त नहीं हो सकती है।

इन तथ्यों को ध्यान में रखकर निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम–2009 में बच्चों के सीखने और उसे उपयोग करने की योग्यताओं का सतत एवं व्यापक मूल्यांकन करने का प्रावधान किया गया।

बच्चों के मूल्यांकन की यह सतत एवं व्यापक प्रक्रिया कोई पृथक गतिविधि न होकर सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का अभिन्न और सतत अंग होगी। बच्चे की प्रगति के लिए आवश्यक है कि मूल्यांकन की प्रक्रिया बाल केंद्रित हो, कक्षा में पायी जाने वाली विविधता को समझने वाली हो, आवश्यकता के अनुसार लचीली तथा सीखने की गति, हर बच्चे की आयु , शैली और स्तर के अनुसार चलने वाली हो।

यहाँ सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का अर्थ यह कदापि नहीं है कि बच्चों की वार्षिक, अर्धवार्षिक और सत्र परीक्षाओं के अतिरिक्त मासिक, पाक्षिक या साप्ताहिक परीक्षाएँ ली जाये। बच्चे के विकास का सतत मूल्यांकन एक सामयिक घटना (सत्र परीक्षा या वार्षिक परीक्षा) नहीं होती वरन यह शैक्षणिक सत्र की समूची अवधि में लगातार चलती है। दूसरी ओर व्यापक का आशय अकादमिक प्रगति के साथ–साथ बच्चे शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास की भी जानकारी प्राप्त करना है। शिक्षा का उद्देश्य बच्चों में पाठ्यक्रमीय दक्षताओं और कौशलों का विकास करना मात्र न होकर छात्रों का सर्वांगीण विकास करना है। मूल्यांकन में सततता के साथ–साथ व्यापकता का तत्त्व समाहित किए बिना बच्चों के सर्वांगीण विकास के लक्ष्य की प्राप्ति संभव नहीं है। इसके लिए आवश्यक है कि बच्चों के शारीरिक विकास, नियमित उपस्थिति, खेलों तथा सांस्कृतिक गतिविधियों में सहभागिता, नेतृत्व क्षमता, सृजनात्मकता आदि व्यक्तिगत एवं सामाजिक गुणों के क्रमिक विकास का सतत मूल्यांकन किया जाता रहे।

''सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया के द्वारा शिक्षण–अधिगम के समय ही शिक्षक को छात्र–छात्राओं के सीखने की प्रगति और कठिनाईयों के बारे में निरंतर जानकारी मिलती रहेगी। इस प्रकार की व्यवस्था में एक दीर्घ अंतराल के बाद चलाए जाने वाले उपचारात्मक शिक्षण की आवश्यकता भी समाप्त हो जाएगी, क्योंकि छात्र की कठिनाई का समय रहते निदान और उपचार हो सकेगा तथा यथासमय ही कठिनाईयों का निवारण होने से छात्रों में आत्मविश्वास जाग्रित होगा, सीखने की प्रक्रिया सुगम होगी और छात्रों के मन से परीक्षा विषयक भय और तनाव भी दूर होगा। इस क्रम में शिक्षक और छात्र के बीच जो संवाद और आत्मीयता के संबंध विकसित होंगे, उनसे छात्रों की उपस्थिति में तो वृद्धि होगी साथ ही साथ बीच में विद्यालय छोड़ जाने वाले छात्रों की संख्या में भी गिरावट आएगी।

उपर्युक्त चर्चा से यह स्पष्ट है कि वर्तमान विद्यालयी शिक्षण मूल्यांकन व्यवस्था में व्यापक व्यवस्थागत सुधारों की जरूरत है। मूल्यांकन की प्रक्रिया कक्षाओं में चल रही सीखने–सिखाने की ही एक प्रक्रिया है एवं मूल्यांकन के वही तरीके अच्छे होते हैं जो बच्चों के सीखने की गति और सीखने के तरीकों के अनुरूप होते हैं।

मनन– 5

1. पारंपरिक मूल्यांकन पद्धति (जो सावधिक परीक्षा आधारित है) और सतत व्यापक मूल्यांकन की पद्धति का तुलनात्मक विवेचना करें। आपको कौन–सी पद्धति पसंद है और क्यों?
2. आज विद्यालयों में शिक्षार्थियों के समग्र मूल्यांकन हेतु सिर्फ परीक्षा पर निर्भरता समाप्त किया गया है। शिक्षकों का एक बड़ा समूह और अभिभावक यह कह रहे हैं कि बच्चे परीक्षा के भय से पढ़ते थे, जो समाप्त हो गया है। आप इस कथन से कितना हम या असहमत हैं और क्यों?
3. जिन बिन्दुओं का निष्पक्ष मूल्यांकन कठिन है, यथा– ड्राईंग, मौखिक कुशलताएँ आदि का मूल्यांकन कैसे किया जा सकता है?
4. क्या शिक्षार्थी के आत्मविश्वास, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, नैतिक मूल्य आदि का मूल्यांकन हो सकता है? यदि हाँ तो कैसे?

6.6 आकलन के उद्देश्य :–

अब तक जो अध्ययन हमने आकलन के बारे में किया एक बात तो स्पष्ट हो गई कि आकलन का उद्देश्य शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सुधार करना तथा विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों के लिए निर्धारित उद्देश्यों का पुनरावलोकन करना है। इसके अलावा आकलन उद्देश्यों की प्राप्ति एवं विद्यार्थी की योग्यता के विकास को मापने के लिए किया जाता है न कि केवल यह जानने के लिए कि विद्यार्थी ने कितना याद किया है।

भाषा के संदर्भ में आकलन का उद्देश्य है– भाषा की समझ, इसे विभिन्न संदर्भों में उपयोग करने की क्षमता और इसके सौंदर्यपरक पहलू परख सकने की क्षमता का मापन। इससे हमें सीखने वाले की वास्तविक स्थिति का पता चलता है और उसकी स्थिति बेहतर करने के लिए समय पर उचित हस्तक्षेप करने के लिए आवश्यक पहल करने के संकेत भी मिलते हैं। इन उद्देश्यों के आलोक में ही राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 **'एक समग्र भाषिक निपुणता'** की बात पर बल देता है।

इनके अतिरिक्त आकलन का उद्देश्य शिक्षार्थी के प्रगति का सार्थक रिपोर्ट, कोर्स की समाप्ति पर उसे प्रमाण पत्र देना, समय–समय पर अभिभावकों, प्रबंधन तथा समुदाय को शिक्षार्थी की प्रगति की गुणवत्ता एवं स्तर की रिपोर्ट देना है।

6.7 आकलन किसका और कब?

शिक्षार्थी का आकलन मात्र आकलन नहीं है, एक तरह से वह शिक्षक का भी आकलन है। यदि कक्षा के अधिकांश बच्चे सीख रहे हैं तो संबंधित शिक्षक बधाई के पात्र हैं। यदि नहीं सीख रहे हैं तो शिक्षक को सोचना चाहिए कि शिक्षार्थियों के सीखने के तरीकों में किस तरह के बदलाव की आवश्यकता है, जो शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी एवं सफल बना सके।

आकलन शिक्षक और शिक्षा शिक्षार्थी से आगे बढ़कर पूरी शिक्षायी व्यवस्था एवं अधिगम से जुड़े सभी पक्षों के बारे में भी पृष्ठपोषण देता है। यदि कई शिक्षक यह पाते हैं कि भरसक प्रयास के बावजूद भी

शिक्षार्थी कोई कौशल प्राप्त नहीं कर पा रहें हैं तो पाठ्यवस्तु के शिक्षण, प्रशिक्षण और पाठ्यक्रम के बारे में सोंचना आवश्यक होगा। यदि एक शिक्षार्थी का समग्र विकास हमारी शिक्षा का केन्द्र बिंदु है, तो आकलन का तस्वीर कुछ इस प्रकार होगा –

ऊपर के ग्राफिक से स्पष्ट हो रहा है कि आकलन बहुमुखी है। हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य को लेकर हमारी समझ बहुत स्पष्ट नहीं है। इसका असर प्रक्रिया से लेकर उत्पाद (अधिगम) तक दिखता है। परिणामतः आकलन प्रभावी एवं प्रतिपुष्टि सटीक नहीं हो पाता है।

हिन्दी शिक्षण–उद्देश्य के साथ विडंबना है कि हिन्दी शिक्षण के क्रम में भाषिक कुशलताएँ तथा क्षमताएँ पीछे छूट जाती हैं एवं नैतिक मूल्य शिक्षण में हावी हो जाते हैं। प्रारंभिक कक्षाओं में हिन्दी शिक्षण के क्रम में कहानी, कविता, एकांकी, निबंध आदि के शिक्षण के क्रम में पाठ का वाचन स्वंय या शिक्षार्थियों से कराकर और पाठ्यपुस्तक के कुछ अभ्यास प्रश्नों का हल कर शिक्षण प्रक्रिया पूरी मान लेने की परंपरा है। हाँ, पाठ में आए कुछ कठिन शब्दों के अर्थ श्यामपट् पर अवश्य लिख दिए जाते हैं। पाठान्त में पाठ का जो नैतिक पक्ष है, उस पर बात कर काम समाप्त मान लिया जाता है। इस संदर्भ में राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, पटना एवं यूनिसेफ पटना के सहयोग से शिक्षण सहयोग संदर्शिका 'शिक्षक साथी' विकसित की गई है। इसका उद्देश्य है शिक्षक/शिक्षिकाओं में उद्देश्य से लेकर गतिविधि तक की समझ स्पष्ट करना। आइए शिक्षक साथी के अंकुर भाग–1 के एक अध्याय को देखते और समझते हैं।

समझें-सीखें
गुणवत्ता शिक्षा कार्यक्रम, बिहार

पाठ - 12 हरे पेड़

उद्देश्य

- बच्चों में अपने विचार और अनुभव बताने की क्षमता विकसित करना।
- धैर्यपूर्वक बात सुनने की क्षमता विकसित करना।
- अंदाज़ लगाकर मात्रावाले शब्दों की पहचान करना।
- सीखे गये अक्षरों की मदद से नये शब्द बनाना।
- शब्दों को देखकर लिख सकना।
- व, ए तथा ऐ अक्षर एवं ' े ' तथा ' ै ' की मात्रा का प्रयोग करने की कुशलता विकसित करना।

पाठ–परिचय

- बच्चों से पूछें कि क्या आपने कभी पेड़ से बात की है? अगर बच्चे कुछ बताएँ तो उसे श्यामपट पर लिखें। अगर नहीं जवाब दें तो दो बच्चों का जोड़ा बनाकर कक्षा में कुछ को पेड़ और कुछ को सवाल पूछने वाला बच्चा बनाकर सवाल–जवाब करायें।
- शिक्षक पेड़, गाय, नल, कुआँ, झूले, चींटी के बारे में एक–एक करके बात करें। ये आपने कहाँ–कहाँ देखें हैं ? ये दिन भर क्या–क्या करते हैं? आदि सवाल बातचीत के हो सकते हैं।
- **ए** तथा **ऐ** अक्षर के शब्द लिखकर उच्चारण में अंतर स्पष्ट करें। **'ए'** की मात्रा को कुछ शब्द लिख कर समझायें, जैसे– मेल, खेल एवं रेल इत्यादि। ऐ की मात्रा के कुछ शब्द लिखकर समझायें, जैसे – मैल, पैर इत्यादि।
- बारहखड़ी में ऐ, ए वाले अक्षरों को पढ़ने को कहें और उनसे शब्द बनवायें।

समूह–कार्य

- समूह बनाकर पाठ्य–पुस्तक, अन्य पुस्तक एवं अखबार में 'ए' अक्षर वाले शब्दों को ढूँढ़ने के लिए कहें।
- समूह बनाकर पाठ्य–पुस्तक, अन्य पुस्तक एवं अखबार में 'ऐ' अक्षर वाले शब्दों को ढूँढ़ने कहें।
- समूह बनाकर पाठ्य–पुस्तक में **'व'** अक्षर वाले शब्दों को ढूँढ़वायें।
- जिन अक्षरों से पूर्व के पाठ में परिचय हो चुका है उन्हें इस पाठ में खोजवायें तथा उनके उच्चारण का अभ्यास करायें।
- समूह में बच्चों को पूरे पाठ को पढ़ने का प्रयास करने को कहें।
- समूह में अभ्यास के प्रश्न हल करायें।
- बारहखड़ी के अक्षरों के फ्लैश–कार्ड बना कर समूह में दें और उनसे शब्द बनवायें।
- जोड़े बनाकर पाठ का वार्तालाप करायें।

व्यक्तिगत–कार्य

- किसी भी अक्षर में ' े ' एवं ' ै ' की मात्रा लगाकर नए शब्द बनायें तथा पढ़ें।

<u>मनन–6</u>

- हिंदी शिक्षण प्रक्रिया में ' शिक्षक साथी ' क्या आपकी मदद कर रहा है? हाँ / ना तो कैसे ?
- प्राथमिक कक्षाओं के किसी भी हिंदी पाठ्यपुस्तक के किसी एक पाठ की शिक्षण सहयोग संदर्शिका विकसित करें।

आकलन तभी प्रभावी होगा जब हमारा शिक्षण उद्देश्य स्पष्ट हो और उद्देश्य संप्राप्ति को लक्ष्य कर हमारी शिक्षण प्रक्रिया और सहायक शिक्षण सामग्री का चयन हो।

आकलन के संबंध में यह बात ध्यान में रखना जरूरी है कि शिक्षार्थी का भाषा संबंधी आकलन केवल भाषा की कक्षा तक सीमित न रहे। गणित की कक्षा में किसी सवाल का जवाब देते समय शिक्षार्थी के मौखिक या लिखित अभिव्यक्ति का आकलन किया जा सकता है। पर्यावरण अध्ययन की कक्षा इस बात के पर्याप्त अवसर देती है कि बच्चे में सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना, परिवेशीय सजगता, अवलोकन, वर्गीकरण, विश्लेषण आदि कौशलों का आकलन किया जा सके। इस प्रकार अन्य विषयों की कक्षाओं में भी शिक्षार्थी के भाषायी कौशलों को परखा जा सकता है।

आकलन कब ?

सीखने के परिणामों का आकलन शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के साथ सतत रूप से जुड़ा हुआ है। जब शिक्षक नियमित रूप से शिक्षार्थियों की प्रगति पर बराबर दृष्टि रखे हुए हों तो उस पर प्रतिक्रया करने, पृष्ठपोषण देने और सुधार संबंधी तरीकों को अपनाने के लिए कुछ अवधियाँ तय करनी होंगी। इसके लिए जरूरी है कि व्यावहारिक अवधियाँ तय की जाएँ और उनका अनुसरण किया जाए। हालाँकि कक्षा में अनौपचारिक रूप से अवलोकन की प्रक्रिया तो चलती ही रहनी चाहिए। एक निश्चित अल्पावधि में बच्चे के शुरूआती दौर को अनौपचारिक रूप से देख लेना चाहिए। आवश्यक समीक्षा एवं तद्नुसार सुधार के साथ शिक्षार्थियों के सीखने को बेहतर और सृदृढ़ बनाया जा सकता है।

दैनिक आधार पर शिक्षार्थी के साथ सतत रूप से अन्तःक्रिया करना और कक्षा के भीतर या बाहर उनका आकलन होते रहना चाहिए। सावधिक आकलन (हर तीन या चार महीने पर) द्वारा भी शिक्षार्थी को उनके कामों की प्रगति और विशेष आवश्यकता संबंधी राय देनी चाहिए। हाँ, सावधानी इतनी जरूर हो कि यह प्रक्रिया जाँच परीक्षा का रूप न ले।

6.8 आकलन कैसे ?

हम पहले ही यह बात समझ चुके हैं कि भाषा के संदर्भ में आकलन के उद्देश्य हैं– भाषा की समझ, इसे विभिन्न संदर्भो में उपयोग करने की क्षमता और इसके सौंदर्यपरक पहलू परख सकने की क्षमता का मापन। अब सवाल उठता है कि उद्देश्य के आलोक में हम सभी पक्षों का सम्यक आकलन कर सकते हैं क्या? आकलन की जो मौजूदा प्रक्रिया है उसमें मौखिक एवं लिखित परीक्षा द्वारा बच्चों की शब्द संपदा, व्याकरण तथा पढ़ने और लिखने के कौशल की जाँच की जाती है। वह जाँच भी आमतौर पर पाठ्यपुस्तक पर ही आधरित होता है और उनका उत्तर देना भाषा की समझ पर कम और स्मृति के कौशल पर अधिक आधारित होता है। आधुनिक समय में जहाँ बच्चे की सृजनात्मकता, नवाचार एवं विकास पर बल दिया जा रहा है, हमें मूल्यांकन एवं प्रतिपुष्टि (फीडबैक) के नवीन तरीकों को पुनः परिभाषित करना एवं ढूंढ़ना होगा।

आकलन के तरीकों पर बात करने से पहले यह समझ लेना आवश्यक है कि –

- हर बच्चा अपने आप में अद्वितीय है।
- सीखने–सिखाने के उसके अपने कुछ खास तरीके होते हैं।
- सभी बच्चे अपनी एक निश्चित गति से सीखते हैं।

- व्यक्ति विशेष की निश्चित गति (पेस) और सीखने के तरीकों को संबोधित करने वाली आकलन की तकनीकें उनमें आत्मविश्वास पैदा करती हैं और
- सीखने के प्रति ललक पैदा करती हैं साथ ही बेहतर प्रदर्शन के लिए उत्साहित करती हैं।

मनन – 6

- ''सभी बच्चे अपनी एक निश्चित गति से सीखते हैं।'' यह कथन आकलन में किस तरह के बदलाव की अपेक्षा करता है?
- ''हर बच्चा अपने आप में अद्वितीय है।'' आकलन के संदर्भ में इस कथन का आशय क्या है?

संभव है मनन के पश्चात आपकी एक साझी समझ बनी होगी कि जब सभी शिक्षार्थियों के सीखने की गति अलग–अलग है, तो एक समान आकलन की बात करना बेमानी है। इसका अध्ययन आकलन के विभिन्न तरीके, उपकरण और तकनीकों से संबंधित इस उप इकाई में करेंगे।

6.8.1 आकलन के विभिन्न तरीके –

आकलन के चार मूलभूत तरीके हैं –

(i) व्यक्तिगत आकलन– यह आकलन शिक्षार्थी विशेष को केन्द्र में रखकर किया जाता है।
(ii) सामूहिक आकलन – कक्षा के सभी या छोटे–बड़े समूह में बँटें शिक्षार्थियों के कार्य, व्यवहार, सहयोग, नेतृत्व आदि का आकलन किया जाता है।
(iii) स्व–आकलन– इसमें शिक्षार्थी द्वारा स्वंय के सीखने से संबंधित आकलन किया जाता है।
(iv) सहपाठियों द्वारा आकलन– इसमें शिक्षार्थी परस्पर एक दूसरे का आकलन करते हैं।

6.8.2 आकलन के उपकरण और तकनीकें –

(i) मौखिक आकलन – यह भाषायी कौशलों के आकलन का बहुत ही सरल और सटीक तकनीक है। विद्यालय में औपचारिक या अनौपचारिक गतिविधियों के आयोजन के क्रम में शिक्षार्थियों के संवाद कौशल, अभिनय, कौशल आदि का आकलन किया जा सकता है। मौखिक आकलन के लिए औपचारिक गतिविधियों का आयोजन किया जा सकता है, यथा–

(क) प्रश्न–उत्तर सत्र– बच्चों की भाषा संबंधी तत्परता, शब्द संपदा, उच्चारण और भाषा की बुनावट संबंधी कौशल जानने के लिए तरह–तरह के सवाल बनाए जा सकते हैं। सवाल पाठ्यपुस्तक की चहारदीवारी के बाहर के भी होने चाहिए जो शिक्षार्थियों के दैनिक जीवन से जुड़े हों और उनकी रूचियों में शामिल हों।

(ख) कहानी कहना– बच्चे/बच्चियों का कहानी से रिश्ता बचपन का ही है। कहानी सुनते–सुनते कहानी गढ़ने का कौशल या कहानी अपने शब्दों में सुनाते समय शब्दों का चयन और वाक्यों की बुनावट भी आकलन योग्य होते हैं।

(ग) बोलकर पढ़ना– भाषा संबंधी आकलन की पारंपरिक विधियों में यह विधि आज भी समीचीन और प्रासंगिक है। इसके द्वारा शिक्षार्थी के पठन कौशल के साथ उनके उच्चारण, विराम चिह्नों का सटीक प्रयोग, भावाभिव्यक्ति आदि का सफल आकलन किया जा सकता है।

(घ) वर्णन करना– वर्णन करना प्राथमिक कक्षा के शिक्षार्थियों के मौखिक आकलन का कारगर जरिया है। देखी–सुनी या पढ़ी बातों का वर्णन करना भी भाषायी कौशल का द्योतक है।

(ड़) प्रस्तुति और अभिनय– प्रस्तुति के क्रम में अपनी बात रखने के तरीके, संवाद कौशल और उसकी प्रभावोत्पादकता, कथ्य विषय की समझ आदि का आकलन किया जा सकता है। अभिनय में शिक्षार्थी के संवाद कौशल के तहत बलाघात, अनुतान, शारीरिक भाषा, हाव–भाव आदि का आकलन किया जाता है।

(ii) अवलोकन– अवलोकन द्वारा चर्चा करना, अभिनय, स्वतंत्र अभिव्यक्ति, समूह में संवाद, चित्र पढ़ना आदि गतिविधियों का औपचारिक या अनौपचारिक अवलोकन आकलन का महत्वपूर्ण अंग बन जाता है। अवलोकन कक्षा के अंदर या बाहर किसी भी स्थान पर कभी भी किया जा सकता है। इसके द्वारा हम शिक्षार्थी के व्यवहार, रूचि, चुनौती आदि के बारे में जानकारी इकट्ठा करते हैं। अवलोकन के क्रम में किए गए प्रेक्षणों को टिप्पणियों के रूप में तुरंत दर्ज कर लेना चाहिए। अवलोकन में पूर्वाग्रह से सर्वथा बचने की आवश्यकता है।

(iii) लिखित आकलन– लिखित आकलन सिर्फ लेखन कौशल का आकलन नहीं है। इसके द्वारा पढ़ना, समझना, ग्रहण करना, कल्पना करना, स्वतंत्र अभिव्यक्ति देना आदि का आकलन किया जाता है। शर्त बस यह है कि आकलन हेतु जिस उपकरण का प्रयोग किया जा रहा है इसे सर्जनात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है यथा जाँच पत्र संदर्भ का विस्तार करने वाला, कल्पनाशीलता का पोषण करनेवाला, अनुभव आधारित उत्तरों का पोषण करने वाला एवं विश्लेषण क्षमता को बढ़ाने वाला हो। हम शिक्षकों को ये जिद्द छोड़नी होगी कि यदि वह गाय पर निबंध लिख रहा/रही है तो गाय को चौपाया ही लिखे। यदि वह चार टांग भी लिख रहा है तो उसे स्वीकृति देनी होगी।

प्राथमिक कक्षाओं में लिखित आकलन हेतु श्रुतलेख भी जाँच उपकरण के रूप में प्रयुक्त होता है। यह बच्चे की स्मृति और मात्राओं, वर्तनी आदि की जाँच नहीं है बल्कि समग्र भाषिक निपुणता/क्षमता की जाँच में भी सहायक है।

(iv) पोर्टफोलियो – पोर्टफोलियो शिक्षार्थी का उद्देश्य विशेष के लिए किए गए कार्य के चुने हुए हिस्सों का संकलन होता है। पोर्टफोलियो किसी भी बच्चा/बच्ची के क्रमिक विकास का सबसे प्रमाणिक रिकार्ड उपलब्ध कराता है। यह स्वमूल्यांकन करने के कौशलों का परिपालन का एक प्रभावी उपकरण सिद्ध हो सकता है जो विद्यार्थियों को स्वतंत्र चिंतन के लिए प्रेरित करता है। एक समयावधि में एक कालांश या पूरे विद्यालय सत्रान्त संकलित कार्य के आकलन हेतु पोर्टफोलियो का उपयोग विशेषकर रचनात्मक मूल्यांकन करने में प्रभावकारी हो सकता है।

पोर्टफालियो निर्माण के समय कुछ सावधानी बरतने की आवश्यकता होगी। पोर्टफोलिया में रिकार्ड सम्मिलित करने से पूर्व उसके औचित्य पर विचार करना होगा। सभी कागज/वस्तुएँ शामिल करने से पोर्टफोलियो निरर्थक एवं कागजों का जंजाल बनकर रह जाएगा। पोर्टफोलिया में शिक्षार्थी के समारोह या अवसर विशेष पर बनाए गए प्रदर्श, फोटोग्राफ्स, चित्रांकन आदि को भी शामिल किया जा सकता है।

(v) जाँच सूची – जाँच सूची विद्यार्थियों से संबंधित विशेषताएँ, व्यवहार तथा घटना विशेष की उपस्थिति के बारे में अवलोकन करके उनके आधार पर विश्लेषण करने का दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह शिक्षक को शिक्षार्थी के उन कौशलों की जाँच करने में सहायता करता है जिनमें उन्हें और अधिक प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है। शिक्षार्थी के अधिगम के जिन हिस्सों का आकलन करना है उससे संबंधित प्रश्नावली तैयार रहती है। शिक्षार्थी का अपना जवाब हाँ/ना में देना होता है।

(vi) रेटिंग स्केल– रेटिंग स्केल एक यंत्र है जिसमें निर्धारित किये जाने वाले वस्तु को संख्यांक निर्दिष्ट किया जाता है। रेटिंग स्केल भी एक तरह से जाँच सूची के समान है लेकिन इसका इस्तेमाल तब करते हैं जब सूक्ष्म विवरण की आवश्यकता पड़ती है। इसमें निर्धारण किए जा रहे वस्तु के गुणस्तर को सूचित करना होता है। इसे हम निम्न उदाहरण द्वारा समझ सकते हैं –

मौखिक आकलन (पाँच बिन्दुओं वाला रेटिंग स्केल)

विवरण	1	2	3	4	5
प्रवाह				✓	
शब्द संपदा			✓		
संरचना				✓	
अभिव्यक्ति					✓

ऊपर के उदाहरण में शिक्षार्थी का प्रवाह में रेटिंग–4, शब्द संपदा में–3, संरचना में–4 तथा अभिव्यक्ति में–5 हैं जो उनके स्तर की जानकारी दे रहे हैं। शिक्षार्थी सभी क्षमताओं में रेटिंग–5 प्राप्त करें यही हम सबका उद्देश्य होगा।

6.9 आकलन प्रपत्र एवं प्रगति पत्रकः संबंध एवं संधारण

हिन्दी शिक्षण अधिगम आकलन में आकलन प्रपत्र एवं प्रगति पत्रक की अहम भूमिका है। इसे हम बारी–बारी से देखते और समझते हैं –

आकलन प्रपत्र :– आकलन प्रपत्र बच्चे की वर्ष भर की प्रगति का लेखा जोखा है। यह प्रपत्र सीखने के उपकरण या साधन के रूप में होगा न कि बच्चे का सिर्फ उपलब्धि स्तर जानने के लिए। इसका उपयोग शिक्षार्थी से संबंधित आवश्यक सूचना प्राप्त करने तथा कक्षायी गतिविधियों को दिशा देने के लिए किया जाता है।

आकलन के बिन्दुओं को ध्यान में रखकर ही आकलन करना श्रेयस्कर। आकलन के बिन्दुओं को पूर्व में ही निर्धारित कर लेना चाहिए। बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना द्वारा विकसित सतत् व्यापक एवं मूल्यांकन पुस्तक में वर्गवार हिन्दी विषय से संबंधित दक्षताओं का निर्धारण किया गया है। दक्षताओं का निर्धारण कुछ इस प्रकार हो सकता है।

64

बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्

विद्यालय का नाम :

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रपत्र

विषय- हिन्दी

वर्ग - II   संकुल का नाम :   प्रखंड :   जिला :

क्रम संख्या	छात्र/छात्रा का नाम	साथियों एवं अध्यापकों से बेझिझक और सहजता से बातचीत करता है	लय एवं हाव–भाव के साथ कविता पढ़ता है	कहानियों को समझते हुए पढ़ता है	अक्षरों का उच्चारण मानक के अनुरूप करता है	संयुक्ताक्षर वाले शब्दों को जानता है	मात्राओंवाले परिचित शब्दों को लिखता है	परिचित वस्तुओं, व्यक्तियों, प्राणियों, के नामो की सूची बनाते हुए लिखता है
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1								
2								
3								
4								
5								
6								
7								
8								
9								
10								
11								
12								
13								
14								
15								

संकेतक :– √ – जानता है
→ – प्रयासरत्त है
X –नहीं जानता है

विषय शिक्षक का नाम –
हस्ताक्षर –

उपर्युक्त संकेत चिह्नों का प्रयोग तब तक पेंसिल से किया जाय जबतक कि बच्चे अपने अधिगम लक्ष्य की प्राप्ति न कर लें। लक्ष्य की प्राप्ति के उपरान्त (✓) चिह्न का प्रयोग कलम से करते हुए प्राप्ति की तिथि अंकित करें।

अपनी आवश्यकता एवं परिस्थिति के हिसाब से हम दक्षताओं को स्वयं निर्धारित कर सकते हैं। आकलन हेतु एक पंजी बनाकर उसके शुरु में ही संबंधित कक्षा के आकलन के बिन्दु लिख लिए जाएँ। फिर शिक्षार्थियों के नाम वाले कॉलम में संबंधित दक्षता की स्थिति अंकित की जानी चाहिए। आकलन तो सतत ही होगा। हाँ प्रगति पत्रक के संधारण हेतु चार–चार माह पर कुछ गतिविधियों का आयोजन अलग से किया जाए। गतिविधियों के दौरान जो स्थिति दिखे उसी के आधार पर टिप्पणी दर्ज की जाए। टिप्पणी अपनी भाषा में एवं स्पष्ट हो कि बच्चे में कौन–सी दक्षता कहाँ तक आ गई है तथा कहाँ–कहाँ कठिनाई आ रही है। आगामी योजना के बिंदु में विद्यार्थियों के कमजोर बिंदुओं के लिए आपकी क्या योजना होगी उसका उल्लेख होना चाहिए।

प्रगति पत्रक

प्रगति पत्रक शिक्षार्थी की प्रगति से अवगत कराने का साधन है। अपने प्रदेश में भी शिक्षार्थियों के विषयवार सीखने के बिन्दुओं (दक्षताओं) को ध्यान में रखकर प्रगति–पत्रक विकसित किया गया है। इसमें शिक्षार्थी से संबंधित सामान्य जानकारी एवं अकादमिक उपलब्धि को चार–चार माह में दर्ज किया जाता है। अंकित करने का आधार शिक्षण सहयोग संदर्शिका 'शिक्षक साथी' एवं आकलन रजिस्टर में दर्ज टिप्पणी होती है।

हिन्दी विषय से संबंधित वर्ग–IV के प्रगति पत्रक को नमूने के तौर पर देख सकते हैं –

वर्ग-IV **हिन्दी**

सीखने के बिन्दु	कविता/कहानी/घटना को हाव-भाव के साथ सुनाता है।	परिचित संदर्भ में बातचीत करता है।	कहानी में आये पात्रों के बारे में राय देता है।	कविता के अर्थ को समझता एवं लिखता है।	बिना रुकावट के पढ़ता है।	समान वर्णों के उच्चारण में अंतर कर लेता है।	संदर्भ में आये नये शब्दों का अर्थ समझकर उपयोग करता है।	अपने विचार को चार-पाँच वाक्यों में लिखना जानता है।	प्रश्नों के उत्तर लिखना जानता है।	शब्दों के अर्थ, उल्टे अर्थवाले शब्द एवं समान अर्थवाले शब्दों को जानता है।	पत्र लिखना जानता है।	लेख लिखना जानता है।
पहला सत्र												
दूसरा सत्र												
तीसरा सत्र												

उपलब्धि संकेतकः–	सीख चुका है (★★★)	सीख रहा है (★★)	प्रयास की आवश्यकता है (★)

मननः–

1. क्या आपको लगता है कि वर्ग –4 के इस प्रगति पत्रक में सीखने के जो बिन्दु दिए गए हैं, उनके आलोक में शिक्षार्थियों के वर्ग –4 के भाषाई स्तर का आकलन संभव है ? हाँ/ना तो क्यों ?
2. वर्ग–I के लिए एक प्रगति पत्र (हिन्दी विषय के लिए) विकसित करें।

शिक्षार्थियों के प्रगति पत्रक में सीखने के बिन्दुओं को सत्रवार भरा जाना है ताकि उनके शैक्षिक स्तर का आकलन किया जा सके। इसके लिए उपलब्धि के आधार पर एक, दो या तीन स्टार अंकित करना है। एक अकादमिक वर्ष के जुलाई, नवम्बर एवं मार्च महीने में इसका संधारण होना अनिवार्य है।

प्रगति पत्रक और आकलन /मूल्यांकन प्रपत्र में गहरा संबंध है। दरअसल आकलन/मूल्यांकन प्रपत्र ही शिक्षार्थी के प्रगति पत्रक के संधारण का आधार है। शिक्षार्थी के अवधारणा की समझ, कौशल, क्षमता आदि की अद्यतन जानकारी आकलन प्रपत्र में दर्ज होता है।

आइए आकलन से संबंधित कुछ प्रस्तावित गतिविधियाँ

हम हमेशा खेल–खेल में शिक्षा, आनंदायी शिक्षा, बाल केन्द्रित शिक्षा आदि की बात करते हैं । आईए आज हम आनंददायी आकलन के लिए कुछ गतिविधियों को देखते हैं । ये गतिविधियाँ न सिर्फ शिक्षार्थियों के

आकलन को मजेदार बनाएँगी बल्कि शिक्षक/शिक्षिकाओं में इस तरह के गतिविधियों के निर्माण/विकास की दृष्टि भी प्रदान करेंगी। ये गतिविधियाँ इस प्रकार हैं–

चित्र पढ़ना

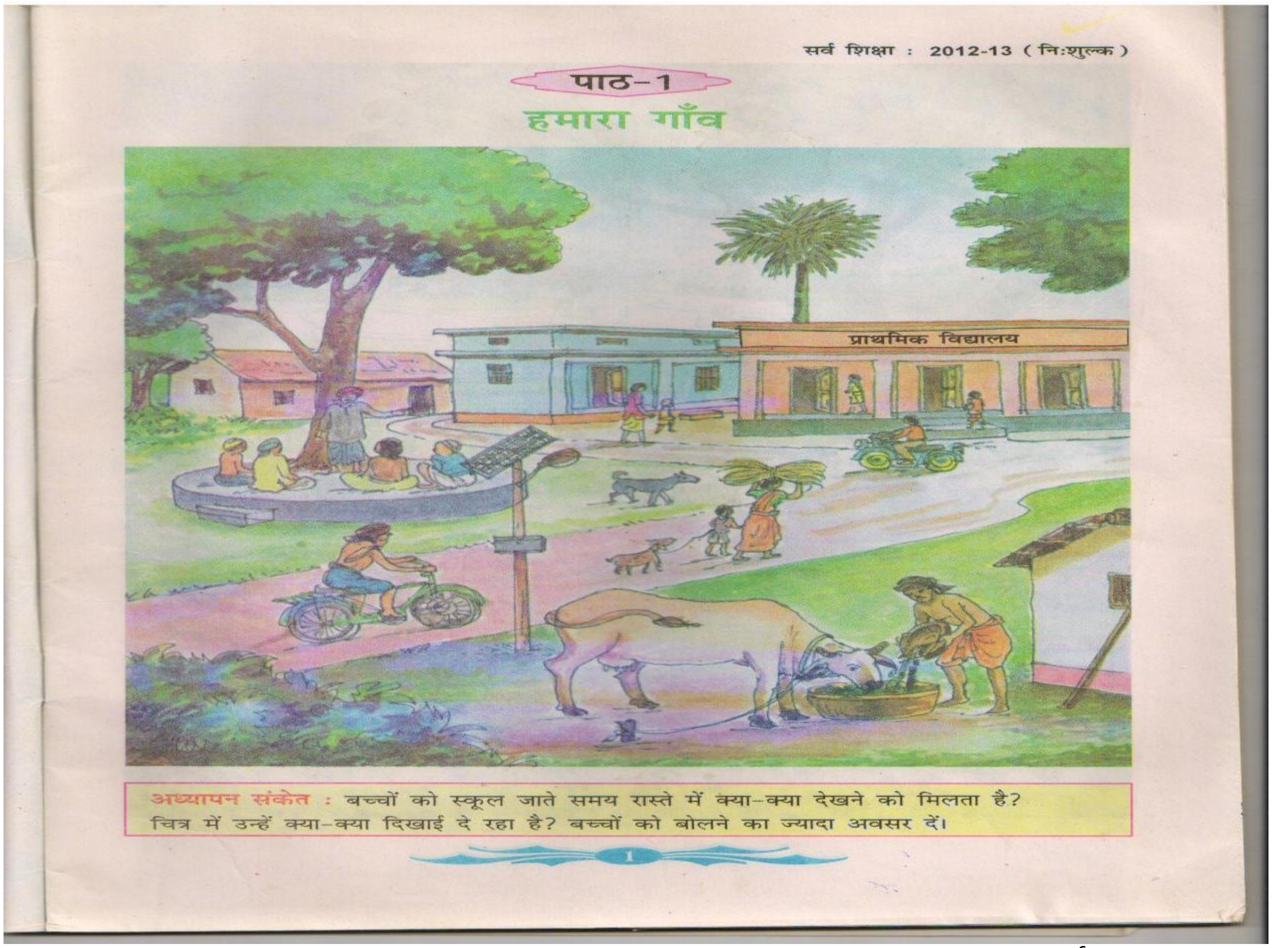

<u>(अंकुर, भाग–1, वर्ग–1, प्रथम पाठ)</u>

<u>दिए गए चित्र में कौन क्या कर रहा है ?</u>

- बच्चे/बच्चियों से इस तरह के सवाल छोटे समूह में पूछे जाएँ।
- सभी समूह के सभी शिक्षार्थी को अपनी बात कहने का मौका दिया जाए।
- शिक्षार्थियों के बोलने के क्रम में उनके शब्द चयन, वाक्य विन्यास, अपनी बात को स्पष्टता के साथ कहने आदि का आकलन किया जा सकता है।

छोटे समूह में शिक्षार्थी अपनी बातों को खुलकर रखते हैं। छोटे समूह में वैसे शिक्षार्थी को बातचीत के लिए प्रेरित करना आसान होता है जो सक्रिय नहीं या कुछ कम दिखते हैं। छोटे समूह मे क्षमताओं का पहचान भी आसान होता है। इस गतिविधि का सबल पक्ष है आकलन के साथ–साथ सीखने का मौका देना । यहाँ उद्देश्य आकलन करके संतुष्ट होना नहीं है बल्कि आकलन के साथ सीखने की प्रक्रिया को गति देना है।

- **<u>क्या –क्या दिखाई दे रहा है ?</u>**

बच्चे/बच्चियों को चित्र को ध्यान से देखने के लिए प्रेरित किया जाए। फिर उनसे पूछा जाए कि क्या –क्या दिख रहा है ? बच्चे /बच्चियों द्वारा जो नाम बताया जा रहा है उसे ब्लैक बोर्ड पर लिखा जाए। कई बार चित्रों के नाम बुलवाते हुए नामों के नीचे उँगली रखा जाए। यह जानने के लिए कि सभी शिक्षार्थी नामों को पहचानने में लगे हैं, तो प्रत्येक शिक्षार्थी को शब्द चित्र के नीचे उँगली रखवाकर उनका नाम बताने के लिए कहा जाए ।

यह सच है कि पहली कक्षा में बच्चे /बच्चियाँ पढ़ना नहीं जानते, किन्तु शब्दों की आकृतियों को अपने जाने पहचाने नामों के रूप में देखकर शिक्षार्थी धीरे–धीरे पहचानने लगते हैं। ऐसे कई अभ्यासों के बाद वे उन शब्द –ध्वनियों के लिखित रूप से भी परिचित होने लगते हैं। इस तरह चित्रों की सहायता से बड़ी आसानी से हम ये आकलन कर सकते हैं कि कौन कितने शब्दों की पहचान कर पा रहा है।

- **<u>कौन किससे क्या बोल रहा है –</u>**

इस गतिविधि में दो–दो की जोड़ी में बातचीत का अवसर दें । शिक्षार्थियों से कहें कि चित्र को ध्यान से देखें और एक दूसरे से पूछें और बताएँ कि कौन किससे क्या कह रहा है ?
जैसे –
–चबूतरे पर खड़ा आदमी बैठे लोगों से क्या कह रहा है ?
–किसान गाय से क्या बोल रहा है ?
–गाय किसान को क्या जवाब दे रही है ?
–बकरी बच्ची से क्या कह रही है ?
–कुत्ता किसको क्या कह रहा है ? आदि ।

- **<u>कौन कितना</u>**

यह गतिविधि भी जोड़ी में कराएँ। इसमें प्रत्येक शिक्षार्थी आपस में संख्या संबंधी सवाल पूछेंगे–

- चबूतरे पर कितने आदमी हैं ?
- गाय, कुत्ता और बिल्ली की संख्या बताएँ ?
- साईकिल और मोटर साईकिल की संख्या बताएँ ?

इस तरह के संख्या बोध जैसे सवाल उनके गणना संबंधी पूर्व ज्ञान को तो पुष्ट करते ही हैं, भाषा सीखने की दीवार को भी तोड़ते हैं । ऐसी मान्यता है कि भाषा की कक्षा में भाषा और गणित की कक्षा में गणित ही सीखी जा सकती है। यह गतिविधि स्पष्ट करती है कि ज्ञान विषय का मोहताज नहीं है। भाषा में गणित और गणित में भाषा संबंधी ज्ञान हासिल किए जा सकते हैं।

ऊपर दिए गए प्रश्न नमूने के तौर पर हैं। इनसे बातचीत की शुरुआत की जा सकती है। बातचीत एक बार शुरू हो जाने पर शिक्षार्थी ही कई तरह के प्रश्न पूछना शुरू कर देंगे। इस गतिविधि का मुख्य मकसद बच्चों से खुले प्रश्न पूछना है । इस तरह के प्रश्न शिक्षार्थियों में कल्पनाशीलता एवं चिंतन के गुण

विकसित करते हैं। इस कल्पनाशीलता को व्यक्त करने के लिए शब्दों के चयन से लेकर वाक्य विन्यास को गढ़ने का अवसर प्राप्त होता है ।

इसी तरह कौन कहाँ रहता है, आवाज निकालो और पहचानो आदि गतिविधियाँ करायी जा सकती हैं । इन गतिविधियों का मकसद है अपने आसपास की दुनिया को ध्यान से देखने, समझने और जानने की आदत को प्रोत्साहित करना है। इस तरह के गतिविधियों में जो बातचीत होती है, बच्चे /बच्चियाँ उनसे भाषा की बारीकियों को समझते हैं।

उपर्युक्त गतिविधियों से निम्नांकित बिदुओं के आकलन में हम सफल हुए –

- सवारी, जानवरों आदि के नाम लिखित रूप में पहचान लेते हैं । (दिए गए चित्र के आलोक में)
- उनके बारे में छोटे–छोटे वाक्य बोल लेते हैं ।
- उनसे संबंधित सवाल एवं जवाब करते हैं ।
- कल्पनात्मक विचार व्यक्त कर लेते हैं ।
- समझ के साथ भाषा का उपयोग करते हैं ।
- भाषा और गणित साथ –साथ भी सीख सकते हैं।

इसी तरह कविता, कहानी, चित्र तथा कथा आदि के सहारे शिक्षार्थियों के भाषिक क्षमता एवं कुशलताओं का आकलन छोटी–छोटी गतिविधियों के द्वारा किया जा सकता है।

6.11 सारांश–

1. आकलन एवं मूल्यांकन शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाने में प्रमुख भूमिका अदा करते हैं।
2. आकलन सीखने–सिखाने की प्रक्रिया एवं सामग्री में यथा आवश्यक बदलाव हेतु प्रतिपुष्टि (फीड बैक) प्रदान करता है।
3. आकलन और सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को साथ–साथ चलना चाहिए।
4. आकलन सिर्फ शिक्षार्थी ही नहीं बल्कि शिक्षक, शिक्षण सामग्री, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, पाठ्यक्रम आदि का भी होता है। इनके आकलन से प्राप्त प्रतिपुष्टि के आधार पर यथा आवश्यक इनमें बदलाव किया जाता है।
5. आकलन का उपयोग सीखने के उपकरण (Learning Tool) और उपलब्धि स्तर जानने (Testing Tool) के रूप में होता है।
6. आकलन अधिगम की स्वाभाविक प्रक्रिया में ही होनी चाहिए।
7. आकलन शिक्षार्थी के पूर्व की प्रगति और उसके उम्र सापेक्ष मापदंडों की तुलना में होनी चाहिए।
8. इसके लिए आवश्यक है कि सभी बच्चे/बच्चियों के लिए भौतिक और मानवीय संसाधन सुनिश्चित हों।
9. सावधिक परीक्षाओं से सिर्फ यह पता चलता है कि शिक्षार्थी क्या जानता है, पर यह नहीं पता चलता की वह क्या नहीं जानता है और न जानने का कारण क्या है?
10. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन, मूल्यांकन की कोई पृथक गतिविधि न होकर सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग है।

11. शिक्षार्थियों के सीखने की गति तीव्र करने के लिए आवश्यक है कि मूल्यांकन बालकेन्द्रित, कक्षायी विविधता को समझने वाली, आवश्यकतानुसार लचीली, सीखने की गति और स्तर के अनुसार हो।
12. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन शिक्षार्थियों के अकादमिक प्रगति के साथ–साथ शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास के प्रगति की जानकारी उपलब्ध कराता है।
13. शिक्षार्थी के समग्र विकास के लिए आवश्यक है कि बच्चों के शारीरिक विकस, नियमित उपस्थिति, खेलों तथा सांस्कृतिक गतिविधियों में सहभागिता, नेतृत्व क्षमता, सृजनात्मकता आदि व्यक्तिगत एवं सामाजिक गुणों के क्रमिक विकास का सतत मूल्यांकन किया जाता रहे।
14. भाषा के संदर्भ में आकलन का उद्देश्य– भाषा की समझ, इसे विभिनन संदर्भों में उपयोग करने की क्षमता का मापन है।
15. भाषा संबंधी आकलन केवल भाषा की कक्षा तक सीमित न रहे, इसे अन्य विषयों की कक्षाओं में भी शिक्षार्थी के भाषायी कौशलों को परखा जाना चाहिए।
16. आकलन के मूलभूत चार तरीके हैं– व्यक्तिगत आकलन, सामूहिक आकलन, स्वआकलन और सहपाठियों द्वारा आकलन।
17. आकलन के प्रमुख उपकरण एवं तकनीक में हैं – मौखिक आकलन, लिखित आकलन, अवलोकन, पोर्टफोलियो, जाँच सूची, रेटिंग स्केल आदि।

6.12 स्व–मूल्यांकन

1. सतत मूल्यांकन का क्या तात्पर्य है? समझाएँ।
2. व्यापक मूल्यांकन का आशय क्या है? समझाएँ।
3. मूल्यांकन के संदर्भ में कुछ कथन दिए गए हैं। सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के संदर्भ में इनके आशय स्पष्ट करें।
   - (i) शिक्षक/शिक्षिका को सामर्थ्यवान बनाना कि अब तक की अपनाई गई प्रक्रियाओं का आकलन कर सकें।
   - (ii) शिक्षक/शिक्षिका यह पूर्व में ही तय कर लें कि आगे क्या पढ़ाना/सीखाना है और किस तरीके से।
   - (iii) शिक्षक/शिक्षिका यह समझ सकें की शिक्षार्थी को कहाँ उनके मदद की आवश्यकता है।
4. मूल्यांकन के दौरान किस–किस तरह के रिकार्ड रखना आवश्यक हैं? रिकार्ड रखने का तरीका क्या हो और उनका उपयोग कैसे किया जाए?
5. क्या आपको लगता है कि मूल्यांकन के दौरान माहौल सामान्य दिनों जैसा ही होना चाहिए? यदि हाँ/ना तो क्यों?
6. क्या बच्चे खूद का मूल्यांकन कर सकते हैं? यदि हाँ/ना तो कैसे?
7. आकलन में पाठ्यपुस्तक की भूमिका का पड़ताल करें।
8. आकलन/मूल्यांकन की अवधि क्या हो– दैनिक, साप्ताहिक, मासिक, सत्रान्त या कोई और लचीला तरीका कारण भी बताएँ।
9. क्या पाठ्यचर्या के हर बिन्दु का मूल्यांकन होना चाहिए? क्यों?
10. मूल्यांकन कभी–कभी व्यक्ति के लिए आजीवन ठप्पा बना जाता है। इसे कैसे रोका जा सकता है?
11. इन पर नोट लिखें –
    (क) मौखिक आकलन (ख) लिखित आकलन (ग) रेटिंग स्केल

12. पोर्टफोलियो आकलन में प्रभावी भूमिका अदा कर रहा है, कैसे?
13. पोर्टफोलियो निर्माण एवं रखरखाव पर एक संक्षिप्त नोट लिखें।
14. कविता के व्यापक मूल्यांकन हेतु किन–किन पक्षों को शामिल किया जाना चाहिए?
15. कहानी शिक्षण के व्यापक मूल्यांकन के लिए एक रुपरेखा बनाइए।
16. शिक्षण सहयोग संदर्शिका 'शिक्षक साथी' का मूल्यांकन हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य एवं आकलन की दृष्टि से करें।

6.13 संदर्भ –

1. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा– 2005 (NCERT, Delhi)
2. बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा– 2008 (SCERT, Patna, Bihar)
3. शिक्षण अधिगम एवं मूल्यांकन – Vol. 3 (IGNOU)
4. शिक्षा का अधिकार अधिनियम– 2009 (भारत सरकार)
5. आकलन स्रोत पुस्तिका (भाषा–हिन्दी)– (NCERT, Delhi)
6. विद्यालय की समझ एवं कक्षा प्रबंधन– 1, (SCERT, D.El.Ed. ODL, Patna)
7. विद्यालय की समझ एवं कक्षा प्रबंधन – (D.Ed) (SCERT, Patna)
8. श्रीवास्तव, रवीन्द्रनाथ, भाषा शिक्षण, माहेश्वरी वाणी प्रकाशन, दिल्ली
9. जयप्रकाश एवं तिवारीः मापन, मल्यांकन एवं परीक्षाएँ
10. रावत, प्यारेलाल (1972), भारतीय शिक्षा का इतिहास, आगराः राम प्रसाद एवं
11. भाषा का शिक्षणशास्त्र– (डी.एड) (SCERT, Patna)
12. थार्नडाइक, मेजरमेंट एण्ड इवेल्यूएशन इन साइकोलॉजी एवं एजुकेशन, नई दिल्लीः विलेइस्टर्न प्रा. लिमिटेड
13. ममता मेहरोत्रा– शिक्षा का अधिकार, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
14. अंकुर, भाग–1 एवं 2, एस.सी.ई.आर.टी, पटना
15. शिक्षण सहयोग संदर्शिका, एस.सी.ई.आर.टी., पटना
16. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन– बिहार शिक्षा परियोजना, पटना।

Website Link

1. www.ncert.nic.in
2. www.nuepa.org
3. http://www.educationbihar.gov.in
4. http://mhrd.gov.in/elementaryeducation.